पत्तों की बिरादरी

पत्तों की बिरादरी

मणि मधुकर

कृष्णा सोबती के लिए

दूर, बहुत दूर—
चौंककर देखता है भूरा ऊँट
भूरे टीलों के पार
वहाँ से, अनगिनत गाँवों के
उजड़ने की
आवाज आती है
और
टूट-टूटकर गिरते हैं पत्ते
सूखी हवा में
सैकड़ों सदियों का नीला अँधेरा
खरोंचते हुए !

—अर्ज़ंदान वल्द जम्मरदान

तम्बुओं के तिरपाल फड़फड़ाती हुई हवा बेचैनी से घुमेरी लगा रही थी। उसके संग-संग रेत। अँधेरे और सुन्न-सुन्न सन्नाटे में जैसे कोई सड़-सड़ाके सोंटियाँ बरसा रहा हो, ऐसी आवाज। आड़े-तिरछे टीबों और बिरछों में उलझी हुई रात की रहस्यमयी आकृतियाँ उस आवाज से अस्त-व्यस्त हो उठती थीं।

आसमान में चौतरफ गट्टा-गट्टा धूल-घँवासा पसरा हुआ। उसकी एक तह में मरा-बुझा-सा आधा चाँद, मानो किसी ने पीतल की दरांती शून्य में उछाल दी हो!

अचानक जाने किस दूह की आड़ में एक काली कोचरी बोलने लगी। अपसगुन और आतंक की डोर तानती हुई कलमुँही तान, अपने अन्तिम सिरे पर चील की तरह चिरती हुई···चिरै कर दूर-दूर रेंग जाती हुई।

फिर वह चुप हो गयी। और, उसकी चुप्पी के इर्द-गिर्द साँय-साँय का घना-सा घेरा बनता चला गया। तम्बुओं के खूँटे और रस्से हिलाती हुई हवा उस घेरे में फेरी लगाने लगी।

अँगुली से कान का मैल खुरचते-खुरचते सुबो सहसा तन झटककर उठा। बोरे का फटा-चिथरा टुकड़ा उसने कन्धे पर डाला और लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ सूखी झाड़ियों की खोखल में घुस गया।

खोखल अच्छी-खासी थी। वह न केवल उसमें पूरा समा जाता था, बल्कि आराम से हाथ-पाँव फैलाकर सो सकता था। आसपास चूहों के बिल, घास के कँटीले तिनके, चरमरे पत्ते, खेजड़े की टूटी हुई डाल का

एक ठूंठ···शुबो उस ठूंठ का सिरहाना बना लेता था और ऊपर कोहनी मोड़कर बिसराम-भाव से पड़ जाता था।

कम्फ में तीन बड़े तम्बू थे। एक पुसपा बाई का, दूसरा इग्यारसीलाल का, तीसरा ठीकेदार बछराज का।

कुछ छाजन-छपरे थे, कुछ सिरकियां थीं, कुछ कच्ची ईंटों के 'टम्परेली' कोठे थे, कुछ खींफ-आकड़ों के छत्तर और टप्पले थे··सबमें ठंसाठंस लोग भरे हुए थे। अपना-अपना ठौर-ठांव बन गया था। अपनी-अपनी जगह-जुगाड़ निकल आयी थी। लेकिन—कम्फ में तो आये दिन दुरभिक्ख से बेहाल लोग भरती होते जाते थे और अब खुल्ला अक्कास ही उनका डेरा-बसेरा बनकर बाकी रह गया था। कहीं किसी छप्पर में तो सिर घुसाने तक के लिए सूराख नहीं मिलता था।

शुबो भी देर से आनेवालों में था। उसे तो और भी ज्यास्ती परेशानी का सामना करना पड़ा था। भरती ही नहीं मिल रही थी। ठीकेदार ने उसे देखते ही इत्ती जोर से हाथ हिलाया इनकारी में, कि सब-कुछ डांवाडोल होने लगा।

"अब यहां पग रखने को भी जगह नहीं। मेरे सिर पर चढ़ोगे क्या? जाओ, जाओ, रास्ता नापो।"

बछराज ने उसे पीछे धकियाया और कम्फ के फाटक पर सांकल चढ़ाने लगा।

शुबो के पांव जम गये। घुटनों पर मनों बोझ लटक गया। वह कहां जाये? पीछे की डगरी में कट गया है, आगे के छोर का अता-पता नहीं। कित्ते-कित्ते दिन-रात घुलाकर वह यहां तक आन पाया है। भूका-पियासा और बिल्कुल बदहाल। लौटने की सगती नहीं है।

"बोल दिया ना, फूटो यहां से। बहरे हो क्या?" बछराज ने उसे घुड़का, "ऊंट की तरह थोबड़ा उठाये क्या देख रहे हो?"

वह पीछे हटा नहीं। हट नहीं पाया। वह गड़ गया था खूंटे-सा। उसके भेजे में सबकुछ उलट-पुलट होने लगा था।

"क्या जिकरा है? क्यों चीख रहे हो, बच्छू?" लाल-लाल आँखों-वाली एक औरत बगल के तम्बू से बाहर निकल आयी।

घुंघर पड़े हुए बेतरतीब बाल। सूजी-सूजी नाक और उसमें टिमकी-सी नथली। बायी कनपटी पर एक गाढ़ी लकीर। तनी हुई भौंहें और उनके नीचे धूप की चौंध को मुश्किल से बरदाश्त करती हुई कंजो-कबरी पुतलियां। तर-तर पलकें झंपकाते हुए उस डरावनी औरत ने शुबो को घूरकर देखा।

"ये देखो, पुसपा बाई···इस भले माणस का मुआयना करो। जाता ही नहीं। खबे की तरह मढ़ा हुआ है, मूरख।"

शुबो के बुत में कोई हरकत नहीं हुई।

"क्यों रे! तेरे बाप का घर है ये?" औरत कमर पर दोनों हाथ रखकर चिल्लायी, "भाग जा, चुपचाप···नहीं तो ऐसी खबर लूंगी कि सारी हेकड़ी भूल जायेगा।"

"म्हां··" शुबो ने मुंह खोलने की कोशिश की, किन्तु जबान ठेठ तक सूख गयी।

"किस जगह से आया है ये?" पुसपा बाई ने ठीकेदार से पूछा।

"गूंगा है क्या? जवाब दे, ससुरे!" बछराज ने शुबो को डांटा।

"उम्मरकोट।"

"खास उम्मरकोट से?" पुसपा बाई की आंखें सिकुड़ गयीं और ऊपर से नीचे तक उसकी पड़ताल करने लगीं।

"नहीं, उम्मरकोट के पास एक ढाणी है···फतियांवाली।" शुबो ने हकलाते-हिचकते कहा।

"फतियांवाली!" ठीकेदार चौंका।

"हां।" शुबो ने अपनी बात साफ करने के लिए कुछ साहस जुटाया, "पकेस्तान है उधर।"

रास्ता तो बना ही दिया है। उस रास्ते पर बढ़ते हुए धुवो ने नरमाई से सवाल किया, "तुम्हारी रुघचन्न से मिन्तराई थी क्या ?"

ठीकेदार ने कोई उत्तर नहीं दिया। कुछ पल बीते। फिर उसने तनिक फाटक खोलकर धुवो को एकदम अन्दर खींच लिया और आहिस्ता से बोला, "ठीक है, ठीक है, तुम भी रहो कम्फ में। लेकिन···अभी बे-बोले उस तरफ चले जाओ और उन लोगों में घुलमिल जाओ। पुसपा बाई को मैं बाद में बतला दूंगा।···"

उस रोज से धुवो कम्फ का आदमी हो गया।

कम्फ हिंदस्तान की सिरकार ने लगा रखा था। अकाल-दुरभिक्ख के कारण बेघरबार हुए लोगों की मदद के लिए। ऐसे नौ-दस कम्फ और थे, उस इलाके में—धुवो को यहाँ भरती होने के बाद उनका पता चला। लेकिन सब जगह धक्कमपेल और मारामारी चल रही थी। नयी भरती एकदम रोक दी गयी थी। धुवो की तगदीर अच्छी थी कि बछराज ने उसे कम्फ में डाल लिया।

यह छतना कम्फ कहलाता था। बीच में तल्ली का मैदान। चारों ओर टीले, पेड़ और थूहर-सरकण्डे का जंगल-झाड़। वहाँ से जैसलमेर तक सड़क बनायी जा रही थी। कम्फवालों को उस पर काम में लगा दिया गया था। मजूरी के रूप में मिलता था, नाज-पानी। दोनों जून के लिए हरेक को डेढ़ सेर आटा, एक प्याज, मिरच-लूण और तीन डबरे पानी। सबने अपने-अपने ढंग से गिरस्ती जमा ली थी। पत्थर रोपकर चूल्हे बना लिये थे। घास-फूस-लकड़ियाँ इधर-उधर से बटोरकर आग जलायी जाती थी और जिसको जैसी सहूलियत होती थी, रोटी-बाटियाँ मांडकर पका ली जाती थीं। ज्यादातर, बाटियाँ। धीमी-धीमी आँच में पकने के बाद उनका सुवाद ऐसा करारा हो जाता था कि साग-चटनी की भी जरूरत नहीं।

माँ को आसमान से बरसती हुई आग के हवाले कर वे दोनों अन्घ-मन्द आगे बढ़ गये। सन्निपात के मरीजों की तरह। होश-हवास गँवाये। आकुल-वाकुल।

सीव-सरहद तक पहुँचे तो उन्हें फौज की चौकियाँ नजर आयी। वे जानते थे, सिपाही लोग बहोत गुस्सेबाज होते हैं—चाहे वे ईंदस्तान के हों या पकेस्तान के। बात-बेबात बन्दूक दागकर मिनख जात को भून डालते हैं।

बीच में काँटेदार बाड़ थी। उसे लाँघने की तजवीज में उन्होंने दो दिन काट दिये, टीलों में दुबके-दुबके। जरा उचककर चलने की तैयारी करते थे कि कोई-न-कोई फौजी चेहरा दीठ में आ जाता था।

बाऊ थककर निढाल हो चुके थे। रात के वखत शुबो ने हिम्मत की और बाऊ को चलने के लिए कहा, किन्तु वह सिर्फ कसमसाकर रह गये। किसी तरह काफी जोर बाँधकर उठे, दो कदम चले और गिर पड़े। शुबो के पास समय नहीं था। चौकियाँ सो रही थी। उसने बाऊ को पीठ पर लाद लिया और टीलों की आड़ में रेंगता-रेंगता सीमा पार करने लगा। जरा-सा खड़का होता और वह पिरथी से चिपककर दम साध लेता। एक दफा गोली चली कहीं, धमाका हुआ। उसकी साँस रुक गयी हलक में। लेकिन, कुछ क्षण की चुप्पी के बाद वह फिर घुटनों के बल घिसटने लगा, बालू पर·· बाऊ को टाँगे हुए!

जब अँधेरा छँटने लगा और शुबो को अन्दाजा हो गया कि वह सीव और चौकियों को पीछे दूर छोड़ आया है तो उसने बाऊ को नीचे उतारा। वह रेत में लुढ़क गये।

हाँफते हुए शुबो ने अपने आप पर एक निगाह डाली। उसके रोम-रोम में पीड़ा और जलन हो रही थी। भरूँट और थूहर के चालाक काँटों ने मौका पाकर उसके तन को बेतरह छीलकर रख दिया था। वे खुली

छाती, पिण्डलियों और बाहों के रोओं में गुच्छागुच्छ लड़ियाँ बनाकर लटके हुए थे। उनके बीच से रगत के धारे बहते हुए सूख-चिपक गये थे। चमड़ी जगह-जगह लिथड़ गयी थी और मांस की लाल चिंधियाँ चमक रही थीं।

'एक वक्त आता है, जब तुम अपने खून के असली रंग को देखते हो, उस रंग के साथ कितने सपने, कितने उन्मत्त वेग जुड़े हुए होते हैं और वे तुम्हें कहाँ तक ले जाते हैं···सोचो, पहचानकर देखो···'

घोर थकावट और अन्दर चीखती हुई निःशब्द उदासी में शुवो को अज्जैदान का यह दूहा याद आया। उसमें एकाएक उजाले की एक लकीर खिंच गयी, जैसे तेज चमकते हुए नश्तर की धार हो। वह धार सड़े-गले घावों को तुरन्त रेतकर काट फेंकती है। दर्द होता है एक-बारगी, किन्तु हिम्मत रखो जुटाकर, तो यह अहसास भी होता है कि अब सब कुछ ठीक हो जायेगा---

"वह आवाज, जो तुम्हें जीने के लिए, हरेपन को तलाशने के लिए रह-रहकर पुकारती है, कहाँ से आती है ? कहाँ पैदा होती है ? न हवा में, न पानी में, न मिट्टी में···वह तो सिर्फ तुम्हारी नसों में ही जनम लेती है···"

अज्जैदान जब तक जिया, मौत के खिलाफ और उन तमाम लोगों के खिलाफ---जो आदमी की औकात को नष्ट करने के लिए हत्यारों की हाट में दलाली करते हैं, लड़ता रहा। उसने रेगिस्तान के कण-कण में धड़कते हुए जीवन की एक-एक साँस को सुना और उन्हें नये अरथ तक पहुँचाया।···शुवो ने कितनी ही बार बाऊ से अज्जैदान के समर-सोरठे सुने थे और उनके माध्यम से दुनिया को समझने की कोशिश की थी। यह भी बतलाया था बाऊ ने कि भाटी राजा ने अपने गढ़ के दरवाजे के ठीक सामने लकड़ियों का ढेर लगवाया था, अज्जैदान के लिए चिता चिनवायी थी और उसे जिन्दा ही जलाकर भून डाला था। लेकिन···अज्जैदान तो जलते-जलते भी हँस रहा था, दूहे गा रहा था---

खूब ऊँची आवाज में। तब भाटी राजा ने गुस्से और अपमान से तिलमिलाकर एक पत्थर उठा लिया था और बड़े फूहड़ ढंग से चिता की तरफ फेंक मारा था। पत्थर अज्जैदान को नहीं लगा। भाटी राजा का निशाना चूक गया, क्योंकि··· अज्जैदान की आवाज बन्द कर सके, वह निशाना साधने की सामरथ उसमें नहीं थी। आखिर···वह कायर, वह क्रूर, वह नामरद लौट गया अपने गढ़ में। छुप गया 'अम्मल' के नशे और रानियों के लहँगों की माँद में!

अज्जैदान चारण की कविताई, जो रेत की रम्मतों और दुखियारे जन-जन के कण्ठों में बसी हुई थी, सैकड़ों बरसों से—एक तेज-तीक्ष्ण 'आँख' थी। घुघो के पास और कोई ज्ञान नहीं था, लेकिन बाऊ से, दूसरे लोगों से सुन-सुनकर उसने धीरे-धीरे वह 'आँख' अपने भीतर जगा ली थी! कम से कम, उसे यह तो भरोसा था ही कि उस आँख की रोशनी से वह जब-तब थोड़ा-सा उजास ले सकता है।

अज्जैदान के सुमरन ने घुघो की आहत अवस्था को शीतल लेप से ढँक दिया। बाऊ कुछ देर सोकर बिसराम ले लें तो वह उन्हें लेकर आगे चलेगा, उसने सोचा और नाखूनों से नोंच-बीनकर काँटे निकालने लगा। धोतिये की किनारी फाड़कर उसने बाऊ के बायें घुटने पर बाँध दी। वहाँ पर कोई रगड़ खाकर चाम उतर गयी थी और घाव बन गया था।

"अब कोई खतरा नहीं, बाऊ! चौकीवालों को तो हम बहोत पीछे छोड़ आये हैं!"

तभी उसे मुरचिया की एक टहनी दिखलायी दी। सूखी, काली टहनी। पौधा कभी का मुरझाकर मर चुका था। स्यात उसकी जड़ों में कुछ जान हो! घुघो ने तेजी से मुरचिया की जड़ें खोद डालीं। जड़ें एकदम अकड़ी हुई थीं और छूने-भर से कट्-कटक् टूट रही थी, लेकिन—फिर भी ढाई-तीन अंगुल का एक टुकड़ा घुघो को मिल गया। वह कुछ नरम था। इसमें गीलापन होगा जरूर। घुघो को हल्की-सी तसल्ली हुई···

बाऊ की तो जीभ एकदम हलक में चिपक गयी है, बोल ही नहीं पा रहे हैं, कित्ते रोज हो गये उन्हें पानी पिये हुए !

"बाऊ हो ! यह मुरचिया की गण्ठी मिल गयी है, देखो ! इसे मुंह में रख लो, आस्ते-आस्ते थोड़ी तो तरावट आयेगी ही ।"

उसने बाऊ को हिलाया-डुलाया । वह हड्डियों की बंधी हुई गठरी की तरह औंधे पड़े थे, निश्चल ।

"बाऊ-हो !" शुवो ने उनके कान के पास हाँक दी ताकि आवाज से उन्हें चेत हो । फिर उसने उनके मुंह में मुरचिया की जड़ डालने का यत्न किया । दांत जुड़े हुए थे, बुरी तरह ! शुवो ने जोर लगाकर उन्हें खोलना चाहा, पर जबड़े तो इतनी सख्ती में खिचे हुए थे कि···और, तभी शुवो को पता चला कि बाऊ की तो सांस ही बन्द है । उनका समूचा शरीर अकड गया है और उसमें कहीं कोई हरकत नहीं है ।

शुवो नहीं जानता था कि बाऊ तो उसकी पीठ पर टंगे-टंगे ही, एक गाढ़ी तन्द्रा में, चुपचाप खत्म हो गये थे ।

आंखों में एक उन्माद, एक भाप, एक पल-पल बढ़ता हुआ ज्वर लिये वह बाऊ को घूरता रहा । फिर उनके चौड़े वक्ष पर माथा टेककर फफक-फफक रोने लगा ।

शुवो, चौबीस बरस का शुवो, दूसरी बार रोया था इस तरह । पहली बार···म्हाजन के कारिन्दे उसके घर की कच्ची अंगनाई में खड़ा नीम का पेड़ काट रहे थे, कुल्हाड़ों से और शुवो उस अपने बहुत सगे गाछ के तने से लिपटकर सुबक रहा था । वह रो रहा था, लेकिन उसकी आंखों में आंसू नहीं थे तब । सिर्फ एक भूकम्प था, जो भीतर से झकझोर रहा था । फिर बाऊ ने अपनी विवशता भरी बांहों में लपेटकर उसे अलग कर दिया था, वहां से दूर ले गये थे ।

आंसू आज भी नहीं थे शुवो की आंखों में । उसका बदन एक अज्ञात

धूल को मुट्ठियों में भर-भरकर फेंकता हुआ अन्धड़। उसकी अति-परिचित सनसनी के सिवा कहीं कोई आवाज नहीं। कम्फ मसान की तरह शान्त था। चन्दरमा डूब चुका था। अँधेरा जितना बाहर था, उतना ही शुबो के अन्तस में भी। वह कहाँ आ गया है? सुबह से शाम तक खटना सड़क पर, जानवरों की तरह हाँके जाना, होंठ सीकर सब-कुछ सहना और···बदले में दो जून टिक्कड़-पानी हासिल कर लेना। सिरफ इतना ही नहीं, कोई एक आबदार कोना था उसके अन्तर में, रह-रहकर चमकता-कौंधता हुआ···उस पर अब कालिख जमने लगी है, झर-झरकर। वह महसूस करता है···लेकिन, उस कालिख से कैसे बचा जा सकता है!

किसी के पैरों की आहट हुई। फिर वह आहट खोखल के समीप आकर रुक गयी।

"तुम्हारा यह घोंसला अच्छा है।"

वह सुवटी थी। इधर, कुछेक रोज से उसने शुबो के साथ मेल-मिलाप बढ़ा लिया था। अक्सर आते-जाते बतियाने के लिए रोक लेती थी।

शुबो चुप चित्त पड़ा रहा। कुछ भी कहना व्यर्थ लगा उसे।

"तुम्हारे पास लेट जाऊँ?" सुवटी ने पूछा और उसके उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना सीधी पसर गयी।

"तुम इतनी रात को कहाँ चक्कर लगा रही हो?"

"इग्यारसीलाल के पास गयी थी।"

शुबो की आँखों के आगे चेचक के दानों और पिचके हुए मुरझाये गालोंवाला एक निर्लज्ज, खूंखार चेहरा तैर गया।

"वह तो बहुत खत्तरनाक है।" उसने धीमे-से कहा।

"हाँ, है तो। सारे कम्फवालों को थरथरी आती है उसके नाम से।"

"उसने कल जमाल को मुरगा बना दिया था।"

"मुरगा-वुरगा तो वह बनाता ही रहता है किसी-न-किसी को। उसे मजा आता है। लेकिन···आज उसने मुझे बुलाया था।"

सुवटी के स्वर में तनिक गर्व था।

"क्यों, कुछ डाँट-डपट करने के लिए?"

"वाह्वाह, वो मुझे क्या डाँटेगा! ···साथ सुलाने के लिए बुलाया था।"

सुवो सहसा गूँगा हो गया।

"ससुरे में दम नहीं कुच्छ···जब तक पड़ा रहा मेरे ऊपर, काँपता रहा और पोपलिये मुँह से लार गिराता रहा मुझ पर। देखो···अभी तक, यहाँ मेरी गर्दन पर···उसका थूक चिपका हुआ है।"

"तुम्हें नहीं जाना था, उसके पास।"

"क्यों?" सुवटी अचम्भे में थी, "अब देखना, वो कैसे लिपर-लिपर करता फिरेगा, मेरी छाया के पीछे-पीछे···जो औरत उसके तम्बू में हो आती है, उसकी हैसियत बढ़ जाती है कम्प में।···बुढ़ऊ मान रखना जानता है। उसने मुझे बेसन के दो लड्डू भी दिये। एक तो मैं उसी वखत खा गयी। दूसरा, बँधा हुआ है पल्लू में। तुम खाओगे?"

"नहीं।"

सुवटी ने अपनी एक बाँह में सुवो को लपेट लिया, "तुम भी मुझे अच्छे लगते हो!"

सुवो विचित्र स्थिति में पड़ गया। दाँतों के बीच में रेत की किच-किच किरकिरी रड़कने लगी। उसने मुँह फेरकर थूक दिया।

"तुम कभी···किसी औरत के साथ सोये हो?" सुवटी की बाँह कस गयी। फिर दूसरा सवाल फेंककर वह हँस पड़ी, "तुम्हारी इंच्छ्या नहीं होती है?"

"नहीं।"

"इस वखत भी नहीं है?" उसने सुवो के गले पर चिकोटी भरी।

"नहीं।"

"अगर मेरी इंच्छ्या हो तो?"

"तुम···तो···अभी वहाँ से होकर आ रही हो न, वो इग्यारसीलाल

के तम्बू से—"

"वहाँ तो उसका मन बहलाने के लिए गयी थी, अपना नहीं।"

"मेरा जी ठीक नहीं है।" शुबो का कण्ठ भर्रा गया, "जिद मत करो।"

सुवटी कुछ क्षण सोचती रही, फिर बोली, "अच्छा-अच्छा, नहीं करूँगी।...लेकिन मुझे एक बात का डर है। वो यह कि...इग्यारसीलाल तुम्हें कहीं कम्फ से निकाल न दे!"

"क्यों? मैंने ऐसा क्या किया है? मैं तो अपना काम करता हूँ—" शुबो अस्त-व्यस्त हो उठा।

"काम-वाम की किसको परवा है? जिसके साथ जवान लुगाई हो, इग्यारसीलाल उसी को इस कम्फ में रखता है।...तुम अक्केले हो। तुमको खामखाँ क्यों टिक्कड़ डालेगा वो? उसको क्या फायदा?"

शुबो सोच में पड गया, "तुमसे कुछ कहा है उसने?"

सुवटी ने उसे दिलासा की थपकी-सी दी, "घबराओ मत। मैं सुपारस कर दूँगी तुम्हारी। मैंने खुस्स कर दिया है उसे।...रोज कोई-न-कोई औरत होती है उसके तम्बू में—लेकिन आज बोला वो मुझसे...सुवटी, तुमने मुझे तिरपत कर दिया—"

"मुझसे यह सब मत कहो।" शुबो घृणा और ग्लानि से भर उठा।

"ठीक है, नही कहूँगी।...बहुत भले बन रहे हो, तुम! लेकिन भलाई-सिधाई कुछ काम नही आती है दुनिया मे।"

"ऐसा क्यों सोचती हो?"

"इसलिए सोचती हूँ...कि लुगाई की जात हूँ। मैं तो खुद ही बुराई हूँ।"

"औरत होना...बुराई है?"

"है। एक दिन तुम भी समझ जाओगे। भलाई-वलाई की बात तो लोग स्यान बघारने के लिए करते हैं, बस। भलाई क्या होती है, बताओ? बुराई ही है, सब जगह। एक अच्छी लगनेवाली बुराई और

दूजी, खराब बुराई। जो मन को बार-बार खींचती है, मजा देती है—वह सुन्दर बुराई। और, जिससे इसका उल्टा होता है, खराब बुराई। ...मैं किसी के लिए सुन्दर, किसी के लिए खराब बुराई हूँ। उसी में सुख ढूँढ़ती हूँ, सन्तोष खोजती हूँ मैं...जो बुरा है। जिसे सब लोग चाहते हैं, अलबत्त हंकारता कोई नहीं है।"

"आदमी अपने लिए ही जीता है फिर तो?"

"हाँ, अपने लिए। दूसरों के लिए जीने की बात एक गन्दी आड़ है।"

"तुमने अर्जुनदान कविया का नाम सुना है?"

"सुना है। अव्वल दरजे का चुगद था वो। उसी ने तो हम लोगों में से कइयों का माया खराब कर रखा है...सोचो, पुसपा बाई में ऐसा क्या है जो वह पूरे कम्फ पर राज करती है और मुझमें उसके मुकाबले क्या कमी है? यही कि उसने अपने औरत शरीर को बड़ी चालाकी से भुना लिया है। बुराई को बढ़िया इस्तेमाल से सम्पूरण बना लिया है। और मैं—सड़क पर पत्थर कूटती, सुरखी बिछाती अपने को बरबाद कर रही हूँ। लेकिन...हमेशा ऐसी नहीं रहूँगी मैं—"

सुवटी तमककर उठी और घाघरा झटकारती हुई चली गयी।

घुघो उसे पीछे से एकटक देखता रहा। सुवटी इतनी बेचैन क्यों है? कभी-कभी होता है कि महत्व पाने की या...वैसी ही कोई आकांक्षा, मीठी खुजली की तरह यकायक फूट पड़ती है। वह खुजली गहरी-गहरी होकर तन को सदा बेचैन किये रहती है। किन्तु, उसे खुरचते रहने से आनन्द भी तो मिलता है। इसलिए, उससे मुक्ति का छुटकारा पाने का भाव जाता रहता है।

—क्या मैं सुवटी को सही-सही समझने के लिए ऐसा सोच रहा हूँ?...कि अपने किसी विचार की राख से उसको ढँकने की उतावली दरसा रहा हूँ?

शुवो ने पलकें मूंद लीं। कुछ गोल, कुछ चौकोर धब्बे ऊँघते हुए आये और उसे किसी मन्त्र-शक्ति में घेरकर खींचते हुए दूर-दूर ले गये :···

एक टीला। जाना-पहचाना सा। धुन्ध। कुछ अस्पष्ट ध्वनियाँ। मानो घुरालिया, सरनाई, राय गिड़गड़ी, सुरिन्दा···सारे वाद्य एक संग एकाएक बजने लगे हों। सुरों का, ताल का कोहरा। बाऊ, उस टीले पर लेटे हुए थे। शुवो को देखकर खड़े हुए, तुरन्त और उसके साथ चलने लगे।

आगे, फिर दूसरा टीला। वहाँ माँ बैठी हुई थी।

शुवो रुक गया। उसके पैरों को कील दिया किसी ने।

"माँ, तुम औरत जात हो ?" शुवो ने प्रश्न किया।

"हाँ और मैं तुम्हारी माँ भी हूँ।" जवाब मिला। माँ की ओर से।

"लेकिन तुम एक सुन्दर बुराई हो ?" उसने जोर से चीखकर कहा।

माँ ने बाऊ की ओर देखा और मुस्करा दी।

माँ ने पेड़ों की ओर देखा और मुस्करा दी।

माँ ने आकाश की ओर देखा और मुस्करा दी।

माँ ने चारों तरफ के कोहरे को देखा और कोहरे में खो गयी।···

नींद में कई रपटनों और खन्दकों से गुजरते हुए अचानक शुवो एक अनन्त दलदल में फँस गया। उसमें से न निकल पाने की असहायता में वह एकदम पसीना-पसीना हो गया। फिर हकबकाकर जागा और कई क्षणों तक शून्य में टँगा हुआ, सपने से बाहर आने के लिए पलकें झँपकाता रहा।

धीरे-धीरे चेतना संयत होने लगी।

सामने पीपल का दरख्त नजर आया। सूखे पत्तों का एक रेला उसकी तरफ बढ़ता हुआ आया और खोखल के निकट टिक गया, नन्ही-सी मेंड बनाकर। मन्द-मन्द काँपता हुआ।

—हवा आयेगी और ये पत्ते फिर आगे उड जायेंगे।

शुवो ने करवट बदली। एक न समझ में आनेवाली उदासी उसमें काई की भाँति पसरी हुई थी····एक भरा-पूरा दरख्त होता है और उसमें पत्ते रहते हैं। पत्ते क्या होते हैं, दरख्त के लिए? दरख्त एक वाणी है, एक गाँव है और पत्ते उसके बाशिन्दे होते हैं। साथ बोलते हुए, एक-सा जीवन जीते हुए···वे एक ही बिरादरी के अनेक लोग! लेकिन ऋतुओं की मार से जब पेड उजड़ने लगता है तो पत्ते सूख-सूखकर गिरने और बिखरने लगते हैं। अपने गाँव-घर को छोड़कर, दु:ख-दैन्य के बोझ को ढोते हुए, वे पत्ते···जाने कहाँ-कहाँ तक रेलों में बहते-उड़ते चले जाते हैं।···यही है पत्तों की अपनी बिरादरी! जब हरे थे, तब साथ। और, अब सूख गये हैं···अपने गाछ, अपनी जड़ों, अपनी शाखाओं से बिछुड़ गये हैं तो भी साथ। यह क्या चीज है जो

इनको इस तरह बांधे हुए रखती है ?

शुबो बोरे के बिछावन पर बैठकर कम्फ के वासियों को देखने लगा।···पत्ते, सिर्फ पत्ते होते हैं—वे कहीं भी चले जायें ! चाहे हरे हों या सूखे, उनके भीतर फैले हुए रग-रेशे तो बराबर एक-से होते हैं।···वही उनके जीवन को बुनते हैं और गाढ़ेपन के साथ सारे सम्बन्धों को जोड़ते हैं। फिर, उन्हें कौन बाँट सकता है, कौन अलग-अलग कर सकता है ?

उत्तेजना-भरी आवाजों के कई ढेले सिर पर आकर गिरे तो शुबो चेहरा मलता हुआ उठा। बोरे को समेटकर वह खोखल की ओट से निकला।

पुसपा बाई के तम्बू के आगे छोटी-सी भीड़ लगी हुई थी।

शुबो टीले की ढलान से उतरकर उधर चल पड़ा। हाजरी का वखत भी हो ही गया था। किन्तु नजदीक जाने पर जब उसने पुसपा बाई की रीस भरी फुंफकार सुनी तो ठिठक गया। पाँव जाम हो गये। वहीं से उसने देखा कि पुसपा बाई हाथ में सन का कोड़ा लिये हुए हथिनी की तरह चिंघाड़ रही है, फनफना रही है और धम-धमक चक्कर काटती हुई एक मरियल-से बूढ़े की बुरी तरह धुनाई कर रही है।

"सब सूअर के बच्चे, हराम का खाते हैं यहां !" पुसपा बाई के हाथ में लहराता हुआ कोड़ा भीड़ की तरफ उछला, सनसनाया तो खल-बली मच गयी। लोग-लुगाई गिरते-पड़ते इधर-उधर भाग छूटे।

इग्यारसीलाल ने भी नसवार सूंघकर तड़ातड़ तीन-चार-पाँच छींकें झाड़ दीं, फिर गुस्सा कर बोला, "जाओ, सब लोग ठीकेदार को हाजरी दो।···तुम्हारी भी अब लीद निकालनी होगी।"

"तुम क्यों परेशान होते हो ! कहो तो हम अभी तुम्हारे तम्बू में लीद कर आयें। तुम्हें लीद का बहोत शौक है, दिन भर बैठे देखते रहना।" सिराम ने चिढ़कर धीमे से कहा।

हद्दी ने उसे डाँटा, "चोप्प, खोपड़ी तुड़वाओगे अपनी !"

मार खाते हुए बूढ़े का चेहरा सपाट था। कोई खिंचाव नहीं—न

पीड़ा का, न विकार का। निचला होंठ कट गया था और नंगी पीठ पर खून छलछला आया था। जब थक जाने पर पुसपा बाई ने कोड़ा जमीन पर पटक दिया तो बूढ़ा लड़खड़ाता हुआ उठा और कोड़े को लेकर तम्बू में चला गया।

"अरे, कुत्ते! अन्दर क्या कर रहा है?" एक चौड़े मूढ़े पर अपनी लदृढ़ काया को लुढ़काकर पुसपा बाई चिल्लायी, "आमी का तेल ला, जल्दी।"

बूढ़ा तुरन्त तेल की शीशी लेकर तम्बू से निकला।

रिबन खोलकर पुसपा बाई ने अपने बाल पीछे फैला दिये। दो-एक बार गर्दन हिलायी, कन्धे उचकाये, कनपटियों को सहलाया और फिर आँखें बन्द कर पड़ गयी। बूढ़ा हथेली में तेल लेकर, अँगुलियों के पोरों से उसके बालों में चुपड़ने लगा—उसी तरह तटस्थ, निराग्रह और निर्जीव।

"जानते हो, पुसपा बाई क्यों इतनी बिफरी हुई थी?" सुवटी ने सड़क पर कंकड़ियाँ जमाते हुए सुवो के पास आकर कहा, "बदरू मियाँ ने माल गिरा दिया था।"

"बदरू मियाँ—" सुवो ने मुँह बा दिया।

"वही, जिसकी चमड़ी उधेड़ी जा रही थी···वो बूढ़ा—"

"और—माल क्या?···"

"भिस्की बोलते हैं उसे, भिस्की। बाड़मेर से आती है पुसपा बाई के लिए। रोज एक बोतली चाहिए उसको। दिन-रात पीती है और मस्ताई छाँटती है।"

"भिस्की क्या—दारू ही है। नाम इंगरेजी रख दिया है।" ज्यानकी काकी ने सुवटी की बात आगे बढ़ायी, "बेचारे बदरू मियाँ की मुसीबत है। कुछ भी करो और मरो।"

"पीने का पानी भी पुसपा बाई भिस्की की बोतली में ही रखती है। बदरू मियाँ ने यह सोचकर कि रात का बासी पानी पड़ा होगा, एक आधी भरी हुई बोतली बाहर उलट दी। उसमें भिस्की थी। पुसपा बाई की निगाह पड़ गयी। उसने धुनाई कर डाली बूढ़े की।" फुलकी ने घटना का ब्यौरा दिया। वह उस समय उधर से ईंधन लेकर आ रही थी।

"पुसपा बाई गालियाँ बक रही थी, कोड़ा फटकार रही थी और हम सब ऐसे खड़े थे जैसे, साँप सूंघ गया हो—"

"तो···तुम बोले क्यों नही कुछ!" सुबटी ने शुबो की तरफ उपहास-भरी दृष्टि से देखा, "तुम्हारी भी वही गत होती—"

"सुनते हैं, बदरू मियाँ बहुत पुराना चाकर है पुसपा बाई का। हर-दम हर जगह सेवा-टहल के लिए उसके साथ रहता आया है।" ज्यानकी काकी बोली।

"इग्यारसीलाल पुसपा बाई की फम्मली को जानता है।" सुबटी ने अपना ज्ञान प्रकट किया।

"फम्मली क्या?"

"फम्मली का मतलब···बाल-बच्चे और—"

"जा-जा, ऐसी कटखनी औरत के बच्चे होंगे!" ज्यानकी काकी ी को झिड़क दिया, "वो तो···पैदा होते ही खा जायेगी उनको··· कच्चा ही चबा जायेगी।"

"मुझे तो इग्यारसीलाल ने बताया था कि उसे पुसपा बाई की मली के बारे में सब-कुछ मालूम है—"

"तू इग्यारसीलाल के पास गयी थी?" ज्यानकी काकी नेत्यौरियाँ चढ़ाकर सुबटी की ओर देखा।

"हाँ।" सुबटी गरबीली हंसी में बिखर गयी।

"कब?"

"रात को।"

"तभी सुब्बै से रानी बनी मटक रही है तू।"

"नहीं तो क्या तू मटकेगी ! तेरे तो दिन गये । अब बैठके माला जपा कर ।" सुवटी ने ज्यानकी काकी का मजाक उड़ाया ।

"ज्यादा घमण्ड मत कर ।" इस बार फुलकी से बोले बिना नहीं रहा गया ।

"तू भी कर ले थोड़ा-सा ।" सुवटी ढीठता पर उतर आयी ।

"मुझे जरूरत नहीं ।"

"मन-मन भावे, मूंडी हिलावे । गयी तो थी तू भी एक बार इग्यारसीलाल के पास । लेकिन, दुबारा उसने तुम्हारी तरफ मुड़कर देखा ही नहीं ।"

"देखती हूँ, तुम्हारी कब तक कदर करेगा वो ।" फुलकी का चेहरा लाल हो उठा ! शर्म और अपमान से ।

"मुझे तो आज फिर बुलाया है उसने ।" सुवटी ने ऐलान किया और तसले में सुरखी भरकर दूसरी ओर चली गयी ।

"दो दिन की हल्दी है । कब तक नखरे करेगी !" ज्यानकी काकी ने कहा ।

"सुवटी तुम्हारी सगी बहण है न !" शुबो ने फुलकी से पूछा ।

फुलकी ने कोई जवाब नहीं दिया । पत्थर तोड़ती रही ।

ज्यानकी काकी बोली, "फुलकी से तीन साल छोटी है, सुवटी । माँ तो सुवटी को जलम देकर ही चल बसी । बाप पिछली लड़ाई में मारा गया । फौज को राशन पहुँचाता था, गोली लग गयी । फुलकी का ब्या हुआ था, पर इसका मोट्यार इसे छोड़कर लाहौर चला गया । कोई बोलता था, वहाँ कुली है ।...अब ये दो बहणें ही बची हैं अपने कुनबे में ।"

उसी समय इग्यारसीलाल ने पीछे से आकर शुबो की खोपड़ी पर डण्डा बजाया; "इन जनानियों के सहँगे से चिपका हुआ यहाँ क्या कर रहा

है तू ? चल, उधर चल !"

शुबो वहाँ से नहीं हटा। सीधा तनकर खड़ा हो गया ! उद्धत।

"आँखें फाड़-फाड़कर क्या देख रहा है ? मुझे खा जायेगा क्या ?" इग्यारसीलाल के बेदाँत मुंह से थूक के छीटे उछले। फिर उसने ज्यानकी काकी के कूल्हों पर दो बार डण्डे से कोंचा, "मुटियाकर मस्तानी हो गयी है तू।"

शुबो ने लपककर इग्यारसीलाल के हाथ से डण्डा छीन लिया। घुटना अड़ाकर उसने डण्डे को तोड़ डाला और उसके दोनों टुकड़े परे फेंक दिये। यह सब पलापल में हो गया।

इग्यारसीलाल चीखा, "कमीने !"

शुबो ने उसका हाथ पकड़ लिया, "तुम्हारे बुढ़ापे का लिहाज कर तुम्हें छोड़ रहा हूँ, आज !···लेकिन आइन्दा अगर किसी औरत की बेइज्जती की तो गरदन तोड़कर रख दूंगा, समझे।"

इग्यारसीलाल सहम गया। उसके पीले पड़े हुए मुंह से बोल न फूटे। किन्तु तभी चार-छह जने उसके हिमायती बनकर आगे आये और शुबो पर टूट पड़े।

"स्साला, मालिक को धमकाता है !"

"टुक्कड़खोर की यह हिम्मत—"

शुबो बाँहों से सिर ढांपकर बैठ गया। उसने कोई प्रतिवाद नहीं किया। एक आदमी हथौड़ा लेकर शुबो की ओर दौड़ा। वह एक बार में ही उसका सिर खोल डालता, किन्तु तभी गज्जी और सिराम बीच में पड़ गये। बीच-बचाव किया।

इग्यारसीलाल तम्बू में लौट गया।

मार-पीट हो चुकने पर शुबो लँगड़ाता हुआ एक पेड़ की छांह में जाकर लेट गया। ज्यानकी काकी ने चोरी-छिपे एक निगाह उस पर डाली। एक सिसकी उसके गले तक आयी। सिर झुकाकर उसने आँखें पोंछ लीं।

—मैंने क्या गलत किया ? कम्प के ये लोग मेरे दुश्मन क्यों हो गये ? ···मुझ पर हाथ उठाते हुए उन्हें जरा भी भान हुआ कि वे अपना ही तिरस्कार कर रहे हैं ? स्यात अपने को बेच देने का मतलब है—अपने भले-बुरे के ज्ञान को भी घोंटकर मार डालना···

"शुवो !" सामने ठीकेदार खड़ा था, बछराज !

"तुमने यह अच्छा नहीं किया।"

'लेकिन, मैंने बुरा क्या किया ?" शुवो ने होंठ खोले। मसूड़ों से बहता हुआ खून मुंह में भर गया था। उसने एक लाल-लाल कुल्ला थूक दिया और फिर उसे रेत से ढँक दिया।

"तुम्हे सब्र रखना चाहिए।" बछराज सोचता हुआ बोला, "कम्प से निकाल दिये गये तो कहाँ जाओगे तुम ? जान के लाले पड़ जायेंगे। मैं··· तुम्हारे गुस्से को समझता हूँ, लेकिन—अभी तो, बर्दास करना पड़ेगा। और कोई चारा नही।"

बछराज की हमदर्दी ने शुवो को गहरे तक भिगो दिया। वह कृतज्ञता और साथ ही, लज्जा से भर उठा। सिर्फ इतना ही कह पाया, "मैं माफी चाहता हूँ।"

"तुमने कोई जुर्म नही किया है जो माफी माँगो—" बछराज की आँखें खाली थी। एकदम खाली आँखें, जो दूसरो को उदास कर देती हैं।

"खैर, आज का मामला तो मैं संभाल लूंगा, लेकिन···" वाक्य पूरा किये बिना ही बछराज लौट पड़ा।

साँझी घिर आने पर, जब शुवो पानी की टंकियों के पास उकड़ूं बैठा सूरज की लाली का लीला-रास देख रहा था तो किसी ने उसके कन्धे पर हाथ रखा।

शुवो मुड़ा। फिर चौंक गया।

वही बूढ़ा था, सवेरेवाला···जिस पर पुसपा बाई कोड़ा चला रही

थी—बदरू मियाँ।

"शुबो नाम है तुम्हारा ?"

शुबो ने हामी भरी।

"पखेस्तान से ईदस्तान क्यों चले आये ?"

"पता नहीं।"

"पता नहीं ? अजीब आदमी हो !"

"सचमुच मुझे मालूम नहीं कि पखेस्तान और ईदस्तान कहाँ से शुरू और कहाँ पर खत्तम होते हैं।"

"यह तुमने मेरे दिल की बात कही। लेकिन—मैं जिन्ना से नाराज हूँ..."

"जिन्ना कौन ? उससे नाराजगी के क्या माने !"

"अब, यार...तुम इस स्यासत के पड़पंच को क्या जानो। यहाँ से उठो, तुम्हें पुसपा बाई ने याद किया है।"

शुबो सिहर उठा, "नहीं, मैं नहीं जाऊँगा।"

"डरते हो ?"

बदरू मियाँ के जख्मी होंठों पर मुस्कराहट खिंच गयी।

"डरता तो...नहीं हूँ मैं।"

"फिर ?"

"नफरत है मुझे—"

"तो अपनी नफरत को बदरू मियाँ की नफरत से जोड़ दो।"

"तुम्हारे मन में भी नफरत है ?"

"है, और इतनी ज्यादा है कि पुसपा बाई तो क्या अल्ला ताला से भी मैं रत्ती भर भय नहीं खाता हूँ। मार खा लेता हूँ, बर्दास कर लेता हूँ, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि डरता हूँ किसी से !" बदरू मियाँ ने दाढ़ी के सफेद बालों की रस्सियाँ बट डालीं, "तुम भगवान को मानते हो ?"

"नहीं।"

"सच कह रहे हो ?"

"हाँ, सरासर।"

"तब डटे रहो। कोई बाल तक नहीं उखाड़ सकेगा तुम्हारा। असल में भगवान-अगवान कुछ होता नहीं, लेकिन बिसवास करने लगो तो मन कमजोर हो जाता है। इसलिए सदा पीठ ही रखो उधर।" उसने भेदक दृष्टि से देखते हुए दाँत किटकिटाये, "यह सब ज्यादा दिन चलनेवाला नहीं। एक दिन आयेगा, जब इन सबको नगन करके चौराहों पर औंधा लटकाया जायेगा। इस पुसपा बाई को, इग्यारसीलाल को और उस सम्पी के बच्चे को—"

"सम्पी कौन ?"

"कौन-क्या, वही जैंतपालसिंघ, उसी की तो रखैल-रांड है यह पुसपा बाई! एम्मेले बनने के सपने देख रही है, चुड़ैल। और वो जैंतपालसिंघ बैठा है दिल्ली में, नेम से रोज सात मनीस्टरों के जाँघिये सूँघता है।"

"इग्यारसीलाल भी कुछ लगता है पुसपा बाई का ?"

"एक जमाना था, जब बज्जार में गाहक लेके आता था यह, इस जगत रण्डी के लिए। आज बड़ा ब्योपारी बन गया है, महतारी का भड़वा!"

यह बार-बार पिटकर सिटपिटानेवाला बूढ़ा बदरू मियाँ नहीं है, कोई और है! गुवो ने उसकी ओर प्रशंसा के भाव से देखा। उसे लगा, यह एक खरा-खरा आदमी है यहाँ, जिससे बतलावण हो सकती है दुख-दर्द में।

"इग्यारसीलाल ने पुसपा बाई से शिकायत की है तुम्हारी। लेकिन बछराज ने बात घुमा-फिरा दी है।...अब जो कुछ भी तुमसे पूछे-कहे पुसपा बाई, तुम बस हाँ-हाँ करते जाना। और कुछ बोलना ही मत, नहीं तो ठीकेदार झूठा पड़ जायेगा। उसने तो तुम्हें बचाने के लिए ही दो बातें गढ़ी हैं। सभी के काम आता है वह। सुन ले गुवो, बछराज हीरा

है, हीरा ! लेकिन···पता नहीं, कौन-सा घुन है जो उसे अन्दर-ही-अन्दर खाये चला जा रहा है। उसकी छाती पर कोई भारी बोझ है···"

तम्बू में लालटेन जल रही थी। धुएँ से उसका कांच मैला पड़ चुका था। मन्द-सा कटा-फटा उजाला। पुसपा बाई सलवार-कुरती पहने, उजाले की उसी जाजम पर मूढ़ा डाले बैठी हुई थी।

"इतनी देर कहाँ धूल खाते रहे, मौलाना !"

बर्छी-सी धारदार आवाज। कण्ठनली से नहीं, मानो एक गन्दी बदबूदार गली से बाहर निकलती हुई।

बदरू मियाँ लालटेन की बत्ती ठीक करने में लग गया।

"अब इस लालटेन के क्यों अँगुली कर रहे हो ? बाहर जाके मरो।"

बदरू चुपचाप चला गया।

शुबो का दिल धकर-धकर कर रहा था। इच्छा तो हुई कि वह भी बदरू के पीछे-पीछे बाहर निकल जाये, पर पाँव नहीं उठे।

"केसर-कस्तूरी पी है तुमने ?"

पुसपा बाई का सवाल भाले की नोंक की तरह उसके माथे पर आकर लगा। उसने इनकार में सिर हिलाया।

"आज पीकर देखो।···गजसिंहपुर के परधान ने पीपी भरकर भेजी है मेरे लिए। सिक्ख है वो। खूब मुस्टण्डा है। और—मुझे बहुत चाहता है। एक बार अपने साथ दौरे पर ले गया था मुझे। गंगानगर का पूरा इलाका घुमाकर दिखलाया।···राजनीती भी अच्छी करता है। कहता है—पुसपा बाई, तुम किसी तरह भादरा से कांगरेस पाल्टी का टिकट एक बार जुगाड़ लो, एम्मेले बनाकर भेजने का जिम्मा मेरा। स्योर जीत है।···यही नहीं, वो तो मुझे फिर मन्त्री बनाने के वास्ते भी पैसा और जोड़-तोड़ लगाने के लिए तैयार है।"

पुसपा बाई ने अपने सामने दो लोटे रखे और उनमें केसर-कस्तूरी

की पीपी उंडेलने लगी।

"मैं दारू नहीं पीता हूँ।" शुवो मिनमिनाया।

"दारू नहीं पीते हो! तो क्या खाक कुश्ती लड़ते हो। बछराज तो बतला रहा था, तुमने बड़ी पहलवानी की है और उम्मरकोट के आसपास के दो-तीन डाकों में भी तुम्हारा हाथ रहा है—"

शुवो चकरा गया। व्यर्थ ही उसके मत्थे यह झूठ क्यों मढ़ा जा रहा है? इसने तो कभी ऐसा-कुछ नहीं किया···फिर—मुंह खोलने की बेकली के साथ ही उसे बदरू मियाँ की चेतावनी का ध्यान आया और वह अन्यमनस्क-सा मूंडी डालकर खड़ा रहा।

"तुमने इग्यारसीलाल का हाथ मरोड़ा था?" पुसपा बाई ने गट-गट एक लोटा खाली कर दिया और अपने होंठ चूसे।

"हाँ।" उसे याद आयी बदरू की बात, हाँ-हाँ करते रहना!

"तुमने उसे जान से मारने की धमकी दी थी?"

एक पल के लिए हिचकिचाया, फिर वह बोला, "हाँ।"

"तुम किसी का खून कर सकते हो?"

माथा भाँय-भाँय करने लगा था, लेकिन शुवो ने कहा, "हाँ।"

"बहोत अच्छे। मुझे तो राजनीती में ऐसे ही आदमी की जरूरत थी। तुम बहादुर हो। मेरे साथ रहोगे तो उन्नती करते ही चले जाओगे। कैम्प में···मरद कोई नहीं, सब चूहे हैं। नाज खाते हैं और मीगणी करते हैं।"

शुवो को घबराहट होने लगी, "अब मैं जाऊँ?"

"आज रात को उम्मरकोट से कुछ लोग आयेंगे यहाँ···तुम वहीं के रहनेवाले हो न?"

"हाँ।"

"तो उनकी कुछ मदद करना तुम।···कैम्प में रात को पहरेदारी का काम भी ठीक नहीं चल रहा है। सड़क पर हाड़-तोड़ मेहनत के धन्धे से हटाकर मैं तुम्हें पहरे का जिम्मा सौंपना चाहती हूँ। आठ-दस जनों

का एक जत्था बना लो और चौकसी रखा करो। मैं तुम्हें परखूँगी, समझे! बदरू तो सठिया गया है अब। उससे कुछ होता-हवाता नहीं। आज ही उस हरामी ने दारू की पूरी बोतल मिट्टी में मिला दी... अहमक है, बेवकूफ!"

शुबो हैरत से पुसपा बाई को देख रहा था। अब भय की थरथरी मिट चुकी थी, लेकिन एक तनातनी थी बदन में—जगह-जगह टिठकी हुई।

"तुम मेरा हुक्म मानो। फिर...तुम्हारा हुक्म कैम्पवाले मानेंगे।... और यह सब इग्यारसीलाल से न कहना। मैं उस पर भी...निगरानी रखती हूँ।"

तम्बू के बाहर से खँखारता हुआ बछराज आया, अन्दर। उसने स्थिति को भाँपनेवाली दृष्टि से पहले शुबो, फिर पुसपा बाई को देखा।

"यह तो काम का आदमी है, बछराज!" पुसपा बाई की आवाज नशे में तर थी।

"मैंने कहा था—" बछराज ने कहा, फिर शुबो की ओर हाथ हिलाया, "तुम जाओ।"

"हाँ, बाहर बैठो।...कहीं, इधर-उधर न निकल जाना। मु
तुम्हारी जरूरत पड़ेगी।" पुसपा बाई ने भद्दे ढंग से मूढ़े के नीचे टाँ
पसार दीं।

तभी अकड़ता-ऐंठता-सा इग्यारसीलाल भीतर आया। वे तीनों
बैठ गये। तम्बू से निकलते-निकलते शुबो ने देखा कि पुसपा बाई ने के
कस्तूरी से भरा हुआ लोटा इग्यारसीलाल के सिर पर उँड़ेल दिया।
हँसने लगा, हिनहिन करता हुआ। पुसपा बाई गाने लगी—

अँगिया के निबुवा न तोड़ो सैंया, न मरोड़ो बैंया...

"बदरू, बदरू मियाँ!" पुसपा बाई ने गाते-गाते ताली बजायी
घुंघरू निकालकर लाओ, बक्से में से। मैं नाचूंगी, मैं इस मुज
नाचूंगी।..."

अन्दर के इस हंगामे से कुछ परे हटकर शुबो एक सिल पर बैठ गया और कम्प की हलचल में अपने को उलझाने लगा।

चूल्हों में जलती हुई आग। बातियों और भाँडों के इर्द-गिर्द रचा-बसा शोर। बातों और किस्सों की गूँज। झिंगुरों की झिन्-झिन्-झिन् और उसमें जागता हुआ कोई अव्यक्त रहस्य।

"यही अन्धी जिनगी है, अब शेष!···पत्तों का रेला जहाँ थम गया है, एक उजड़ी-उजड़ी बस्ती बन गयी है—"

आसमान और मन, यदि फट जाये तो कोई भी पैवन्द लगाने की जुगत करो, लगता नहीं है। शुबो का मन फटा जा रहा था···

अँधेरे में दो छायाएँ आयीं और तम्बू से कुछ फासले पर ठहर गयीं। एक बड़ी, दूसरी छोटी छाया।

"अन्दर क्या घमसान मच रहा है, बप्पा!" छोटी छाया ने पूछा।

"घुँघरिये बज रहे हैं।" बड़ी छाया का खिन्न उत्तर।

"मुझे भी लाकर दो न घुँघरिये!" बच्चा मचल पड़ा।

"हट्ट, उसने सुन लिया तो खाल खींच डालेगी।" बाप ने डराया।

"हाँ, बप्पा। वो कोड़े से मारती है।"

"सुब्बे बदरू मियाँ की चमड़ी उधेड़कर रख दी और अब नाच रही है, नचनी!" स्वर में घृणा की नोक उठ आयी।

"वो नचनी नहीं, भूतनी है। उसके दाँत कित्ते काले, डरावने हैं, बप्पा!"

"बदरू उधर बैठा है स्यात।" बड़ी छाया धीरे-धीरे शुबो की तरफ बढ़ी। पास आकर पुकारा, "बदरू मियाँ, कैसे हो?"

"बदरू भीतर है तम्बू में।"

"कौन हो?·· शुबो!"

"हाँ, हद्दी।"

"यहाँ मत बैठा करो, शुबो! कभी वो देख लेगी तो जान लेकर छोड़ेगी।"

"यह छोरा तुम्हारा है ?"

"हाँ, यह—बाशिया है।"

"बाशिया, इधर आओ।" शुबो ने लाड़ से बुलाया।

"बदरू मुझे गुड़ की डली देता है।"

शुबो हतप्रभ हुआ। उसके पास बाशिया को देने के लिए कुछ नहीं था। लेकिन, बाशिया पहले तो हद्दी के पीछे छुप गया, फिर तेजी से भागकर अन्धकार में गुम हो गया।

दो-ढाई पहर रात धुलते-बीतते टीलों के पार ऊँटों की बिलबिलाट सुनायी दी। फिर चन्दरमा के हल्के उजास में वे एक कतार में परगट हुए और मण्डारे की तरफ चले गये।

पहले इग्यारसीलाल तम्बू से निकला और तेज कदमों से उधर चला गया। उसके पीछे-पीछे पुसपा बाई, बदरू मियाँ का कन्धा थामे'''डह्-डह् ढहती और झूमती हुई।

घुवो, जो अभी तक अधसोया-अधजागा यह सब देख रहा था, आँखें ममलता-मिचमिचाता खड़ा हो गया।

"मैं खुद हिसाब करूँगी। मुझे वहाँ'''लेकर चलो!" पुसपा बाई की आवाज में लड़खड़ाहट थी, चेतना में नहीं।

"इग्यारसीलाल'''स्साला खोटा है। मुझे उस पर कत्तई विश्वास नहीं।" वह बक रही थी। होक्-होक्-होक्! उसने तनिक रुककर बदरू की बाँह पर कै कर दी। फिर उसी तरह डगमगाती हुई चल पड़ी।

बदरू ने घुवो को देखा तो बोला, "तुम भी आ जाओ!"

"हाँ आ जाओ, पहलवान! उम्मरकोटवाले आ गये हैं।" पुसपा बाई ने कहा। नथुनों से दुर्गन्ध छोड़ते हुए, बार-बार।

घुवो उन दोनों के पीछे हो लिया।

आकाश में एक छोटा-सा तारा, तेजी से पूँछ चमकाता हुआ भागा और चोर की तरह अचानक गुम हो गया।

कम्प चुप था, लेकिन घुवो सोच रहा था और उसे लग रहा था,

जैसे सोच की दुनिया में ढेर-सी आवाजें बन गयी हैं। वे आवाजें किसी को सुनायी न दें, इसके लिए चेष्टा करते हुए शुबो ने गर्दन झटकाकर अपने रूखड़-सुक्खड़ बालों में हाथ फेरा।

देर तक ऊँटों पर अनाज के बोरे लादे जाते रहे। कई जने उनके साथ आये थे। वे खासी उतावली में लदाई निपटाते रहे। शुबो और बदरू भण्डारे से बोरे निकालकर बाहर रख रहे थे। इग्यारसीलाल और पुसपा बाई उनकी गिनती करने के लिए ऊँटों की कतार के बराबर जा खड़े हुए थे।

"यह नाज···दूसरे कम्फ में जायेगा?"

शुबो ने एक क्षण के लिए कमर सीधी करते हुए और गहरी साँस लेते हुए, बदरू से पूछा। बदरू ने एक बोरे को घसीटकर ठाँव पर लगाया। फिर हाथ मलते हुए बोला, "आस्ते बात करो, आस्ते!···इस नाज को तो पुसपा बाई ने बेच दिया है, उधर वालों के हाथ। इग्यारसीलाल की भी इसमें हिस्सेदारी है।···सब कैम्पों में यही हो रहा है।"

एक ठिगने कद का आदमी ऊँटों के बीच से निकलकर सहसा प्रगट हुआ। पुसपा बाई ने कहा, "अब और नहीं, बस।"

"ठीक्क है।" वह कनपटी खुजलाता हुआ बोला।

"हिसाब चुकता कर दो।" इग्यारसीलाल भी लपकता हुआ आ गया।

फिर कुछ फुसफुसाहटें। कुछ झिकझिक। कुछ रोष। कुछ सन्धिवाचक प्रलाप। और खामोशी। और लेन-देन। और दुआ-सलाम।

ऊँट पगथड़े बजाते हुए चल पड़े।

"सावधानी से जाना···" पुसपा बाई ने पीछे से कहा।

"इन्तजाम करके आये हैं। कोई खत्तरा नहीं।" ठिगना आदमी हँसा।

"फिर भी···सचेत रहना अच्छा है।"

"हाँ-हाँ।" ठिगना दौड़कर ऊँटों की पंगत में ओझल हो गया।

चन्दरमा का चाँदना ढीला-ढीला सा होकर गर्द में उलझा हुआ

था। कम्प में पहरा देनेवाले की लाठी टुल्पार ठक्-ठक् बज रही थी।

"गुबो!" पुसपा बाई ने पुकारा, "तुम्हें मैंने अब कैम्प की चौकीदारी पर लगा दिया है। अच्छी तरह डिउटी बजाना, हाँय।"

"अच्छा।" गुबो का गला फंस गया।

"कुछ भी नुकसान हो गया तो तुम्हारे जिम्मे पड़ेगा।"

वे तीनों तम्बुओं की तरफ लौट गये।

गुबो अकेला गर्द-भरे चाँदने में गड़ा रहा।

ऊँट टीलों की ओट में अदृश्य हो गये थे, किन्तु उनके पगभड़ों का घोर धीमे-धीमे उछलता हुआ पास आ जाता था।

एक हिलोर उठकर ऊपर आयी और गुबो अस्थिर हो उठा। रात, चाँदना, धूल और उनके बीच कुण्डली मारकर बैठी हुई उदासी। उसने अपने आपको उस पुतले की भाँति अनुभव किया, जिसे चिथड़ों में लपेटकर, कौओं को डराने के लिए, खेत में गड़ा कर दिया जाता है। टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ियों से बने हाथ-पैर, काली हांडी का सिर और उसमें जड़े हुए दो भद्दे सूराख—आँखें।

वह दौड़ने लगा। उसकी घबराहट उसके संग-संग दौड़ने लगी। अस्तबल की साँकल तोड़कर निकल आये घोड़े की तरह वह भीतर-ही-भीतर हिनहिना रहा था। एक अनथक हिनहिनाहट।

कम्फ की हद से निकलकर गुबो उस रास्ते पर आ गया, जिधर से होकर अभी ऊँट गुजरे थे।

तभी वह औंधे मुंह गिर पडा। आँख-नाक-कान रेत में धँसमँस हो गये। वह तुरन्त अपने को झड़कारता-फटकारता हुआ उठा। भौंहों को सिकोड़कर उसने आजू-बाजू देखा। एक स्याह ढूह पर उसकी धधकती हुई पुतलियाँ थिर हो गयीं। फिर वह उस ढूह पर ऐसे चढ़ गया, मानो किसी ने उसे हवा में ऊपर उछाल दिया हो।

थोड़ी देर की जाँच-पड़ताल के बाद शुबो को मालूम हो गया कि वह ढूह अनाज के दो बोरों का है। वे किसी ऊँट पर से गिर गये थे और स्यात जल्दबाजी में उन लोगों के ध्यान में आये नहीं।

शुबो ने कान लगाकर, साँस थामकर सुना। ऊँट अब तक काफी दूर जा चुके थे। पगथड़ों का बजना बन्द हो गया था।

वह कुछ पल उन बोरों को घूरता रहा। उसे विश्वास नहीं आ रहा था कि जो दृश्य सामने है, वह सच है—एकदम ठोस !

एक खयाल आया कि पुसपा बाई को खबर कर दे, लेकिन अगले ही क्षण अन्दर से जोरदार इनकार का स्वर उफन पड़ा। नहीं, इन बोरों पर न पुसपा बाई का हक है, न उम्मरकोटवालों का। ये बोरे तो कम्फ के लिए भेजे थे सिरकार ने।

टीले की अब-ऊँचाई से बोरों को लुढ़काते हुए वह ठेठ तल्ली में ले आया। बहुत जोर लगाना पड़ा। हँफनी चालू हो गयी।

कुछ सुस्ताया शुबो, फिर नाप-जोखकर बड़ा-सा गड्ढा खोदने में जुट गया। एक मोटी लकड़ी का कुदाल की तरह इस्तेमाल करते हुए, वह जमीन की परतें छाँट रहा था—कभी हथेलियों से, कभी अँगुलियों और नखों से।

गड्ढा तैयार हुआ तो वह इधर-उधर से आक-फोग और घासफूस बटोर लाया, थोड़े-से पत्थर भी। दोनों बोरे गड्ढे में लुढ़काकर पत्थरों की चौहद्दी बनायी। फिर रेत डाली। फिर घास की तह। फिर, और गाढ़ी-गाढ़ी रेत।

सब-कुछ ठीक-ठाक जमाकर, और काम समाप्त कर जब उसने इत्मीनान की भरी-पूरी साँस ली और दूर-दराज नजर उठायी तो पौ फट रही थी।

वह तेज चाल से कम्फ की ओर लौट पड़ा। कुछ सोचता हुआ। कुछ खोया-खोया। लेकिन एक खुशफैल रोमांच और नये-नये से जागरण में न्हाता हुआ।

सौ-डेढ़ सौ डग के बाद घुबो ने पलटकर देखा। नहीं, टीलों के बीच बने उस गड्ढे का किसी को पता नहीं चलता था। ऊपर, अच्छी तरह रेत पाट दी गयी थी, बरोबर-बरोबर। मामूली शक की भी गुंजाइश नहीं थी।

पसीने से भीगा-भीगा घुबो भण्डारे की कच्ची दीवाल पर टाँगें लटकाकर बैठ गया। हवा की सनसनीखेज, मीठी ठण्ड रगों में रमने लगी। पल भर के लिए पलकों में नींद लहरायी, फिर उड़ गयी। वह सोना नहीं चाहता था, इस समय। बरसों बाद, उसकी इच्छा पंख फैलाकर लहर-लहर लहरने लगी। धोतिये के कमरबन्द की गाँठ से उसने घुरालिया निकाला और बजाने लगा—टिर्रटिर्रटिर्रटिर्रटिर्रटिर्र···

एक गहरी-गहरी लय, एक उजली-धनी हँसी, एक अकूत अपनापे की गन्ध!

उन्होंने घुबो को घेर लिया।

वे सब थे, उसके चारों ओर। हट्टी, जमाल, सिराम, गज्जी, ज्यानकी, फुलकी, गोदारी, सुखटी···सब के सब।

सुबह हो रही थी।

घुबो अब गाने लगा। केसरिया बालम। वह जैसे नशे में था। मस्त।

चकित-से वे उसे देख रहे थे, चीन्ह रहे थे। यह चीन्हना, तमाम अन्धकार के बावजूद, अपने में जो कुछ आबदार और साबुत था, उसे पाने का एक यत्न था। बदरू भी वहाँ आ गया। उसने मुग्ध भाव से कहा, "गला अच्छा पाया है इसने!"

नीली-पीली किरनों की धूप चमचमाती हुई उतरने लगी। उसमें एक भिन्न किस्म की चहक थी, रेतरहित और मीठी।

अपने तम्बू के तिरपाल की एक फड़कती हुई दरार से बछराज ने उस धूप की कोमलता को और घुरालिये की धुन में गहरी होती हुई

सुन्दरता को टूटी-टूटी नजरों से देखा। एक लम्बी सांस लेकर उसने मुंह फेर लिया।

दरख्तों और कच्ची छाजनों पर एक सुनहला छिड़काव-सा हो गया था। चेहरे पर चकरायेपन को थामे-थामे गज्जी सहसा झनझना-सा उठा। फिर उसके मन की वह झंकार कम्फ में दौड़ गयी। उसने शुबो के कन्धे पर हाथ रख दिया।

तभी दूर से इग्यारसीलाल आता हुआ दिखायी दिया।

एक हाथ मुड़कर कमर में फँसा हुआ, दूसरा कलाई तक खाली लोटे के मुंह में घुसा हुआ। वह हाजत-फरागत से लौट रहा था।

शुबो के आसपास खड़े लोगों में एकाएक घबराहट फैल गयी। उनके चेहरे एक-एक कर उजड़ने लगे। वे चुपचाप वहां से खिसक लिये।

"ये इत्ता हल्ला क्यों मचा रखा है ?"

पानी के कोठे पर आकर इग्यारसीलाल ने लोटा परे फेंक दिया। बदरू ने लपककर लोटा उठा लिया और फिर वहीं जमीन पर बैठकर उसे रेत से मांजने लगा।

शुबो का नशा टूटा, लेकिन पूरी तरह नहीं। उसके कब्जे में अनाज के दो बोरे थे। सिर्फ उसी को पता था कि वह अब खासे बाजरे का मालिक है। किसी लाट-बच्चे की भी परवा नहीं उसको।

"क्या है ?" शुबो की ताड़ती हुई दृष्टि ऊपर उठी।

"सुबँ-सुबँ क्यों बोका फाड़ रहे हो !" इग्यारसीलाल के फुँफकारते हुए होंठ व्यंग्य से टेढ़े हो गये, "कैम्प की रोटियां पचती नहीं हैं क्या ?"

"तुम फिर भिड़ना चाहते हो मुझसे ?" शुबो की आंखों में बर्छियों की-सी धार तड़प उठी।

इग्यारसीलाल ने पानी से हाथ धोये। बोला, "होश में रहो, होश में। यह तुम्हारे बाप की जागीर नहीं है, बच्चू !"

शुबो के तन में अंगारे उछलने लगे, किन्तु उसके कुछ कहने से पहले ही इग्यारमीलाल तेज-तेज कदमों से पुसपा बाई के तम्बू की ओर बढ़ गया।

कम्फ की आँखें कुछ न देखने का मिस करती हुई भी सब-कुछ देख रही थीं।

अपने गले के काले धागे में झूलते हुए ताम्बे के दाने को अँगुलियों में पकड़े-पकड़े शुबो उफन-उमड़ते गुस्से पर काबू पाने की चेष्टा करता रहा।

"टट्टू की औलाद है, स्साला! ठोकर से मानेगा, बात से नहीं।" वह बड़बड़ाया।

...

थोड़ी देर बाद बदरू मियाँ के जरिये शुबो को बुलाहट पड़ी। वह गया। स्यात पुसपा बाई आज उसके साथ भी कोड़े से पेश आयेगी, उसने सोचा और होंठ काट लिये।

तम्बू जाने कैसी बुरी-सी गन्ध में भभक रहा था। शुबो के नथुने सुलगने लगे। फिर सामने पड़ी, बासी-बुसे चेहरेवाली वह थलथली औरत। सिर पर फफूँद की तरह छितराये हुए बाल। सीधी, उठंग-लग नाक और उसके छेद में जड़ी हुई मैली नथनी। आँखों के निचले मांस में स्याह धब्बों का चिपचिपा छितराव और···शुबो का जी मितलाने लगा।

"तुम गा रहे थे?"

"हाँ।"

"रात-भर जागने से थक गये होगे, अब जाकर सो जाओ।" पुसपा बाई ने उसे घूरते हुए कहा।

"मैं थका नहीं हूँ।"

"और—कैम्पवालों के सामने ऐसे-वैसे मत बोला करो। तुम्हें तो

मज़े का काम दे दिया गया है, अच्छी तरह रहो।"

इग्यारसीलाल अचानक उचक पड़ा, "इसको बोलने तक का शऊर नहीं।"

शुबो ने खदेड़ती हुई निगाह से इग्यारसीलाल को देखा। वह लाल-पीला होकर उकड़ूँ बैठा था। घुटने थपकता हुआ तमतमाकर बोला, "तुम उधर से आये हो। तुम्हें अपनी हैसियत का पता होना चाहिए।"

"तुम अपनी चिन्ता करो।" शुबो को ताव आ गया।

"जबान लड़ाते हो ! पुलीस को खबर हो गयी तो मारे जाओगे। तुम उनके जासूस हो, जासूस !"

"मैं कुछ भी होऊँ, लेकिन तुम पक्के चोर हो। कम्फ से अनाज की चोरी करते हो और उधर भिजवाते हो।"

"आगे एक लफज भी बोला तो टेंटुआ तोड़ दूंगा तेरा।" इग्यारसीलाल आपे से बाहर हो गया।

"आओ, तोड़कर देखो !"

"कुच्छ नहीं, कुच्छ नहीं, भई !" पुसपा बाई ने टोका, "इग्यारसी, तुम अभी जाओ। खामखाँ फटे पड़ रहे हो।"

इग्यारसीलाल तुरन्त चला गया, पैर धमकाता हुआ। चोट खाये हुए जानवर-सा। पुसपा बाई ने शुबो को तौलती दृष्टि से देखकर कहा, "तुम्हें इस तरह नाराज होने की जरूरत नहीं।"

"नाराज तो वो ही हो रहा था।"

उसी समय बछराज ने तम्बू के अन्दर झाँका। पुसपा बाई उबल पड़ी, "यहाँ कोई तमाश्शा हो रहा है क्या ? बार-बार यह आना-जाना क्या लगा रखा है, तुम लोगों ने ?"

बछराज तत्काल पलटकर चल दिया।

"मेरे सिर में तो हथौड़े चल रहे हैं इस वक्त।" पुसपा बाई ने माथा पकड़ लिया, "नींद न आने से कनपटियाँ दरद करने लगती हैं।"

"मैं जाऊँ ?"

"रुको।"

पुसपा बाई कराहती हुई पसर गयी माची पर। बदरू तेल की शीशी लेकर सिरहाने आ खड़ा हुआ और मालिश करने लगा।

"बात यह है कि तुम जरा सावधानी से रहो। मैंने तो बछराज के कहने पर तुम्हें यहाँ रख लिया है, लेकिन ऊपर राज में किसी ने शिकायत कर दी तो बुरा होगा। तुम दूसरे मुल्क के हो—"

पुसपा बाई की आँखें बन्द थीं। शुबो से सहन नहीं हुआ। बोला, "मुलुक-उलुक मैं नहीं जानता—"

"नहीं जानते तो जानना होगा।" पुसपा बाई की आवाज में कड़ापन आ गया, "मैंने रहम दिखलाया है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि तुम जो मन में आये बकने लगो।"

"ठीक है, तुम अपना रहम अपने पास रखो और तेल लगवाती रहो।" शुबो दनदनाता हुआ बाहर निकल गया।

खुले में आकर उसने गहरी, साफ साँस ली और उस घिन को झाड़-कर फेंक दिया, जो तम्बू में घुसते ही उसके अन्दर-बाहर मँडराने लग गयी थी।

कैम्प में कानाफूसी थी। एक दबी-दबी उत्तेजना। बेचैनी।

शुबो सीधा चौके में गया। हद्दी ने उसके निकट आकर पूछा, "मारा उसने?"

"हाथ उठाके तो देखे मुझ पर! साली इतराती है!" शुबो गरज पड़ा।

"अपनी पीठ करना इधर! शेखी मत बघारो, पुसपा बाई का कोड़ा किसी को बख्शता नहीं।" किसी ने कहा।

शुबो ने खीजकर एक फेरा लगा दिया, "लो देख लो, मेरी पीठ, अच्छी तरह देख लो!"

"होस्यार, होस्यार हो !" तभी बछराज की हांक सुनायी दी। सड़क के काम पर ले जाने से पहले वह इसी तरह जोर से कम्फ़ में आवाज लगाता था।

सब उसकी तरफ पलट पड़े। जल्दी-जल्दी।

"चलो, चलो, जल्दी करो।" बछराज कम्फवालों की टुकड़ियाँ बना रहा था।

धूप में तेजी भर चुकी थी और, धूल की तीखी गन्ध भी। लेसुए के पेड़ पर एक कौआ चीख रहा था। शुब्बो ने उसकी तरफ कंकर फेंका। वह बेतरह काँव-काँव करता हुआ कम्फ पर मँडराने लगा। बाटियों की पोटली खोलते हुए शुब्बो को 'अपना' बाजरा याद आया, वो दो बोरे...। उसने जल्दी-जल्दी निवाले ठूँसकर पोटली रख दी और चल पड़ा।

कम्फ खाली हो चुका था। सड़क का काम काफी दूर तक चला गया था। उधर से आवाजें आ रही थीं, छोटे-छोटे गुच्छों में।

"शुब्बो !"

वह मुड़ा। बदरू था। नजदीक आकर वह इधर-उधर ताकने लगा।

"इग्यारसीलाल से बचके रहना। वो...अपनी बन्दूक साफ कर रहा है। सनकी है, और अव्वल दर्जे का हरामी ! जाने क्या कर डाले—"

शुब्बो हँसा। बदरू तेजी से दूसरी तरफ निकल गया, सकपकाया हुआ।

कीकर का एक अंजर-पंजर पेड़ था। उस पर चढ़कर देखने से शुबो को निजू नाज का 'भण्डारा' साफ नजर आता था, एक छोटी टेकडी की शक्ल में।

दूर से देखकर ही शुबो ने मन में तसल्ली कर ली। पास जाकर टोह लेना ठीक नहीं, किसी को शक हो सकता है।

करारे-कँटीले कीकर पर पाँव लटकाकर बैठे-बैठे शुबो की आँखों में फिर मद-उन्माद छाने लगा। रगों में कमायचा की डबडबाती हुई लय तरंगाने लगी। टाँगें हिला-हिलाकर, पुट्ठों पर हथेलियों से ताल देता हुआ, वह एक अद्‌भुत आनन्द में रम गया।'''नाज के उन दो बोरों ने शुबो की दुनिया में हलचल खड़ी कर दी थी। वह खुश था, और एक ठेठ किरसाण की तरह यह सोचकर कि जब तक 'नाज' है, तब तक 'आज' है—अपनी खुशी को वर्तमान में पुख्ता बना रहा था। उसके स्वभाव का असली रंग लौट आया था—साहस, सिर्फ साहस! फतिमाँ-वाली ढाणी के बाशिन्दों के सामने शुबो की यही पहचान थी। लेकिन—

दुर्भिक्ष! बूंद-बूंद पानी के लिए तरसना और दाने-दाने के लिए बिलखना-भटकना। मनुष्यों और मवेशियों की लाशों के बियाबान में उतरते-डूबते हुए वे दिन और रात! मृत्यु, और मृत्यु से भी ज्यादा उसका नंगा भय। इस भय ने शुबो को एकदम निहत्था बना दिया था। वह कुछ

नहीं कर सकता था, पल-पल मरते और नष्ट होते जाने के सिवाय। अकाल की डरावनी छायाओं से घिरा हुआ शुवो निरन्तर एक अबूझ जड़ता और कायरता के कीच में धंसता चला गया। उम्मीद उससे बिछुड़ गयी थी। प्राण किसी पिलपिले पेंदे में जा टिके थे।

कम्फ में आकर शुवो अपनी उन ढाणियों-बस्तियों पर अफसोस करना भूल गया, जो अब उजाड़ हो गयी थीं। असल में, वही लोग तो अब यहाँ थे। उसकी बिरादरी के लोग। लेकिन, खोये-खोये से। चिन्ताओं में डूबे। आशंकाओं में लटके। उनके बीच शुवो ने स्वयं को सुरक्षित महसूस किया। लगा, एक नयी ढाणी बस गयी है। किन्तु उस उदास ढाणी के पास अपना कुछ नहीं था। कहने या झूठमूठ जताने-भर के लिए भी नहीं।...

माँ कहती थी, अनाज के दानों में बड़ा ताप, बड़ा उजास होता है। शुवो आज उसी ताप और उजाले की शक्ति का अनुभव कर रहा था। एक निडर निगाह उसने 'टेकड़ी' पर डाली और पेड़ पर से उतरने लगा।

तने पर लिपटते-रपटते उसने निस्चै किया कि अब कैसी भी काली-भकराली आफत-आंधी आये, वह बहादुरी से डटेगा और जमकर मुकाबला करेगा।

मुलुक ! जहाँ तक भूरी-भुरभुरी रेत है, वहाँ तक उसका मुलुक है और रहेगा। किसी की खाली-पीली भबकी से शुवो नहीं डरेगा। कोला-यत तक उसकी रिश्तेदारी है। और, जोधपुर के पास बिलाड़ा गाँम में उसके मामा रहते हैं। उन लोगों का कौन-सा मुलुक है ? कभी मोलाकात हुई तो वह उनसे जरूर पूछेगा।

शुवो हःहःहः हँसने लगा। मुझे मुलुक का डर दिखलाकर धौंस जमाना चाहते हैं, इग्यारसीलाल और पुसपा बाई ! ऐसे गये-गुजरों का तो सच में ही कोई मुलुक नहीं होता है। वो हर चीज को हड़प जाते हैं। फल को, फूल को, पत्तों को, जड़ों को और मिट्टी को भी। सब तरफ उनका जबड़ा तना हुआ है और पैने दाँत किट्-किट् कर रहे हैं।

"जै पाबूजी की !" पीछे से आवाज आयी।

"जै हो !" शुबो के मुँह से निकला। वह हकबका गया।

चेहरे पर अँगोछे का ढाठा मारे हुए एक लम्बा-तड़ंग मिनख शुबो की पीठ पर खड़ा था।

"मुझे जानते हो ?"

"नहीं।" शुबो ने सिर हिलाया।

"मैं—हरलो ! समझ गये ?"

शुबो कुछ नहीं समझ पाया, लेकिन खामोश रहा।

"तुम्हारा कम्प यहाँ से कित्ती दूर है ?"

"नजदीक ही है।"

हरलो ने धोतिये की गाँठ से एक पुड़िया निकालकर खोली। उसमें अम्मल था। · ·

"कीकर पर क्यों चढ़े थे ?"

"ऐसे ही।"

"मस्ती मार रहे थे !" हरलो मुस्कराया। उसने अफीम की टुकड़ी तोड़कर खुराक बनायी। एक खुराक शुबो की ओर आगे कर बोला, "लो, और भी मस्ती करो।"

अरसे से शुबो ने अम्मल नहीं चखा था। उसका सुवाद तक भूल गया था वह। खुराक लेकर उसने जीभ की आँटी में रख ली। फिर हरलो से पूछा, "तुम कम्प में भरती के लिए आये हो ?"

"नहीं।"

"तो फिर ?"

"मुझे कम्प में जरूरी काम है।"

हरलो कीकर से लगकर खड़ा हो गया और अपनी हथेली खुजाने लगा।

"कौन-से कम्प में ?"

शुबो के सवाल को टालते हुए हरलो ने कहा, "इग्यारतीगाँव"

आदमी है।"

"तुम्हारा कैसे ?"

"वो···धन्धे में मेरे साथ है।"

"मेरी तो ठन गयी है उससे।" शुबो भँवें सिकोड़कर बोला।

"क्यों ? क्या हुआ ?"

"यों तो कुच्छ नहीं—बस, हेकड़ी छाँट रहा था मुझ पर कि मैंने डाँट-कर चेता दिया।"

"मजाक मत करो।"

"इसमें मजाक क्या ?"

"इग्यारसीलाल को डपटने का हौसला तुम नहीं कर सकते।"

"ऐसा दान्ना है क्या वो ? खा जायेगा मुझे ?"

"हाँ, खा जायेगा।" हरलो ने सिर हिलाया, "इधर···मेरी भी खटपट चल रही है उससे। अच्छा, यह बताओ, अनाज-वनाज है आज-कल कम्फ में ?"

शुबो चौंकते-चौंकते थिर हो गया। उसने हरलो को गौर से देखा। सन्देह हुआ। बोला, "मुझे मालूम नहीं।"

"छुपा रहे हो मुझसे ?"

"नहीं, छुपाना क्या ?"

"देखो, पछताओगे।"

"क्यों ?"

"मुझसे झूठ बोलनेवाले को सजा मिलती है।"

शुबो तन गया, "कौन देता है सजा ? तुम ?"

"हाँ, मैं।" हरलो ने कमरपेटी खोलकर कटार निकाल ली। उस आँखों में लड़ाकूपन चमक उठा।

"यह चाकू-छुरी रहने दो।···मैंने भी पट्टा खेला है।"

"तो एक बार मेरे साथ भी खेल लो।"

"छोड़ो। मुझे अभी कम्फ में लौटना है।"

"ऐसे कैसे लौट जाओगे ?" हरलो रास्ता रोककर आगे पड़ गया, "तुम्हें मुझसे पट्टा खेलना पड़ेगा।"

"अकड़ो मत।"

"चुप बे, हरामी !"

"गाली देते हो ?"

"देता हूँ। झाँट उखाड़ लो मेरी।"

सामने खुली कटार थी। हरलो था। हवा के झपाटे थे। शुबो ने महसूस किया, यही वह क्षण है—जुल्म और जबरदस्ती को कुचल देने का क्षण। उसने तेजी से खीप की लचीली, बेंत जैसी तांडियाँ तोड़कर मुट्ठी में भर ली, "रुको, तुम्हारे साथ पट्टा खेलना ही होगा।"

हरलो कटखने ढंग से मुस्कराया, "खीप से खेलोगे ?"

"हाँ, पट्टा कहाँ से आयेगा अब ?"

खींप की ताडियों को गूँथकर शुबो ने एक जोरदार सण्टा बना लिया। हरलो गुम्म-सुम्म, उसे अपनी नुकीली नजरों से छीलने की ऐंठ दरसाता रहा।

"तैयार हो ?" शुबो ने पूछा।

"हाँ, वार करो ?" कटार पर हरलो की पकड़ सख्त पड़ गयी।

"लो !" शुबो ने सड़ाक् से हरलो के चेहरे और गर्दन को नापता हुआ सण्टा जड़ दिया।

हरलो उछला, पीछे हटा। फिर उसने निशाना साधकर छलाँग लगायी और शुबो की बाँह पर कटार से सीधा वार किया। शुबो बच निकला, किन्तु उसका सण्टा सड़-सड़ाक्-सड़-सटाक् हवा में गरजता रहा। उसने हरलो की पीठ, छाती और पिण्डलियों को धुन डाला। हरलो चकरा गया। एकदम उसे लगा कि खीप के सण्टे के सामने उसकी कटार बेकार साबित हो गयी है। सण्टा करीब दो-हाथ लम्बा था और इतनी तेजी

से लहरा था कि हरलो को कटार चलाने का अवसर ही नहीं दे रहा था।

तभी शुबो ने हरलो के चेहरे पर हमला किया। माथे और कनपटी पर लहू चमकाता हुआ सण्टा शून्य में सनसना गया। हरलो ने एक बांह से मुंह ढंक लिया। तिलमिलाते हुए उसने झाग उगला, "सूअर की औलाद, अब तो मैं तुम्हें जान से मार डालूंगा। तुमने मेरी आंख फोड़ डाली है।"

"मैंने तो पहले ही मना किया था।" शुबो हांफता हुआ बोला।

"ऐसी की तैसी।" आस्तीन से भौंह का खून पोंछकर हरलो एका-एक लपका, चीते की तरह। दांत किटकिटाता और हुमकार भरता हुआ। शुबो के मण्टे को उसने बीच से काट डाला। फिर कटार घुमा-कर आगे बढ़ा, किन्तु शुबो बचाव के लिए बैठ गया। बैठे-बैठे ही उसने हरलो के घुटनों पर टंगड़ी लगा दी। बिल्कुल अंटाचित्त, हरलो उलझ-कर गिर पड़ा। कटार पर मुट्ठी की पकड़ ढीली हुई। और, उसी समय शुबो ने उसकी कलाई को पांव से दबाकर चींथ दिया। हरलो के होंठों से चीख निकल गयी। कटार छूटकर अलग जा पड़ी। हरलो उसे उठाने के लिए मुड़ा, किन्तु तभी शुबो ने एक तगड़ी ठोकर उसकी ठुड्डी पर जड़ दी, जबड़े बज उठे और वह रेत में लुढ़क गया।

"मुझे बखस दो।" हरलो पीड़ा-भरे स्वर में गिड़गिड़ाया।

शुबो उसकी पीठ पर सवार था, तेज-तेज सांसों में हचमचाता हुआ। हरलो के ढाठे के कपड़े को झकझोरते हुए उसने पूछा, "तुम क्या धन्धा करते हो?"

"मैं हरलो हूं।"

"यह तो मुझे मालूम है।"

"हरलो डाकू का नाम तुमने नहीं सुना?"

"तुम डाका डालते हो?"

"आंहां-हां, जित्ते कम्फ हैं यहां, सब घबराते हैं मुझसे...मौका हाथ लगते ही मैं उनका नाज-पात लूट लेता हूं।"

"फिर तो टोली होगी तुम्हारी ?"

"हां, ग्यारह जने हैं हम ।"

"ऊंट भी हैं ?"

"सबके पास ।"

"इग्यारसीलाल से तुम्हारा क्या नाता है ?"

"वो ब्योपारी है, लेकिन बहोत खत्तरनाक ! उसकी भी टोली है ।"

"कम्फ के नाज का ब्योपार करता है वो ?"

"वो तो पुसपा बाई करती है, इग्यारसीलाल सिरफ हिस्सेदार है । लेकिन उसका अपना धन्धा है—इलायची, लौंग, सुपारी और सोने-चांदी का । हिंदोस्तान में कई जगह से माल लेकर उसके लोग यहां आते हैं । हमारे साथ सौदा तय होता है और फिर हम उसे परोस्तान में छाछरो से आगे तक पहुंचा देते हैं ।"

"अच्छा !" शुवो हैरत में पड़ गया ।

"लेकिन—इधर इग्यारसीलाल ने हमारे साथ हिसाब-किताब बन्द कर दिया है । कोई और पारटी पकड़ ली है उसने । लालची कुत्ता है, स्साला !"

"उस पारटी के बारे के बता सकते हो कुछ ?"

"उम्मरकोट की है ।"

"तुमसे ज्यादा जोरावर है ?"

"हां । उनके पास चालीस ऊंट और इत्ते ही सवार हैं ।"

शुवो की आंखों के आगे, रात का चोरों की लदाईवाला दृश्य घूम गया ।

"तुम हमारे कम्फ को तो नहीं लूटोगे ?"

हरलो चुप रहा ।

"उस पर आंख लगायी तो बहोत बुरा हाल होगा, समझ लेना ।"

"तुम हमारे संग क्यों नहीं आ जाते हो ?" हरलो ने धीमे-से कहा, "मैं तुम्हारे लिए ऊंट का इन्तजाम कर दूंगा ।"

शुवो ने हरलो को छोड़ दिया। किन्तु उसने लपककर कटार उठा ली, धार को पोंछा और धोतिये की आंट में घुसेड़ लिया।

"तुम काफी तगड़े हो। कम्फ में तुम्हारा क्या काम ! वहाँ रहके तो सड़ जाओगे।" हरलो उठा और मुंह में भर गयी रेत को निकालने के लिए थू-थू करता रहा।

"कम्फ में मैं अपने लोगों के बीच हूँ।"

"सब दो कौड़ी के हैं।···मेरे साथ पटेगी तुम्हारी।"

"नहीं पटेगी।"

"मसखरी खूब कर लेते हो तुम ! अच्छा, कटार मुझे दे दो।"

"एक हथियार तो मेरे पास भी रहना ही चाहिए।"

"मेरी टोली में आ जाओगे तो हथियारों की कमी नहीं रहेगी। कटार वापस कर दो।"

"नहीं।"

"यह तो ज्यादती है।"

"इस ज्यादती के लिए तुम खुद ही जिम्मेदार हो।"

"अब मिलाप कर लो।"

शुवो ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। पांव-पंजों से रेत उछालता हुआ वह चल पड़ा। थोड़ी दूर जाकर वह मुड़ा।

"हो-हरलो, हमारे कम्फ में कोई खुरापात रचने की जुगत मत बिठाना···सुन लो, ऐसी बेभाव की मार पड़ेगी कि सारी राग-जकड़ी भूल जाओगे। मैं तुम्हें सचेत किये देता हूँ।"

हरलो ने शुवो को कोई जवाब नहीं दिया। अँगोछे का ढाठा दुबारा लगाकर वह धीमे कदमों से टीवों में ओझल हो गया।

कम्फ से लौटकर शुवो ने यों ही एक लम्बा चक्कर लगाया, फिर पानी के कोठे पर रुककर पानी पीने लगा। करारी पियास लगी थी। पानी की ठंडी धार अन्दर उतर गयी तो सारा कुछ शीतल-शीतल हो गया।

कोठे की आड़ में छाँह बन गयी थी। शुवो वहीं लेट गया। नींद

के जाले घेरने लगे। पलकों पर सैंकड़ो धब्बे जमा होकर नीली धुन्ध में खो गये।

"घुबो ! सो रहे हो क्या ?"

एक गेरुई चट्टान को फिसलपट्टी बनाकर मौज से फिसलते हुए घुबो ने बदरू की आवाज सुनी।

झटके-से आंख खुली और एकाएक उसके कुछ पल्ले न पड़ा।

शाम की धूप बदरू मियाँ की दाढ़ी में फँसी हुई थी। सूखी पत्तल जैसा उसका चेहरा, सावधानी से अपनी झुर्रियों और सिकुड़नों को सँभाले हुए था। आँखों की पुतलियों पर मोम की-सी पर्त पड़ी हुई थी।

"मैंने तुम्हें जगा दिया।"

बदरू ने घुबो की आँखों में लाल डोरियाँ देखकर अफसोस और संकोच से कहा।

"आज तो खूब नींद आयी।" घुबो मुस्कराया।

"इग्यारसीलाल याद कर रहा है तुम्हें।"

"क्यों ?"

"पता नहीं।"

"तम्बू में बुलाकर गोली मारेगा ?"

"बन्दूक तो उसने फिर खूँटी पर टाँग दी है।"

"अच्छा ! खैर, चलो।"

बेमन से स्वयं को धकेलता हुआ घुबो तम्बू तक गया। इग्यारसीलाल दुआरे पर ही खड़ा था। घुबो को देखकर वह अजीब ढंग से हिलने लगा, मानो बगलों में बर्र घुस गये हों।

"अन्दर आओ।" उसने कहा और फूली-फूली आँखों को मिच-मिच करने लगा।

घुबो उसके पीछे-पीछे भीतर गया।

साफ-सुथरा तम्बू। पुसपा बाई 'वाने' से अलग और इत्तर की भीनी, मोहक गन्ध में सराबोर। शुबो को मूढ़े पर बैठने के लिए कहकर इग्यारसीलाल गद्दे पर पसर गया। इस गद्दे, इस विस्तर के बारे में सुवटी ने उसे बतलाया था। लेटे-लेटे करवट बदलो तो एकदम उछलता है—ऐसा लगता है, मानो पवन-हिंडोला !

"कोई खास बात नही थी।" इग्यारसीलाल झेंपने लगा और फिर उस झेंप को परगट न होने देने की जिद में विचित्र-सा हो गया, "मैंने सोचा, तुम्हारे साथ सुलह कर ली जाये।"

"तुमसे मेरी कोई लाग नहीं।"

"यही तो मैं कहता हूं। लेकिन···तुम पुसपा बाई के जंजाल में मत पड़ जाना।"

"मुझे क्या लेना-देना है !"

"फिर भी···मैं तुम्हें होस्यार कर देना ठीक समझता हूं। अपने मतलब के लिए वो लोगों को गांठती रहती है, लेकिन बदले में देती कुछ नही।"

"तुम्हें तो ऐसा नहीं कहना चाहिए।"

"क्यों नहीं ? मैंने ही सबसे ज्यादा झेला है।"

"तुम लोगों की माया तुम जानो।"

"मैंने हरलो के साथ तुम्हारी लड़ाई देखी थी।"

"ओह !" शुबो को ताज्जुब हुआ, "तुम उधर क्यों गये थे ?"

"तुम्हें खत्तम करने के लिए।"

"बन्दूक लेकर ?" शुबो ने ताना लगाया।

"हां। मैं बहुत गुस्से में था। ··तुम्हें उस तरफ जाते देखकर मैंने पीछा किया।"

"फिर···छोड़ क्यों दिया मुझे ?"

"मैंने देखा कि तुम हरलो के साथ उलझे हुए हो। मुझे विसवास था कि हरलो तुम्हें सूंत डालेगा, मसल देगा कीड़े की तरह, लेकिन

उल्टा हो गया।"

"तुम्हें बुरा लगा ?"

"नहीं। मेरे मन का भाव बदल गया।"'हरलो बहोत गन्दा है, कमीना ! उसे तुमने खूब सबक सिखाया।"

"लड़ने की मेरी इच्छा नहीं थी।" एकाएक शुबो निस्तेज होकर ऊबने लगा।

"तुम बल-बूते वाले हो और निडर भी। कम्प की पहरेदारी करो और आनन्द से रहो। हमारा-तुम्हारा कोई झगड़ा नहीं।"

हवा ने तम्बू को जोर से फड़फड़ाया। एक रहस्यमयी हुंकार-सी हुई। शुबो ने एक लम्बी साँस ली, "मुझे तो सब कुछ अजीब लग रहा है। एक जिन्दगी तो'''आदमी खुद जीता है, अपने आप, अपने ढंग से। लेकिन—उसी जिन्दगी को, कुछ घटनाएँ दूसरे ढंग से जीने लगती हैं और वही ठीक मान ली जाती है।'''"

सड़क का काम अब खत्म होने को आया था। सारे कम्फ सड़क की रेख के किनारे-किनारे लगाये गये थे और उन्होंने अपने-अपने हिस्से को पार लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

लूओं की सनसनी इन दिनों बढ़ गयी थी। जब्बर झफोड़े चल रहे थे। बालू भड़भूंजे के भाड़ की तरह भभकती रहती थी। बिना पगरखी के जमीन पर पाँव टेकना कठिन था। रेत के ढूह रात में भी तपते रहते थे।

राज का असवार पुसपा बाई के पास आया, पुरजी पर नयी 'इसकीम' लेकर। तल्लाब की खुदाई के लिए।

पानी की उन गाँव-ढाणियों में बारहों महीने किल्लत रहती थी। कहीं-कहीं तो आठ-नौ बस्तियों के बीच एक ही कुआं या जोहड़ था। बूंद-बूंद किफायत से बरतकर किसी तरह काम चलाया जाता था। इस-लिए, इस बार सरकार ने फैसला किया कि जब तक अकाल है, तल्लाब बनवा डालो लोगों से। बरखा होगी तो सब भर जायेंगे और पानी का संकट मिटेगा। पक्के तल्लाब में दो-ढाई साल तक भी पानी टिक जाता था।

पुसपा बाई ने 'इसकीम' पर हां भर दी और असवार लौट गया। लेकिन—उसी रोज साँझ पड़े समचार आया कि छह कोस पर का एक कम्फ लूट लिया, हरलो की टोली ने। सुना गया कि एक आदमी ने सामना करने की कोशिश की थी, उसे फूस के ढेर पर डालकर जिन्दा जला दिया गया।

इस खब्दर से चौतरफ की हवा में भय भर गया। पुसपा बाई अपने तम्बू में ऐसे उछलने लगी, मानो सारे बदन मे लाल चींटियाँ चिपट गयी हों और जमीन में हर जगह साँपों के बिल नजर आने लगे हों। तुरन्त हालत पर विचार करने के लिए मण्डली जमा हुई। गुबो पर कम्फ की चौकसी और देखभाल का जिम्मा था, अत: उसे भी बुलाया गया। इग्यारसीलाल और बछराज मौजूद थे ही।

"क्या करना चाहिए ?" पुसपा बाई की आवाज में आज दारू की नहीं, स्यापे और सन्नाटे की मारक गन्ध थी।

"भैभीत होने से तो कुछ होगा नहीं, सोच लो !" गुबो ने ठक् से अपनी लाठी नीचे रख दी। यह लाठी हाल ही में हड्डी ने बनाकर दी थी। फिर ज्यानकी काकी ने उस पर ताम्बे के कड़े तार कस दिये थे।

"उपाय करना पड़ेगा।" इग्यारसीलाल ने दुबके-दुबके कहा। वह सहमा हुआ था।

"कोई बतला रहा था कि आजकल वो···इधर ही चक्कर लगा रहा है।" पुसपा बाई की चिन्ता फैलने लगी, "मेरा खयाल है, उम्मरकोट-वालों के कुछ आदमी हम यहाँ बुला लें। वे हमारे साथ रहेंगे और सब सँभाल लेंगे।"

"इसकी कोई जरूरत नहीं।" बछराज ने टोका। उसका स्वर हमेशा की तरह नि:संग और उचाट था, "हमारे कम्फ मे जान पर खेल जानेवाले लोग हैं। हरलो के छक्के छुड़ा देंगे वे।"

"सच्ची बात है।" गुबो ने सराहना से बछराज की तरफ देखा।

"थाना भी आजकल खाली पड़ा है।" पुसपा बाई ने उसी तरह मुरझाये हुए कहा, "नया थानेदार आयेगा तो कुछ बन्दोबस्त होगा।"

"फिर भी, वहाँ इत्तला भिजवा देना ठीक रहेगा।" इग्यारसीलाल डर से उबरने की चेष्टा कर रहा था।

"हां-हां, मैं भिजवा दूंगी। लेकिन—जितने कैम्प हैं, सब जगह यही हालत है।"

"दो-एक रोज में और अनाज आने की भी गुंजायश है।" इग्यारसीलाल का सुर ढलककर मन्द हो गया।

"भण्डारे की रखवाली ठीक से करनी होगी।" बछराज देर से जरदे-चूने की चुटकी बना रहा था और इतनी बेपरवाई से भरा था कि इग्यारसीलाल को उसके हाव-भाव अखर गये।

"रखवाली किससे?" शुबो ने सिर ऊपर किया, "हरलो से या उम्मरकोटवालों से?"

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। बछराज ने चुटकी मुंह में दबा ली। थोड़ी देर बाद इग्यारसीलाल बोला, "शुबो, तुम चाहो तो हिस्से-दार बन सकते हो।"

"मुझे कोई उजर नहीं।" पुसपा बाई ने तिरछे-तिरछे उसे घूरकर देखा।

"हिस्सा-विस्सा नहीं चाहिए मुझे। और, मैं होता कौन हूँ हिस्सा लेने वाला?"

"तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि यहाँ से अनाज उम्मरकोट जाता है।" पुसपा बाई ने नरमाई से डोर पकड़ी।

"इसमें खुश होने के लिए क्या है?" शुबो भड़क उठा।

"तुम उम्मरकोट के हो—"

"तो—इससे क्या हुआ? उम्मरकोट में हीरे बरसते हैं?"

"वो पाकिस्तान में है—तुम्हारे मुल्क में।"

"फालतू का लफड़ा खड़ा मत करो, पुसपा बाई! किसी माँ के यार ने पखेस्तान बना दिया, किसी ने ईंदस्तान। सिरफिरे ससाले। उनके बनाने से होता क्या है? मुझे तो उन्होंने नहीं बनाया? तुम्हें भी नहीं। सो, हमें मुलुकों में बाँटकर अलग करनेवाले वो घसियारे···कौन होते हैं?"

"यह बात तुम्हारी समझ में नहीं आयेगी।"

"कैसे नहीं आयेगी, कोई समझाये तो ! फुंदनी के घिस्सू बीच में फौजें डालके बैठ गये हैं और राजा बन गये हैं, बस। वखत आने दो, उन्हें भी इसका फल भोगना पड़ेगा।'

शुबो उठ गया। तम्बू के दुआर पर पलटकर उसने चेताया, "एक बात कानों का मैल निकाल के सुन लो। इस बार, कम्प का अनाज उम्मरे-सुमरकोट गया तो कत्तल हो जायेगा।"

"धीरे बोलो।" इग्यारसीलाल ने भिंचे कण्ठ में घुड़कने की कोशिश की, "तुम तो बेमतलब बमकने लगते हो।"

"बमकें नहीं तो क्या करे आदमी, बताओ ! कैसा जाल-जंजाल है ससुरा···कम्प में भरती होंगे, कुल तीन बीसी लोग, लेकिन कागदों में चिपका रखे हैं दो सौ से ज्यादा। मुझे मालूम नहीं है क्या ? अनाज तो बचेगा ही, बस, उसका सौदा कर रकम ऐंठ ली जाती है। यह फरजी-धरजी कारेवाई अच्छी नहीं है, ध्यान कर लो।"

लाठी कांख में दबाये वह बाहर चला गया।

· · ·

गरमी की बेतरह मार से कम्प के लोग एकदम टूटे-भटके पड़े थे और इधर-उधर सिर डाले समय काट रहे थे।

एक छपरे में औरतों का हो-हल्ला हो रहा था। आपस में धसमस-धकेल करती हुई वे अन्दर-बाहर भाग रही थीं और रह-रहकर ओढ़नी से पसीना पोंछ रही थीं।

छपरे के भीतर किसी स्त्री की चीख उभरी और समूचे माहौल को छीलती हुई लोप हो गयी। तब, सिसकियाँ उमड़ पड़ीं।

शुबो ने घबराकर उधर देखा और फिर दौड़ पड़ा।

"कहाँ जा रहे हो ?" ज्यानकी काकी ने बीच में ही टोक दिया।

"वो···कौन चीख रही है ?"

"जमाल की बीनणी।"

"बीमार है क्या ? कैसी तकलीफ···"

"बच्चा होनेवाला है उसे।···तुम मरदो में जाकर बैठो। मैं उसी के पास जा रही हूँ।"

ज्यानकी काकी तेजी से उस छपरे की ओर चली गयी।

आतंक और पसीने से लथपथ जमाल एक दरख्त के तले पड़ा था। शुबो ने उसकी पीठ पर बांह रखी तो वह बावले-सा एकटक देखने लगा। एकाध बार उसने बोलने का यत्न किया, पर हकलाकर रह गया और ठुड्डी के बाल मुट्ठी में भरकर खींचने लगा।

"घबराओ मत, जमाल !" शुबो को अपना स्वर अटपटा लगा, "अब तो तुम बाप बननेवाले हो।"

जमाल ने उसके कन्धे पर गर्दन डाल दी।

स्त्री की चीख लम्बी-लम्बी कराहटों में बदल गयी थी। शुबो की दीठ उसी के छपरे के आसपास भटक रही थी। गला सूखकर तड़कने लगा था, पर वह जमाल की गर्दन में हाथ डाले हुए था और इस तरह अपनी बेचैनी को छुपाने का प्रयास कर रहा था।

माथे पर ओढ़नी का पल्लू रगड़ती हुई फुलकी छपरे से बाहर निकली। उसने आजू-बाजू किसी को खोजती हुई निगाह डाली, फिर जमाल की तरफ दौड़ पड़ी।

"उच्छव करो, उच्छव !" वह चिल्लायी, "लड़का हुआ है।"

उसने जमाल को घसीटकर खड़ा किया और चकरी की तरह उसके चौगिर्द घूमने लगी। फिर फुलकी ने उसकी पीठ पर कई धौल जड़ दिये और भाग खड़ी हुई।

जमाल हँसने लगा, लेकिन शर्म में गड़ा-गड़ा।

फुलकी ने कांसी की थाली उठायी और उसे काठ की डोई से बजाने

लगी। उमस और ताप के वातावरण में उसकी झनझनाहट, उसकी लहर-लहर लहराती हुई गूंज बहुत ठण्डी, बहुत भली लगी।

थाली के इस तरह बजने का अरथ साफ था।

"किसके लड़का हुआ है?" बछराज ने पूछा। गज्जी ने पूछा। हुट्टी ने पूछा। बदरू ने पूछा। सिराम ने पूछा।

फूलकी काँसी की झनझनाती हुई थाली को चारों ओर घुमाकर, कभी हवा में उछालकर, कभी सिर पर ओढ़कर बार-बार चिल्लाती रही, "जमाल के छोरा हुआ है भई, छोरा। खूब गोरा। जैसे दूध का डोरा।"

गज्जी ने जमाल को छेड़ा, "अहे-अहे, छोरा हुआ है जमाल के। अब वो लंगूर का नाच दिखलायेगा नाचकर। देखना, भई! सब लोग देखना। इसके छोरे को भी बुला लो। आखिर वो भी तो देखे अपने बाप का करतब।"

"और, छोरे की अम्मा को भी!" कहकर सिराम ने कुकड़ूकूँ की बाँग लगायी और उस बाँग के साथ ही सब ओर घनी-घनी हँसी फैल-फूट गयी।

"जा बालणजोगे, नासकूटे! हर वखत तंग करता रहता है।" फूलकी ने सिराम पर नाराजगी परगट की। फिर शुबो से बोली, "गोरमेन्ट रसाब, एक अरज सुनो मेरी।"

"मैं गोरमेन्ट नहीं हूँ।" शुबो को यह सम्बोधन नहीं भाया।

"न हो तो न सही। लेकिन इतना कहे देती हूँ कि आज कम्प में गुड़ बँटेगा, गुड़। बछराज से बात कर लो, हाँ।"

"हाँ-हाँ, गुड़ बँटेगा और अभी बँटेगा।" बछराज ने जवाब दिया और चाबियों का गुच्छा हिलाता हुआ भण्डारे की तरफ चल दिया।

पुसपा बाई ने बदरू से पूछा, "यह क्या उतपात मचा हुआ है?"

शुबो ने सुन लिया। हँसकर बोला, "यह सारा उपद्दर जमाल के छोरे ने किया है, पुसपा बाई!"

"अहाँ, जमाल तो सीधा-सादा है वेचारा, उसकी बीनणी ने ही यह कारस्तानी की है।" औरतों के झुण्ड में से गोदारी ने छींटा कस दिया।

पुसपा बाई ने नथुने फड़काये, भौंहें हिलायीं, कूल्हों पर हाथ रखे, "कुछ जलने की-सी बू आ रही है। अरे बदरू, निखट्टू ! देखना, किसी ने नम्बू में तो बीड़ी का टोटा नहीं फेंक दिया। अव्वल दर्जे के उजड्ड, गँवार भर गये हैं यहाँ !"

शाम का झुटपुटा। आसमान से झरती हुई रेत। और, पच्छिम में बल खाते हुए किरणों के गोहरे और साँप। एक साँप लम्बा होने लगा, तो चार-पांच हाथ से भी ज्यादा बड़ा हो गया, फिर बीच में से टूट गया और स्याह धुएँ में खो गया।

आकाश पर से निगाहें हटाकर शुबो ने नजदीक देखा तो, गोदारी। एक अलाव में खदबदाती हुई हँडिया। आग की लपलपाती हुई आँच। गोदारी हँडिया में कड़छी हिला रही थी।

"क्या पक रहा है ?" शुबो ने हँडिया को विस्मय से देखा।

"दलिया।...आज गुड़ मिलेगा न, मीठा दलिया बनेगा।"

"लपसीवाला या राबड़ीवाला ?"

"राबड़ीवाला।"

"बाटियाँ तोड़ते-तोड़ते दाँत घिस गये हैं, सच्ची !"

"अपना आटा दे देना। तुम्हारे लिए भी बना दूंगी।"

गोदारी—हट्टी की लुगाई थी। यानी, बाशिया की माँ। उसके बारे में मशहूर था कि वह औरतों पर झाड़-फूंक करती है। शुबो ने छेड़ दिया, "जरा पुसपा बाई पर अपना मन्तर मारो न, गोदारी !"

"दिल्लगी मत करो।"

"शर्त लगा लो, उस पर जरूर किसी भूतनी की छाया है।"

"वो तो खुद ही भूतनी है, उसे किसी की छाया क्या चढ़ेगी।"

गोदारी हँसने लगी।

एक लकड़ी चिटककर दूर जा पड़ी। शुबो ने उसे उठाकर फिर अलाव में डाल दिया।

वछराज का गुड़ बाँटना चालू हो गया था। पत्थर से भेलियाँ तोड़-तोड़कर उसने बराबर के डले बना लिये थे और अब झोलियाँ भर रहा था।

"सबको, एक-एक डला। ज्यास्ती नहीं।"

"मैं तो दो डले लूँगी।" फूलकी मचल पड़ी।

"नहीं, पाँती में दुभाँत नहीं।" वछराज ने सिर हिलाया।

"इसे मेरे हिस्से का डला दे देना।" जमाल बोला।

"वाह, जमाल, वाह! वाह, दाता!" सब ठहाके लगाने लगे।

जमाल झेंप गया और उसका सिर अपने ही अन्दर धँसने लगा।

"तुम अपना डला क्यों दोगे, फूलकी को?" वछराज ने दो डले एक साथ लेकर फूलकी के माथे पर टनकाये। फिर उन्हें उसकी झोली में डाल दिया। वह बछेड़ी की तरह मस्त मुस्कराती, कूदती-फाँदती चली गयी।

बड़ों को निपटाने के बाद वछराज ने बच्चों को बुलाया और ऐलान किया, "तुम लोगों को दो-दो डले!" फिर राज़-भरे ढँग से आवाज नीची कर बोला, "और—जो अपने बाप को गाली देकर सुनायेगा, उसे तीन डले।"

बच्चे हँस पड़े और फटाफट उनके होठों पर अपने पिताओं के नाम फड़कने लगे।

उसी रात, शुबो जब गोदारी का बनाया हुआ मीठा दलिया डाटकर कम्प का चक्कर मार रहा था तो उसे ऊँट की बिलबिलाहट सुनायी दी।

सिरफ एक बार। पहले तो लगा कि भ्रम है, लेकिन फिर कानों की असावधानी पर विश्वास नहीं हुआ। फाटक की भींत पर खड़ा होकर वह दूर-दूर तक निगाहें फेंटने लगा।

टीलों के पार टीले थे। सनसनीखेज अँधेरा था। गुर्राती हुई हवा थी।

एक आकृति कम्फ की बाड़ लाँघकर बाहर निकली और तेजी से दक्खिन दिशा में गुम हो गयी।

शुबो भीत से उतरकर उस ओर बढ़ा, लेकिन आगे थूहर-सरकण्डे का घुप्पाघुप्प वन था। अन्धकार में आँखें फाड़-फाड़कर देखते रहने के बावजूद उसे कुछ नजर नहीं आया।

आशंका और ऊभचूभ से भरा वह लौट आया।

कम्फ सोने जा रहा था। स्त्रियाँ बच्चों को थपक रही थीं। उन्हें झींडिये और लक्खी बिणजारे की कहानियाँ सुना रही थीं। मरद हुक्कों की नाल, तम्बाकू के ताव और बातों के उलझाव में मशगूल थे।

शुबो ने गज्जी का हाथ थामा। अलग ले जाकर कहा, "तुम भण्डारे जाकर सो जाओ।"

"खास बात है क्या ?"

"हाँ। सुनो, एकदम्म घोड़े मत बेच देना। कोई आहट हो तो ध्यान रखना।"

फिर उसने ज्यानकी काकी से पूछा, "सुवटी कहाँ है ?"

"होगी यहीं कहीं, और क्या।"

"मुझे तो नजर नहीं आयी।"

"इग्यारसीलाल के तम्बू में होगी।" फूलकी ने अनुमान लगाया।

"इस टेम ?"

"हाँ, कभी-कभी उस मरे को जल्दी लग जाती है।"

शुबो की नसें गरमा गयी। आज इग्यारसीलाल से भी निपट लेना चाहिए। कम्प की औरतों की तो अब कोई इज्जत-आबरू ही नहीं रही। तुरन्त उसे यह भी ख्याल आया कि सुवटी तो उसके पास अपनी मरजी से जाती है। हाँ, सुवटी को रोकना काफी कठिन होगा, लेकिन वह उसे समझायेगा।

फिर भी शुबो लाठी ठकठकाता हुआ इग्यारसीलाल के तम्बू के पास जाकर ठिठक गया।

तम्बू में अन्धकार था। चुप्पी थी, गाढ़ी। तनिक भी आवाज नहीं।

शुबो ने खूंटे पर लाठी पटकी। एक बार, दो बार, तीन बार।

"कौन है?"

इग्यारसीलाल का आलस में उलझा हुआ स्वर भर्राया।

"मैं हूँ—शुबो।"

"बोलो।"

"अन्दर और कौन है?"

"क्यों?" इग्यारसीलाल झुंझला उठा।

"जानना जरूरी है।"

"क्या बकते हो!"

"यो भन्नाओ मत।"

"तुम्हें क्या मतलब?"

"मतलब है।" सुवटी है क्या?"

"नहीं।"

"सच बोल रहे हो?"

"झूठ क्यों कहूँगा? डरता हूँ किसी से?"

"एक बार और जाँच कर लो।"

"तलाशी लोगे क्या? ले लो। भरोसा न हो तो खुद अन्दर आकर देख लो।"

शुबो सोच में गुंथा-गुंथा वहाँ से हट गया।

बछराज ने अपनी खाट तम्बू के बाहर डाल रखी थी। पाटी पर उसका सिर टेढ़ा होकर लटक रहा था। तभी पाये चरमराये। आह भरते हुए उसने करवट बदली।

"तब्बैत ठीक नहीं है क्या ?"

'नहीं, बस—ऐसे ही···"

शुबो को बछराज की आवाज बहुत कमजोर और सूखी लगी।

उसने पास जाकर हाथ छुआ। वह बेतरह तप रहा था।

'अहे-रे, तुम्हें तो बोक्खार है।"

"अच्छा !" बछराज ने ऐसे कहा, मानो उसे विश्वास न आ रहा हो।

"कोई दवा-उवा ली है ?"

"ले लूंगा।"

"शाम तक तो ठीक थे तुम।"

"हाँ। थोड़ी ही देर पहले माथे में दर्द उठा।"

"चा-पत्ती है तुम्हारे पास ?"

"होगी, किसी डिब्बे में।"

"ज्यानकी काकी को बोल देता हूं। वह ढूंढकर बना देगी।"

"नही, इच्छा नही।"

"चा से आराम मिलेगा, सच्ची।"

"सुब्बै तक वैसे ही हालत संभल जायेगी।" बछराज ने उसांस भरी, "यह जो तन है, कभी-कभी मन से खिलवाड़ करता है।"

"तुम सदा इसी तरह की बातें करते हो।"

"गलत कह रहा हूं क्या ? शरीर बड़ा शैतान होता है। जब वह देखता है कि आदमी मन के काबू में होता जा रहा है, तो तुरन्त कोई-न-कोई गड़बड़ी पैदा कर देता है। तब झख मारकर सिरफ शरीर के बारे में ही सोचना पड़ता है।"

"तुमने ऊंट की बोली सुनी थी, कुछ देर पहले ?"

"सुनी तो थी। लेकिन, बहुत धीमे। यहाँ पड़े-पड़े यों ही उधर ध्यान चला गया।"

"मैं तो सोच रहा था कि वह मेरा वहम था।"

"ऊँट की बिलबिलाहट हमें धोखा कैसे दे सकती है? उसे तो पहचान ही लेंगे।"

"मैं पहरे पर हूँ। तकलीफ बढ़े और जरूरत पड़े तो आवाज दे देना मुझे।"

"तकलीफ बढ़कर जायेगी कहाँ? रहेगी तो शरीर के अन्दर ही।" बछराज फीकी-सी हँसी हँसा।

"पानी लाकर दूँ?"

"नहीं। खाट के नीचे लोटड़ी भरकर रख ली है।"

बछराज की बीमारी बढ़ती चली गयी। आठों पहर बुखार बना रहता था। शरीर निचुड़ने लगा। आंखों की चमक मुरझा गयी। हाथ-पाँव बेसकत हो गये। दिन-भर वह तम्बू में पड़ा रहता था और जाने क्या-क्या बड़बड़ करता जाता था। वैसे तो सड़क का ठेका उसी के नाम था और इसीलिए वह ठेकेदार कहलाता था, लेकिन हुक्म चलता था पुसपा बाई का। बछराज का ज्वर न टूटते देखकर पुसपा बाई ने एक रोज सिराम को बुलाया और सड़क के काम की देखभाल उसके सपुरद कर दी। गज्जी और जमाल दिन में भण्डारे की निगरानी रखते थे। रात की पहरेदारी शुबो और हद्दी के पास थी। जब गप्पें लड़ाने का मन होता था तो बदरू भी मालकिन की आंख बचाकर उनसे आ मिलता था।

अकाल का असर घोर होने लगा था। ठट्ठ के ठट्ठ लोग मारे-मारे भटक रहे थे और उन्हें किसी कम्फ में भरती नहीं मिलती थी। तल्लाव की इसकीम मिल जाने से पुसपा बाई के पर लग गये थे और वह बहुत खुश नजर आती थी। शुबो ने उसकी इस खुशी का फायदा उठाते हुए कुछ छूट ले ली और जब-तब कम्फ में नये लोगों को लेने लगा। कम्फ बड़ा होता गया। पुसपा बाई को पता चला तो वह थोड़ी भनभनायी, फिर कुछ सोचकर मौन साध गयी।

रात भर की नींद लेकर शुबो अपने 'खोखल' में बेधड़क सो रहा था।

तेज-तेज खर्राटों से झाड़ियों में हलचल पैदा करता हुआ।

सुवटी गुपचुप अन्दर घुसी। तिनका लेकर उसकी पगथलियों में चलाया। गुदगुदी मची तो शुबो कुनमुनाया।

"ओहो-हो, तुम्हारे खर्राटे तो तोप के गोलों को भी मात दे रहे हैं।"

"जा-जा, तंग मत कर। सोने दे।"

"इत्ता सो-सोके भैंसे हो गये हो तुम।"

"सारी रात जागना पड़ता है।"

"हाँ-हाँ, ज्यादा रौब मत झाड़ो।"

"सड़क से छुट्टी हो गयी तेरी!"

"नहीं।"

"तो आँख बचाके आयी है, कामचोर।"

"कुछ भी कहो।···एक सलाह करनी है तुमसे।" सुवटी घुटने मोड़कर बैठ गयी, "हरलो से मिले हो न तुम?"

"तुम कैसे जानती हो उसे?" शुबो सतर्क हुआ।

"कौन नहीं जानता? सबकी रू-आतमा काँपती है उससे।"

"अच्छा! फिर तो स्यात मेरे आतमा-वातमा नहीं है।"

"हरलो मुझे बुलाता रहता है, मोलाकात के लिए।"

"आहा-रे, तुम्हारी तो तरक्की हो गयी। किस बखत जाती हो?"

"रात को।"

"मेरी पहरेदारी को चकमा देकर?"

सुवटी शरारत से हँसने लगी।

"ओहो···एक दफा मैंने तुम्हें ही देखा था क्या? तब···"

"तुमने पीछा किया था?"

"हाँ। और, इग्यारसीलाल से भी पूछने गया था।"

"उसे अब मैं नहीं घुराती हूँ।"

"सुवटी, तुम ये लफड़े न करो अब। किसी एक का साथ पकड़ लो।"

"उसी की तलाश में हूँ। तुमने···हरलो को धोखा क्यों दिया,

शुबो ?"

"धोखा ?"

"हां। उसने तो तुम्हें अपना मिन्तर बनाया था। भायला मानक अपनी कटार तक दे दी तुम्हें और तुम···पलट गये।"

"यह सब हरलो ने कहा है तुमसे ?" शुबो ने ठहाका लगाया "बढ़िया किस्सा गढ़ लिया है उसने। मान गये, पूरा उस्ताज है!"

"गलत है ?"

"एकदम्म। देखो सुवटी, कम्फ के बाहर एक रोज हरलो से मेरी जान-पहचान हुई। वह बेबात गुस्साने लगा मुझ पर। फिर उसने मुझे पट्टा खेलने का न्यौता दिया। मैं नहीं चाहता था, लेकिन उसने मजबूर कर दिया।···पट्टे में वह हार गया।"

"तुमसे ?"

"हां-हां। पूछ लेना उससे।"

"रहने दो। बड़म मत मारो। हरलो को आज तक हराया है किसी ने ?"

"तो···उसकी ताकत ठीक-से जांच ली है तुमने!" शुबो ने व्यंग्य किया।

"तुम उससे वैर मत मोल लो।"

"जा-जा, बड़ी आयी हरलो की झण्डी लेकर।"

"ठीक कहती हूं, शुबो ? हरलो के साथ हेलमेल रखने से तुम्हें बहोत फायदा होगा।"

"मुझे क्या फायदा लेना है।"

"यह तो गुलामोंवाली बात हुई।"

"मैं गुलाम हूं ?"

"और नहीं तो क्या मालिक हो किसी के ? पुसपा बाई और इग्यारसी लाल का दिया खाते हो।"

"यह पाठ तुम्हें हरलो ने पढ़ाया है ?"

"हरलो को बोलने का हक है। वह अपनी टोली का सिरेदार है। उसी का हुक्म चलता है वहाँ।"

"वह तो है सिरेदार और मैं—गुलाम।" शुबो ने होंठ चबाये।

"सोच लो।"

"तुम क्या सिरेदारनी बननेवाली हो?"

"जलन हो रही है?"

"मुझे क्यों होगी? इग्यारसीलाल को हो सकती है।"

"उस खूसट की चरचा छोड़ो।"

"और—हरलो के क्या हालचाल हैं? इधर कितने डाके डाले हैं उसने?"

"मौके की ताक में रहता है वो तो। आखिर टोली के भरण-पोस का जिम्मा उसी का तो है।…वह तुम्हें भी टोलीदार बना सकता है।"

"फिर हरलो की नहीं चल पायेगी टोली में। और—तुम्हें मेरी सिरेदारनी बनना पड़ेगा।"

"मंजूर है।" सुवटी ने शुबो की बाँह में चिकोटी काटी।

"अच्छा, बहोत हो गया। अब तुम काम पर जाओ और मुझे तनिक देर आँख मींच लेने दो।" शुबो ने एक तगड़ी जमुहाई ली।

"वो…एक बात कहनी थी। हरलो कटार माँग रहा था अपनी।"

"कटार पर अब उसका हक नहीं है।"

"क्यों?"

"मैंने छीनकर हासिल की है।"

"दे दो न! उसने मँगवायी है।"

"जा-जा, खुशामद करने से कोई लाभ नहीं।"

ओढ़नी के पल्लू को आँगी में खोसती हुई सुवटी उठ खड़ी हुई। फिर अनमनी-सी चल दी।

कुछ देर तक शुवो बैठा रहा, वहीं—अपनी हथेलियों को घूरता हुआ। आड़ी-तिरछी रेखाओं का जाल। माँ वतलाती थी, यह जाल नहीं, पालकी है। तगदीर इसी पालकी में चढ़कर आती है।

कम्फ के फाटक पर, जहाँ दो काँटीदार कंकेड़ काटकर रोपे हुए थे, वदरू किसी से तेज-तेज बतिया रहा था। शुवो को देखकर उसने हाथ से झाला दिया, "यहाँ आओ।"

"क्या है ?" शुवो की नसों में अभी भी आलस तैर रहा था, इस-लिए स्वर में चिड़चिड़ाहट आ गयी।

"दो जनी हैं—माँ-वेटी। भरती माँगती हैं।"

"कर लो भरती। पूछना किससे है !"

"पुसपा वाई नराज होगी।"

"वदरू मियाँ, तुम्हें पुसपा वाई की ही चिन्ता लगी रहती है।" शुवो वोला, "इन्हें कम्फ में जगह दे दो। मैं देख लूँगा।"

"क्या किस्सा है ?" अचानक इग्यारसीलाल टपक पड़ा।

"दो जनानियाँ हैं। भरती के लिए आयी हैं।"

नाक खुरचते हुए इग्यारसीलाल ने जनानियों की पड़ताल की। एक औरत, करीव चालीस वरस की। दूसरी, अठारह-उन्नीस की छोकरी ! लार टपकाती हुई उसकी मैली दृष्टि लड़की पर जम गयी।

"वड़ी मुशकिल है। आखिर किस-किसको भरती करें ? खैर, इन दोनों को तो रख लो।"

हाजरी-वही में औरत का नाम चढ़ाया गया, अचली और लड़की का जुगनी। खानापूरी कर इग्यारसीलाल ने आंख का गीड निकाला और उसे अंगुली पर लगाकर ताकते हुए वोला, "नेम-कायदे से रहना होगा, यहाँ। मेरे कहने में चलोगी तो दोनों की सुख से कट जायेगी।"

अचली और जुगनी के पास सामान के रूप में केवल एक वींटा था, सन की दरी का। वेतरतीव ढँग से लपेटा हुआ और मूंज की रस्सी से जकड़ा हुआ। वदरू के कहे मुताविक उन्होंने उसे एक छाजन के पास

रख दिया।

सुबो अपनी बाटियों की पोटली उठा लाया। उनके सामने खोलकर रखता हुआ बोला, "भूक लगी होगी, खा-पी लो पहले। • यहाँ से तुम्हें आटा मिलेगा। वह बाद में काम आ जायेगा।"

"तुम कहाँ के हो ?" जुगनी ने पूछा।

"उधर, वो क्या कहते हैं ये लोग'''पखेस्तान से आया हूँ।"

"हम भी वहीं से।" अचली ने गर्दन हिलायी।

"कौन-सी गाँव-ढाणी ?"

"मीरपुर के पास बुरहाली ढाणी।"

"मैं एक बार मीरपुर गया था, खास मीरपुर के बज्जार में। जुआर बेचने के वास्ते।"

"इधर के मिनख कैसे हैं ?"

"मिनख तो न इधर के बुरे है, न उधर के। लेकिन, क्या बतायें— सरकारू टाँग सब जगह अड़ी हुई है।"

"हाँ, उसी की वजह से सारा झंझट है।" जुगनी बोली।

इसकी आँखें कित्ती सुन्दर, कित्ती काली और उजली है। सुबो जुगनी को देखकर एक कोमल विस्मय से भर उठा। कानों पर छितराये हुए पंखड़ियों-से बाल। माथे पर मैण डालकर गूँथी हुई दो सुथरी पट्टियाँ। उनींदी-सी बरौनियाँ। जुगनी हथेली पर बाटी तोड़कर छोटे-छोटे कौर बना रही थी। सुबो को उसका चेहरा अपनी माँ से मिलता-जुलता और वैसा ही ममतालु लगा।

रात के पहले पहर के निपटते-बीतते सुबो कम्प से निकल पड़ा, चुपके से। हर दूसरे-तीसरे रोज वह अपनी उस 'टेकड़ी' पर निगाह डाल आता था। बड़ा बल मिलता था मन को। अन्दर ही अन्दर कुछ खुलने और फैलने लगता था। पिछली दफा उसे लगा था कि टेकड़ी पर से काफी

कुछ देर तक शुवो बैठा रहा, वहीं—अपनी हथेलियों को घूरता हुआ। आड़ी-तिरछी रेखाओं का जाल। माँ बतलाती थी, यह जाल नहीं, पालकी है। तगदीर इसी पालकी में चढ़कर आती है।

कम्फ के फाटक पर, जहाँ दो काँटीदार कंकेड़ काटकर रोपे हुए थे, बदरू किसी से तेज-तेज बतिया रहा था। शुवो को देखकर उसने हाथ से झाला दिया, "यहाँ आओ।"

"क्या है ?" शुवो की नसों में अभी भी आलस तैर रहा था, इसलिए स्वर में चिड़चिड़ाहट आ गयी।

"दो जनी हैं—माँ-बेटी। भरती माँगती हैं।"

"कर लो भरती। पूछना किससे है !"

"पुसपा बाई नराज होगी।"

"बदरू मियाँ, तुम्हें पुसपा बाई की ही चिन्ता लगी रहती है।" शुवो बोला, "इन्हें कम्फ में जगह दे दो। मैं देख लूँगा।"

"क्या किस्सा है ?" अचानक इग्यारसीलाल टपक पड़ा।

"दो जनानियाँ हैं। भरती के लिए आयी हैं।"

नाक खुरचते हुए इग्यारसीलाल ने जनानियों की पड़ताल की। एक औरत, करीब चालीस बरस की। दूसरी, अठारह-उन्नीस की छोकरी ! लार टपकाती हुई उसकी मैली दृष्टि लड़की पर जम गयी।

"बड़ी मुश्किल है। आखिर किस-किसको भरती करें ? खैर, इन दोनों को तो रख लो।"

हाजरी-बही में औरत का नाम चढ़ाया गया, अचली और लड़की का जुगनी। खानापूरी कर इग्यारसीलाल ने आंख का गीड निकाला और उसे अंगुली पर लगाकर ताकते हुए बोला, "नेम-कायदे से रहना होगा, यहां। मेरे कहने में चलोगी तो दोनों की सुख से कट जायेगी।"

अचली और जुगनी के पास सामान के रूप में केवल एक बींटा था, सन की दरी का। बेतरतीब ढंग से लपेटा हुआ और मूंज की रस्सी से जकड़ा हुआ। बदरू के कहे मुताबिक उन्होंने उसे एक छाजन के पास

रख दिया।

सुखो अपनी बाटियों की पोटली उठा लाया। उसके [illegible] रखता हुआ बोला, "भूख लगी होगी, खा-पी लो पहले। यहाँ से तुम्हें आटा मिलेगा। वह बाद में काम आ जायेगा।"

"तुम कहाँ के हो?" जुगनी ने पूछा।

"उधर, वो क्या कहते हैं ये लोग…पाकिस्तान से आया हूँ।"

"हम भी वहीं से।" जुगनी ने गर्दन हिलायी।

"कौन-सी गाँव-ढाणी?"

"मीरपुर के पास [illegible] ढाणी।"

"मैं एक बार मीरपुर गया था, ख़ास मीरपुर के बाजार में। [illegible] बेचने के वास्ते।"

"इधर के मिलख कैसे हैं?"

"मिलख तो न इधर के बुरे हैं, न उधर के। लेकिन, क्या बताऊँ… सरकारी टाँग सब जगह अड़ी हुई है।"

"हाँ, उसी की वजह से सारा झंझट है।" जुगनी बोली।

उसकी आँखें किसी सुन्दर, [illegible]

[illegible]

धूल उड़ गयी है। आज वहाँ जाकर उसने फिर जमावट कर दी।

कम्फ में वापस आया तो ज्यानकी काकी की आवाज कानों के पड़दे हिला रही थी। किसी ने ईंधन चुरा लिया था उसका। वह बिफर गयी थी।

"वा-वाह काकी, वहोत वढ़िया ! वोलती जाओ। गालियाँ दे-देकर सारी भड़ास निकाल लो। कसर वाकी न रहे।" खेजड़े के खोके कुतरते हुए गज्जी ने मुँह मटकाया।

"सत्यानाश हो तेरा !" ज्यानकी काकी अव उसी से उलझ पड़ी।

शुवो ने तत्काल फैसला सुनाने के अन्दाज में कहा कि हो न हो, यह कारस्तानी गज्जी की ही है। तभी तो वह इतना मटक रहा है। उसके लिए यही दण्ड है कि वह हफ्ते-भर तक ज्यानकी काकी के लिए ईंधन वटोरकर लाये।

ज्यानकी काकी शुवो की तरफ मुड़ी, "गज्जी मेरा ईंधन क्यों चुरायेगा भला !" गज्जी ने रोनी-सी सूरत बना ली तो काकी का चेहरा एकदम ढीला पड़ गया, "मैंने तुमसे तो कुछ कहा नहीं, गज्जी !"

"सत्यानाश तो कर ही दिया !" गज्जी मुस्कराकर वोला, "लेकिन काकी, अव ईंधन की जरूरत ही नहीं। खेजड़ों पर मीठे-मीठे खोके लदे पड़े हैं, जी भरकर खाओ और ऊपर से एक मुट्ठी दाना चवा लो। वस, पेट की छुट्टी !"

"तुम्हें इस तरह की उल्टी-सीधी सूझती रहती है, हरदम।" ज्यानकी काकी ने गज्जी का कान उमेठ दिया।

उसी समय अचली आ गयी। शुवो ने उसको ज्यानकी काकी से मिलवाया। ज्यानकी काकी तमाम रीस-खीज भूलकर उससे वतियाने लगी।

गज्जी तुड़त-फुड़त गायव हो गया, वहाँ से। शुवो को पता था, इन दिनों उसकी फूलकी से खूब पट रही थी। दोनों भण्डारे के पीछे छुपकर

खुसर-फुसर करते रहते थे। वह उधर नहीं गया और कम्प की हद में इधर-उधर चक्कर लगाता रहा।

"शुबो !" एक जगह पीछे से पुकार पड़ी, "मैं तुम्हें ही ढूंढ रही हूँ कब से।"

अगले ही पल आवाज पहचान में आ गयी। जुगनी थी। अंधेरे की गम्फी के बावजूद शुबो ने उसे निःसंकोच चीन्ह लिया।

जुगनी असंयत-सी लग रही थी। घबराई हुई। उत्तेजित।

"क्या हुआ, जुगनी ?" शुबो के स्वर में वह सारी कोमलता उमड़ पड़ी, जिसे उसने कैसे-कैसे रन्दों के बीच कुचले जाने से बचाकर रख छोड़ा था।

"वो आदमी···आया था अभी।" जुगनी सन्न थी। हकला रही थी।

"कौन ?"

"वो···जो इग्यारसीलाल है। मुझे अपने तम्बू में बुलाकर गया है।"

शुबो के रगत में एक लपट उठी और फिर, वह लपट ही रह गयी, शुबो नहीं।

"मैं उस कुत्ते की टाँगें चीर के रख दूँगा।"

वह तेजी से मुड़ा। जुगनी ने उसका हाथ थाम लिया, "नहीं, गुस्सा मत करो।"

यह मीठा और सोंधा स्पर्श शुबो के अन्दर घुलता चला गया। लपट उसकी शीतलता में लुप्त हो गयी।

"मैंने तुम्हारी तरह दुनिया का सामना नहीं किया है, शुबो ! लेकिन—जानती हूँ कि जिन्दा रहने के लिए जिन्दगी को किस तरह रौंदना पड़ता है।" जुगनी ने उसका हाथ छोड़ दिया और अन्धकार की तहों के पार ताकने लगी, "इग्यारसीलाल अकेला नहीं है, उस जैसों की पलटन बहुत बड़ी है, बहुत खूंखार। रोस-रोस करके तो हम अपने को

ही नष्ट करेंगे। असल में, जरूरत है समझदार होने की और फिर रण छेड़ने की।"

नहीं, जुगनी विचलित नहीं थी। शुबो का अनुमान सही नहीं था। लेकिन, वह भीतर-ही-भीतर सीज अवश्य रही थी। उसकी भाप, उसकी गरमाहट का अहसास शुबो को हुआ और वह दंग रह गया। चीजों के बारे में वह इस ढंग से नहीं सोचता था, हालाँकि एक बेसब्री, एक बेक़रारी उसे हरदम मथती रहती थी कि टक्कर ली जाये, मुकाबला किया जाये और जो अदृश्य दीवार है दहशत की, उसे तोड़कर ढहा दिया जाये!

"उन्होंने हमें सिरफ पेट समझ लिया है यानी समूचे तन में केवल पेट! रोटी देकर वे अहसान जताते हैं कि हम तुम्हारा पेट भरते हैं।" शुबो ने कहा।

"पेट के अलावा और भी बहुत कुछ है, हमारे पास। धड़, बाजू, दिमाग, पाँव और इन सबको जोड़नेवाली ताकत! अज्जैदान कहता है—"

शुबो ने रोमांचित होकर जुगनी को बीच में ठहरा दिया, "तुम्हें भी अज्जैदान अच्छा लगता है?"

"हाँ।" उसने स्वीकार किया, "वह हमारे खून को, हमारे रंग को, बार-बार असलियत की ओर ले जाता है।"

शुबो कुछ कहने ही जा रहा था कि सुवटी आयी। तनी हुई। बेचैन।

"वो नयी छोकरी यहीं पर है?" उसने ढिठाई से पूछा।

जुगनी सकपका गयी। वह ऐसे बरताव के लिए तैयार नहीं थी।

"तुम मेरे बारे में पूछ रही हो?"

सुवटी ने उसकी तरफ न देखकर शुबो से कहा, "वो इग्यारसीलाल तड़प रहा है, इस परी के लिए।"

शुबो को फिर क्रोध आ गया, "तुम्हें क्या पड़ी है!"

"उसने मुझे ही तो भेजा है। अब"'इसको लेकर जाऊँगी तो दान्ना परसन्न होगा।"

"तुमसे मन भर गया उसका ?" शुबो तल्ख हो उठा।

"भर ही गया होगा।"

"जुगनी नहीं जायेगी। बोल देना इग्यारसीलाल से, अपने पर लगाम लगाकर रहे, नहीं तो किसी दिन यही पसलियाँ बिखर जायेंगी उसकी !"

'तुम'''यह धमकी इग्यारसीलाल को दे रहे हो ?"

"हाँ-हाँ, अब बर्दास नहीं होगा यह।"

"यह बर्दास करने की नहीं, मज्जे करने की बात है।"

"चपर-चपर मत कर ज्यादा।"

"तो'''आज की रात यह छोकरी तुम्हारे पास रहेगी ?"

सुवटी के व्यंग्य ने शुबो को सुलगा दिया, "मार खाओगी तुम'''"

"हाथ उठाओगे मुझ पर ?"

"देखो, सुवटी ! जबान मत लड़ाओ।"

"लगता है, छोकरी ने तुम्हारा मरम बेध दिया है।"

"और तुम्हें भी हरखो का बड़ा घमण्ड हो गया है।"

"याद रखना, शुबो ! वही एक दिन तुम्हारी म्यान झाड़ेगा—"

"तुमने तो अपनी म्यान झड़वा ली उससे !"

पिच्-पिच् ! सुवटी ने अँधेरे में दो बार थूका, "तुम्हारा बोरिया-बिस्तर गोल नहीं किया तो मैं सुवटी नहीं। देखती हूँ, कैसे कम्प में रहते हो !"

धबड़-धबड़ पाँव पटकती हुई सुवटी चली गयी। लेकिन, उसकी विषैली फुँफकार वहीं टँगी रह गयी, हवा की हिलती-डुलती अलगनी पर। शुबो को अपनी रीस और कटुता पर खेद होने लगा। उसने धीमे से कहा, "मैं कभी-कभी ऐसे ही आपा खो बैठता हूँ।"

"किसी के भड़काने से भड़कना ठीक नहीं। ऐसा कोप हमें कमजोर बना देता है।" जुगनी का स्वर स्थिर, नम और भरोसा देनेवाला था।

पुसपा वाई के तेलिया-मैलिया चेहरे पर आंसू ढरक रहे थे और वह नाक सुड़कती हुई बुदबुदा रही थी, "अच्छा हुआ, उसे सबक मिल गया··· लेकिन मेरा तो भाग उजाड़ गया वो—"

वदरू परेशान-सा तम्बू का कचरा बुहार रहा था।

हलफलाहट में वह वेवजह झाड़ू पीटने-फटकारने लगता था।

एक और व्यक्ति तम्बू में बैठा हुआ था। ठुड्डी रगड़ता, मिनमिनाता, लम्बी-लम्बी आहें भरता। वह दिल्ली से आया था। पुसपा वाई के रोने-धोने से घवराकर वह गर्दन उचकाने और नथुनों में खूं-खूं की आवाज पैदा करने का यत्न करता था, फिर जैसे स्वयं पर शरमाने लगता था।

"धीरज रखो—" उसने कहा और लाल पड़ गया।

"क्या रखूं ?" पुसपा वाई ने उसे घुड़कती निगाहों से देखा, "मैं तो राख हो गयी। अव क्या करूंगी, कहाँ जाऊंगी मैं···क्या हमेशा यहीं सड़ती रहूंगी—"

शुवो भण्डारे की चावियां लेकर आया था। दुआर पर थम गया।

"सुना तुमने ? वरवाद हो गयी मैं तो—" पुसपा वाई की आवाज़ शुवो को देखते ही मानो चक्करघिन्नी पर चढ़ गयी।

शुवो कुछ समझ नहीं पाया। उसने पहले वदरू को, फिर उस व्यक्ति को देखा, जो पुसपा वाई के लिए बुरी खवर लेकर आया था।

कुछ देर वाद पुसपा वाई ने खुद ही सारा हाल-वेहाल सुना दिया।

जैतपालसिंग का खून हो गया था। कुछ लोग उसकी कोठी में घुस गये। जैतपालसिंग नहा रहा था। उन्होंने नहानघर का दरवाजा तोड़ दिया और पिस्तौल से जैतपालसिंग को भून डाला।

"वो नकसली-उकसली लोग थे। अच्छा हुआ। नेता बनके अकड़ता फिरता था, मेरा जैतपालसिंग! हकूमत सिर में बोलने लगी थी। मुझसे बोला, अभी तुम कैम्प में जाके रहो और कुछ कमाई-धमाई कर लो, फिर पोलटिक्स करना। अरे, मुझे सब मालूम है, उसको कोई और मिल गयी थी। वही भोपालवाली बेगम साईबा···रांड होगी, और क्या! उसी के खूसने में घुसा होगा। लेकिन···कर कुछ नहीं सकता था, मेरा जैतपालसिंग। बस, औरत के ऊपर पत्थर की तरह पड़ जाता था। अच्छा हुआ, मर गया। उसे ऐसी ही मौत ठीक थी—"

पुसंपा बाई रो रही थी, हँस रही थी, नाक सिनक रही थी, आँखें नचा रही थी, तालियाँ बजा रही थी। एकाएक उसने खबर लानेवाले की तरफ देखा, "वो बेहार वाला एम्पी जिन्दा है क्या, या उसकी भी राम-नाम-सत्त हो गयी?"

"कौन? हीरानन्द?"

"हाँ-हाँ, वो ही हीरानन्द-खीरानन्द, जो नकली बाल चढाता है खोपड़ी पर।"

"थोड़ा लड़खड़ाके चलते हैं?"

"हाँ-हाँ, वो लँगड़ा ही।"

"वो तो मिनिश्टर होनेवाले हैं। उनकी फोटुएँ आजकल खूब अखबारों में छप रही हैं।"

"बहुत चालाक-चंट है, बुढऊ। मैं तो जानती थी, एक दिन जरूर कुरसी पायेगा।"

"प्राइम्मिनिश्टर की मेहरबानी है उन पर।"

"तो मैं अब उसी को पटाऊँगी। वो तो वैसे भी मुझे खूब मानता है। और, मैं कौनसी सत्ती-सुहागन हूँ कि जैतपालसिंग के पीछे बठिये

फोड़ डालूंगी। उसने मुझे दिया क्या ? वस, एक रद्दखल मकान मेरे नाम लिख दिया। वाकी तो सारी जायदात-दौलत अपने वीवी-वच्चों के लिए ही करके गया है।"

वाद में, गुवो को वदरू से भी कुछ किस्सा मालूम हुआ।

"लगता है, पुसपा वाई अव कम्फ छोड़ जायेगी।" गुवो ने शंका परगट की।

"कभी नहीं। कम्फ में ही तो उसके प्रान अटके हुए हैं। दोनों हाथों से वटोर रही है। तुम्हें या किसी को भी, पता नहीं लगने देती वो।" वदरू ने कहा, "जैतपालमिग की सुधारस और कांगरेस पाल्टी के एक वड़े नेता को तगड़ी घूस देने के वाद यह कम्फ मिला है, पुसपा वाई को। सव जानते हैं, यहाँ के कम्फ सोना उगलते हैं। जव तक अकाल रहेगा, और सरकार की मदद मिलेगी, वह यहीं अड्डा जमायेगी।"

"लेकिन उसने खुद कहा था कि वह किसी हीरानन्द—"

"हीरानन्द-खीरानन्द भी खाली हाथ थोड़े ही पट जायेगा। उसकी गांठ नोटों से गरम करनी होगी। विस्तर को भी गरमाई देनी पड़ेगी, लेकिन वह अव पुसपा वाई पर राजी नहीं होगा। किसी और ईस्तरी का वन्दोवस्त करना होगा।···वो सव पुसपा वाई यहीं से कर लेगी। जव तक खजाना भरा रहता है, नागिन उस पर कुंडली मारे वैठी रहती है।"

'अरे ओ वदरू, कहाँ दफन हो गया अपनी महतारी का खसम !" पुसपा वाई की चिल्लाहट सुनायी दी।

वदरू विल्कुल पीला पड़ गया और तुरन्त मुट्ठी में दाढ़ी पकड़े तम्वू की तरफ भागने लगा।

खाली वाल्टी कलाई में फँसाये मचली वछराज के तम्वू से निकली।

फिर बछराज के खाँसने और कराहने की आवाज सुनायी दी। गुबो ने अचली से पूछा, "वो अब कैसा है ?"

"रोग-दोख की मुझे ज्यादा जानकारी नही।" अचली बेहद उदास और बुझी हुई थी, "लेकिन—कल बदरू ने देखके कहा था कि स्यात पीलिया है। शरीर हल्दी के माफक जरद पड गया है।"

अचली पानी के कोठे पर चली गयी। सिराम ने पास आकर कहा, "कैसी नेक औरत है। बहुत सेवा करती है बछराज की।"

"हाँ ! बीमारी में तो घरवाले तक छिटक जाते हैं।" गुबो बोला।

"है-हं गुबो !" सिराम कानाफूसी के स्वर मे बोला, "इग्यारसीलाल और सुवटी···उधर साथ-साथ गये हैं।" उसने कम्प के बाहर एक टीबे की ओर इशारा किया।

"क्यों, तम्बू काफी नहीं है क्या ?" गुबो में फिर कडवाहट उभर आयी।

"वो बात नही है।···सवेरे से हरलो उस तरफ चक्कर लगा रहा है। स्यात उससे मिलने गये हैं।"

"हरलो ही था ? ठीक से देखा था तुमने ?"

"हाँ, उसे तो अच्छी तरह पहचानता हूँ।"

"सुवटी अब इग्यारसीलाल और हरलो में मेल करा रही है क्या ?"

"भण्डारे में नया नाज आने की जानकारी भी हरलो को जरूर मिल गयी होगी ?"

"इतना तो सुवटी ने बता ही दिया होगा।"

"वो···उधर रोज जाती है।"

"उस पर रोक लगानी होगी।" गुबो फिकर मे पड गया।

"चींटी के पंख निकल आये हैं।"

"अगर ज्यानकी काकी उसे समझाये तो—"

फोड़ डालूंगी। उसने मुझे दिया क्या ? बस, एक खड़खल मकान मेरे नाम लिख दिया। बाकी तो सारी जायदात-दौलत अपने बीवी-बच्चों के लिए ही करके गया है।"

बाद में, शुवो को बदरू से भी कुछ किस्सा मालूम हुआ।

"लगता है, पुसपा बाई अब कम्फ छोड़ जायेगी।" शुवो ने शंका परगट की।

"कभी नहीं। कम्फ में ही तो उसके प्रान अटके हुए हैं। दोनों हाथों से बटोर रही है। तुम्हें या किसी को भी, पता नहीं लगने देती वो।" बदरू ने कहा, "जैंतपालसिंग की सुपारस और कांगरेस पाल्टी के एक बड़े नेता को तगड़ी घूस देने के बाद यह कम्फ मिला है, पुसपा बाई को। सब जानते हैं, यहां के कम्फ सोना उगलते हैं। जब तक अकाल रहेगा, और सरकार की मदद मिलेगी, वह यहीं अड्डा जमायेगी।"

"लेकिन उसने खुद कहा था कि वह किसी हीरानन्द—"

"हीरानन्द-खीरानन्द भी खाली हाथ थोड़े ही पट जायेगा। उसकी गांठ नोटों से गरम करनी होगी। बिस्तर को भी गरमाई देनी पड़ेगी, लेकिन वह अब पुसपा बाई पर राजी नहीं होगा। किसी और ईस्तरी का बन्दोबस्त करना होगा।···वो सब पुसपा बाई यहीं से कर लेगी। जब तक खजाना भरा रहता है, नागिन उस पर कुंडली मारे बैठी रहती है।"

"अरे ओ बदरू, कहां दफन हो गया अपनी महतारी का खसम !" पुसपा बाई की चिल्लाहट सुनायी दी।

बदरू बिल्कुल पीला पड़ गया और तुरन्त मुट्ठी में दाढ़ी पकड़े तम्बू की तरफ भागने लगा।

खाली बाल्टी कलाई में फंसाये अचली बछराज के तम्बू से निकली।

फिर बछराज के खांसने और कराहने की आवाज सुनायी दी। शुबो ने अचली से पूछा, "वो अब कैसा है ?"

"रोग-दोख की मुझे ज्यादा जानकारी नहीं।" अचली बेहद उदास और बुझी हुई थी, "लेकिन—कल बदरू ने देखके कहा था कि स्यात पीलिया है। शरीर हल्दी के माफक जरद पड़ गया है।"

अचली पानी के कोठे पर चली गयी। सिराम ने पास आकर कहा, "कैसी नेक औरत है। बहुत सेवा करती है बछराज की।"

"हाँ! बीमारी में तो घरवाले तक छिटक जाते हैं।" शुबो बोला।

"हे-ह शुबो!" सिराम कानाफूसी के स्वर में बोला, "इग्यारसीलाल और सुवटी...उधर साथ-साथ गये हैं।" उसने कम्प के बाहर एक टीबे की ओर इशारा किया।

"क्यों, तम्बू काफी नहीं है क्या?" शुबो में फिर कड़वाहट उभर आयी।

"वो बात नहीं है।...सबेरे से हरलो उस तरफ चक्कर लगा रहा है। स्यात उससे मिलने गये हैं।"

"हरलो ही था? ठीक से देखा था तुमने?"

"हाँ, उसे तो अच्छी तरह पहचानता हूँ।"

"सुवटी अब इग्यारसीलाल और हरलो में मेल करा रही है क्या?"

"भण्डारे में नया नाज आने की जानकारी भी हरलो को जरूर मिल गयी होगी?"

"इतना तो सुवटी ने बता ही दिया होगा।"

"वो...उधर रोज जाती है।"

"उस पर रोक लगानी होगी।" शुबो फिकर में पड़ गया।

"चींटी के पंख निकल आये हैं।"

"अगर ज्यानकी काकी उसे समझाये तो—"

"वो किसी के समझाने-बुझाने से टिकनेवाली नहीं, उसके माथे में हल्लो का सोरूर भर गया है।" सिराम रुककर बोला, "इग्यारसीलाल के पास जो बन्दूक है, उसका इन्तजाम भी होना चाहिए।"

"कैसा-क्या इन्तजाम ?"

"वो कभी भी हमारे खेलाफ खड़ी हो सकती है। तुम कहो तो उसे ठिकाने लगा दूं ?"

"तुम बन्दूक चलाना जानते हो ?"

"कैसे नहीं जानूंगा ? जनम से बावरिया-जात हूँ। शिकार करके पेट पालता रहा हूँ।"

"अभी अच्छा मौका है।" शुबो फुसफुसाया।

"इग्यारसीलाल गया हुआ है। मैं उसकी बन्दूक पार कर देता हूँ।"

"हां। और, घासफूस में लपेटकर किसी ठीक जगह पर छुपा देना।"

"अच्छा।" सिराम ने चारों ओर देखा, सेंध मारनेवाली नजर से बोला, "बाद में कोई गड़बड़ हो तो तुम पलट लेना।"

"फिकर मत करो।"

पुसपा बाई अपने तम्बू से निकली। पीछे-पीछे बदरू। वे तल्लाब की खुदाई के लिए ठौर-ठांव तय करने जा रहे थे। जल्दी ही काम शुरू करना था।

पानी के कोठे से बाल्टी भरकर लौटती हुई अचली का चेहरा धुला-धुला साफ था। काली झांइयां मिट गयी थी। शुबो के निकट से गुजरते हुए बोली, "सुबटी को समझा देना, शुबो ! वो मेरी छोरी को तंग कर रही है। मुझे किसी रोज गुस्सा आ गया तो चुटला पकड़ के गला टीप दूंगी।"

"जुगनी को कुछ कहनी है वो ?"

"बेबात झगड़ा करती है। ताने-माने लगाती है।"

"ऐसी ही आदत है उसकी।"

"मेरी आदत तो और भी ज्यादा खराब है—"

"मैं निपट लूंगा। तुम कोई टण्टा खड़ा मत करना।"

घास के एक पूले को कांख में दबाये सिराम भण्डारे की तरफ चला गया। शुबो ने तनिक चैन की साँस ली, किन्तु हरलो को लेकर उसकी परेशानी निकल नहीं रही थी। उसे सन्देह था कि इन्हीं दिनों में हरलो की टोली नये नाज को हथियाने की चेष्टा कर सकती है। पुसपा बाई और इग्यारसीलाल भी उसकी समझ से बाहर होते जा रहे थे।

सिराम ने पास आकर हल्के-से खँखार दिया, फिर मुस्कराया।

"चलो, जरा भण्डारे की हालत देख लें।" शुबो ने कहा।

भण्डारे की चौहद्दी कहीं-कहीं से दरक गयी थी। शुबो ने सुर्खी का गारा बना डाला और दरारों में भरने लगा। सिराम पिछवाड़े में लीक खींचकर खाई खोदने लगा। दरारें ठीक कर शुबो भी उसके संग जुट गया।

सारे दिन वे धमा-धम्म कस्सी चलाते और माटी निकालते रहे। खूब चौड़ी और लम्बी खाई बना डाली। उसे लाँघकर तत्काल भण्डारे तक नहीं पहुँचा जा सकता था। खाई से गज भर के फासले पर उन्होंने बाड़ लगा दी और परकोटा-सा बना दिया।

"अब जाबता हो गया।" शुबो को इतमीनान आया। सिराम अभी भी बाड़ की मेड़ में उलझा हुआ था।

"इग्यारसीलाल लौटा नहीं?" पुसपा बाई बदरू से पूछ रही थी।

"नहीं।" उसने गर्दन झटकायी और फिर इस तरह खड़ा हो गया, मानो उसे कीलों से जड़ दिया गया हो।

"वह जहाँ जाता है, अटक जाता है।" पुसपा बाई खीज उठी। कुछ

क्षण कम्फ की छप्पर-छाजनों को एकटक ताकती रही। फिर बोली, "कित्ते जने यहाँ आ गये हैं। दूसरे कम्फ भी तो हैं, वहाँ क्यों नहीं जाते? निकम्मे हैं सब। करते कुछ नहीं, खाते हैं और हगते हैं।"

टहलते-टहलते उसने टाँगें चौड़ी कीं और भड़ाका मारकर बदबू फेंक दी, "धत्त तेरी, पेट में बाय भर गयी है। कुछ हजम होता नहीं। धड़ाधड़ गोले फूटने लगते हैं।"

रात को बछराज के तम्बू में लालटेन टिमटिम कर रही थी। शुबो उसके हालचाल पूछने के लिए अन्दर जाना चाहता था, किन्तु तभी उसने अचली की घिघियाहट सुनी और वह चकित-सा बाहर ही रुक गया।

"मुझे माफ कर दो।" वह कह रही थी, "मैंने बहुत बुरा किया तुम्हारे साथ, उसी का फल भोग रही हूँ आज।"

"तुमने तो…जो भी तुम्हारे सम्प्रक में आया, उसे बरबाद कर दिया। औरत की देह में डाकणी हो तुम!" बछराज हाँफता हुआ बुदबुदाया।

"रुको मत, और गालियाँ दो मुझे, तुम्हारे मन का बोझ उतर जायेगा।"

"इतनी आसानी से उतर जायेगा बोझ? मैंने उसे जिनगी भर ढोया है। मेरे अन्दर धँस गया है वह।"

"मैं नहीं जानती थी, तुमसे…इस तरह—यहाँ मोलाकात हो जायेगी।"

"वो…छोरी किसकी है?"

"तुम्हारी। सच कहती हूँ।"

"क्या सबूत है?"

"यकीन करो मुझ पर। सौगन्ध ले लो।"

"तू स्साली कुतिया, साँच बोलेगी कभी? झूठ और फरेब की सड़ाँध में सड़ चुकी है तू। कितनी बार, कितनी तरह से झूठ बोलती रही है

तू मेरे सामने।"

"मैं अन्धी हो गयी थी। मेरी मति भरम गयी।"

"अब कितनी आँखें लेकर आयी है कम्फ में? सबसे पहले तुमने मुझे चूसकर फेंका, फिर दीने को। उसे मार क्यों डाला तुमने?"

"वो मुझसे मुंह फेरकर···दूसरी औरत के पास जाने लगा था।"

"तू भी तो मुझे धोखा देकर चली गयी थी उसके पास। मैंने तो गर्दन नहीं तोड़ी तुम्हारी!"

"तुम्हारे भीतर दया थी।"

"रौंद भाग निकली दीने के साथ। लेकिन उसके साथ भी निभा न सकी। दरांती से चीर डाला यार को।" खाट की ईस पर मुक्के मारता हुआ बछराज जैसे अपने-आपसे बातें कर रहा था।

अचली चुप रही।

"जेल-वेल नहीं हुई तुझे।"

"कोतवाली में बन्द कर दिया था उन्होंने। लेकिन, दो-तीन रोज बाद एक सिपाही का दिल आ गया मुझ पर। उसने वहाँ से निकालकर मुझे अपने घर में बिठा लिया।"

"गोरी चमड़ी में भरमा गया बेचारा! उसकी भी···दुरगत ही की होगी तुमने!"

"वो बहोत खराब था। पीटने लगा मुझे। और फिर, रण्डी कहने लगा।"

"रण्डी तो तू थी ही। उसका व्योहार गलत नहीं था।"

"कैसे-कैसे लोग पकड़के लाने लगा वो और हुकम देता था, करो इनके साथ।"

"तेरी भूख तब अच्छी तरह मिट गयी होगी।"

"मैंने सिपाही को जहर दे दिया।"

"ओह, तेरा सरवनास हो!" बछराज के मुँह से निकला।

कुछ क्षण खामोशी रही।

"भागते-भागते थक गयी हूँ मैं। पुलीस का डर लगा रहता है।''' गनी की चिन्ता बेचैन किये रहती है।"

"इंदस्तान बचाव के लिए आयी है ?"

"यही समझो। अकाल ने भी बदहाल कर दिया था।'''तुमने रखेस्तान क्यों छोड़ दिया ?"

"क्या करता वहाँ ? तुमने दगा किया तो घरवार फीका लगने लगा। धीरे-धीरे औरत जात से ही घिरणा हो गयी।"

"मुझे पता लगा था कि तुम औरतों को इस-उस पार बेचने-खरीदने का धन्धा करने लगे हो।"

"हाँ, बदले की भावना तीखी हो उठी थी। कई दिनों तक यही धन्धा किया, लेकिन मन बिल्कुल अकेला और अनाथ होता गया। एक दिन खुद को धिक्कारते हुए सब तज दिया।"

"इस कम्फ में कैसे'''"

"इग्यारसीलाल की वजह से। औरतोंवाले धन्धे में उससे जान-पहचान हुई थी। यहाँ भी उसने साथ रहने के लिए कहा'''"

जो कुछ सुनायी दे रहा था, वह शुबो के लिए अविश्वसनीय था। नसों में प्रबल कम्प मच गया। सिर में घुमेरी उठने लगी तो वह अँधेरे के मजीठिया परदे में हाथ-पांव मारता हुआ वहाँ से परे हट गया। लगा, मानो किसी ने आँखों और कानों में आग की मेखें ठोंक दी हों। न कुछ सूझ रहा था, न कुछ सुनायी पड़ रहा था।

वह एक ढूह पर पसर गया। रफ्तः-रफ्तः विचार तलफलाने लगे। दलदल में जनम और दलदल में मौत ! हरियाली की खोज करते-करते आदमी काई के घेरे में जा फँसता है, उसने सोचा। फिसलन और बदबू से भरी काई सूखती है, सिकुड़ती है, लेकिन एक बार अपनी लपेट में लेने के बाद किसी को मुकत नहीं करती है। फिर, तन और मन—दोनों के लिए, कीचड़ में ही जीने और रमने के सिवा दूजा चारा ही क्या रह जाता है !

माची पर अधलेटी होकर पुसपा बाई इग्यारसीलाल से मशवरा कर रही थी। बदरू उसके पाँव चाँप रहा था और कट्-कट् कटके निकाल रहा था।

"तल्लाववाली इस्कीम से अच्छा नफा होगा।" इग्यारसीलाल ने और बातों के बीच में तान छेड़ी।

"नफा जाने कब होगा, नुकसान तो हो ही गया है।" पुसपा बाई बोली, "इस्कीम आते ही जैतपालसिंग को काल हर ले गया। और, अब हुरलो भी—"

"वो तंग नहीं करेगा हमें।"

"बात पक्की कर ली है?"

"हाँ। उम्मरकोटवालों को मीठा जवाब देना पड़ेगा।"

"हुरलो—अकेला ही सारा सौदा चाहता है?"

"हाँ।"

"नकद रुकम देगा?"

"हाँ। जबान दे रहा था।"

"तब हमें क्या एतराज है!"

"शुबो गड़बड़ करेगा।"

"वो कौन होता है, दखल देनेवाला—"

"लेकिन—परेशानी तो पैदा कर ही सकता है।"

"तो सोचो, क्या किया जा सकता है!"

"नया थानेदार आ गया है।"

"अच्छा!—वैसे हुरलो से भी बात कर देखो।"

"तल्लाव की खुदाई मिनख की बलि माँगती है, पुसपा बाई।" इग्यारसीलाल ने बात बदली, "नहीं देंगे तो सारा काम चौपट हो सकता है।"

"मैंने भी सुना तो है।"

"परबन्ध करना होगा।"

अचानक भण्डारे के पास हाका फूट पड़ा, "पकड़ो, पकड़ो !"

पूरा कम्फ, जो अलाव और तम्बाकू और सोरठों के संग रस ले रहा था, हड़बड़ाकर पांव-पांव दौड़ पड़ा।

ज्यानकी काकी ने भण्डारे के पिछवाड़े किसी की चुटलिया पकड़ रखी थी और चीख रही थी, "आज तेरी लुगदी निकालकर दम लूंगी, रांड़ ! बोल, क्या कर रही थी यहां ?"

"छोड़ दो ! काकी, मुझे छोड़ दो।" सुवटी तड़फड़ाती हुई रो रही थी।

"देख क्या रही है फूलकी, मार कमीनी के दो जूते ! इस पर बड़ा मद छा गया है जोवन का।"

फूलकी ने वाकई फटाफट जूते चला दिये। सुवटी बिलबिला उठी, "होय-होय, मार डाला रे !"

ज्यानकी काकी उसे मरी हुई भेड़ की तरह घसीटने लगी।

गज्जी ने कहा, "हो क्या गया। छोड़ दो, काकी !"

काकी ने पलटकर उसी के कुहनी चला दी, "तू पंचात में मत पड़। शुबो कहां है ? उसको बुलाके ला। वही न्याव करेगा।"

"मामला क्या है ?" शुबो आ गया, "क्या बिगाड़ कर दिया सुवटी ने ?"

"पूछ इसी कुलक्खणी से !" काकी बिफर पड़ी।

सुवटी ढां-ढां रोये चली जा रही थी।

फूलकी ने मूंज की जेवड़ी लाकर उसके हाथ बांध दिये, "तू बहोत मस्तानी हो गयी है, भैंण !" उसने हिकारत से कहा और झोंटा पकड़कर खींच दिया सुवटी का। वह हाय-हाय कर उठी।

"चुप हो जा।" काकी ने डपट दिया, "नहीं तो और मार खायेगी।"

सुवटी सिकुड़कर सुबकने लगी।

घटना का पूरा ब्योरा फूलकी ने दिया। दिसा-मैदान के बाद ज्यानकी काकी और फूलकी कम्फ में लौट रही थीं। भण्डारे के पिछवाड़े

उन्होंने तीन जनों को खुसफुस करते हुए देखा। सुवटी की आवाज पहचान में आ गयी। वह कह रही थी—जल्दी-जल्दी बाड़ तोड़ दो और धाई को माटी में दूर दो। यह भण्डारा तो मेरा खूब देखा हुआ है। इसको मैं अकेली ही लूट सकती हूँ। हरलो खामखाँ हिचक रहा है।

तभी ज्यानकी काकी ने हिम्मत की और हाँक दी, "सुवटी!"

लपककर उसने सुवटी के बाल पकड़ लिये, "अरे-हो, तू तो अब डकैत बन गयी है!"

फूलकी मदद के लिए चिल्लाने लगी। कम्प के लोगों को आते देखकर सुवटी के साथ के दोनों जने भाग छूटे। लेकिन, सुवटी की शामत आ गयी। उस पर थप्पड़-मुक्के बरसने लगे।

"सुवटी, तुमने यह अच्छा नहीं किया।" सिराम बोला, "जिस थाली में खाती है, उसी में छेद करने की सोचती है!"

"हरलो पट्टी पढ़ा रहा है।" गोदारी ने कहा, "तभी तो हरदम उसी के गुण बखानती रहती है।"

"काकी, अब इसे तुम्हीं सँभालियो!" सुयो बोला। सुवटी के इस पतन पर उसे ताज्जुब था और दुःख भी।

"तू क्यों चिन्ता करता है? इस लाडो की सारी मस्ती झाड़कर [illegible] ज्यानकी नहीं।"

ाभोर होकर बोला, "मुझे अपना हाथ दो !"

जुगनी मन्त्रमुग्ध-सी उसके निकट खिसक आयी। शुवो उसकी महत् । मत्त हो उठा। दोनों ही के होंठ बड़ी आतुरता से एक-दूसरे को पाने के लिए बढ़े और लीन हो गये। वह एक सहज प्रवाह था, उसे रोका नहीं जा सकता था और रोकने की सोचकर कदाचित् वे ग्लानि से भर उठते और अपने-आपको माफ न कर पाते।

सभी होंठ एक-से नहीं होते हैं ! शुवो ने वह कोमल अन्तर महसूस किया।

यह उमड़कर चूमना ! यह स्वाद'''जुगनी झनझनाकर उत्तेजना की धारा में विकल हो उठी। पिछले साल, अचली के पास 'ठहरे हुए' एक आदमी ने उसे जबरन दबोच लिया था और देर तक उसके होंठों को गोंद की गुठली बनाकर चूसता रहा था। वह चिपचिपाहट, वह घिन आज धुल गयी।

"जुगनी !" सामने अचली खड़ी थी, "यहाँ क्या कर रही है तू ? मैंने तेरी खोज में सारा कम्फ छान मारा।"

"ऐसा क्या कारज आ पड़ा मुझसे !" माँ की धधकती हुई आँखों का ताप जुगनी ने महसूस किया, लेकिन उसने उपेक्षा दरसायी।

"शुवो, तू मेरी छोरी को बिगाड़ रहा है। यह ठीक नहीं।"

"मैं अपना बिगाड़-सुधार समझती हूँ। तुम्हारी सलाह की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

"बहेस मत कर।" अचली चिड़चिड़ा उठी, "कम्फ में पुलीस आयी है।"

"पुलीस ?" शुवो चौंक गया।

"हाँ, राज को शक हो गया है कि कम्फ में पखेस्तान के जासूस रहते हैं।" अचली की आँखों में दहशत थी।

"तू सच्च बोल रही है ?" जुगनी को विश्वास न आ रहा था।

"जा, खुद जाके देख ले।"

अचली बदहवास-सी घाघरे का घेर मसलती हुई चली गयी।

"अब ?" जुगनी अस्थिर हो उठी।

"घबराओ मत। मुझे लगता है, किसी ने रपोट भेजकर पुलीस को बुलवाया है। हो सकता है, यह सब मुझे फाँसने के लिए किया गया हो!"

"मैं भी यही सोच रही थी।"

"अच्छा, वो उस तरफ'''वो जो रोहिड़े और लेसुए के गाछ हैं, मैं उनमें छिपकर यह मेला देखता हूँ। तुम चुपचाप जाओ यहाँ से और''' जरा सिराम को उधर भेज देना।"

धुबी बिना विलम्ब किये टीले की ढलान में डुबकी लगा गया।

कम्प में तनाव था। नया थानेदार, चौदह सिपाहियों की टुकड़ी साथ लेकर आया था और इग्यारसीलाल के तम्बू में विराजमान था। कम्प के वासी किसी-न-किसी बहाने से उसके आसपास मँडरा रहे थे कि असल बात का पता लगे। पुलीस के अचानक आ टपकने से वे अस्त-व्यस्त हो उठे थे।

फाटक पर पुलीस के घोड़े हिनहिना रहे थे और धरती को खुरों से खूँद रहे थे। सिपाही उनकी जीन उतारना चाहते थे किन्तु थानेदार ने मना कर दिया, "जल्दी ही लौटना है। मुझे वक्त गँवाना पसन्द नहीं।"

पुसपा बाई ने कड़ाह चढ़वा दिया था और हिदायतें बघार रही थी। मेहमानों के लिए हलवा बनेगा। पूड़ियाँ तली जायेंगी। पापड़ सिकेंगे।

जुगनी सिराम को ढूँढ रही थी और कम्प की हलचलों पर भी निगाह रखे हुए थी। मन के द्वन्द्व को व्यक्त कर पाना कठिन था— उसके लिए ही नहीं, औरों के लिए भी। गज्जी गुस्से में कुल्हाड़ी लेकर

लकड़ियों के एक गट्ठे पर पिल पड़ा था और चीर-चीरकर ढेर लगा रहा था। ज्यानकी काकी चक्की पीस रही थी। रह-रहकर हत्थे पर से उसकी मुठिया पकड़ छूट जाती थी। हद्दी को पुसपा बाई ने घोड़ों की खिलाई-पिलाई पर लगा दिया था। वह उनके थोबड़ों के आगे जोर-जोर से कुण्डे पटक रहा था।

इग्यारसीलाल उठकर पुसपा बाई के पास गया। वह एक डिब्बे को हिला-खनकाकर काजू निकाल रही थी, थाली में।

"यह थानेदार तो बड़ा बकबकिया है।"

"टुकड़ा डाल दिया ?" पुसपा बाई ने पूछा।

"हाँ, लेकिन लालच देखो इसका—इत्ते सिपाही घेरकर ले आया है। सबके हाथ में कुछ-न-कुछ तो देना ही पड़ेगा।"

"काफी रकम चली जायेगी। शुबो पर नजर रखना।"

"इत्ता खरचा तो होगा ही, कुछेक और लोगों को भी पकड़ा देना चाहिए, पुसपा बाई !"

"नहीं, अभी नहीं। कम्फ में बलवा हो सकता है। कोई मुझे बतला रहा था कि एक किसी कम्फ को तो वहाँ के···रहनेवालों ने ही लूट लिया। हमें होशियारी बरतनी होगी।"

जुगनी ने हद्दी को इग्यारसीलाल के डेरे से निकलते हुए देखा। जब वह सिराम से शुबो के लिए पूछताछ करने लगा तो जुगनी नजदीक गयी। बोली, "वो उस तरफ है।···" फिर सिराम को इशारा किया, "तुम्हें बुलाया है।"

"छुपना ठीक नहीं।" हद्दी बोला, "थानेदार बड़ा मजाकिया है, किसी का कुछ बिगाड़ेगा नहीं।"

"कुछ कह रहा था ?" जुगनी सशंकित थी।

"हाँ, बोलता था—मेरे लिए इंदस्तान-पखेस्तान बराबर हैं। सब भाई-चारे के साथ रहो, कोई टण्टा खड़ा मत करो।"

"पुलीसिये शुरू में ऐसी ही चिकनी-चुपड़ी बातें करते हैं, बाद में बदल जाते हैं।"

"हाँ, वो तो किसी तरह फाँसना चाहते हैं।" सिराम बोला।

"सिपाहियों को भी उसने कहा कि कम्फ में किसी को तंग मत करना, नहीं तो खाल खींच डालूँगा।" हद्दी जो सुन चुका था, वही उगल रहा था।

"सुबो की शिकायत हुई है क्या ?" जुगनी ने पूछा।

"सुबो की क्यों शिकायत होगी पुलीस में ?" हद्दी हड़बड़ाया।

"कर दी होगी किसी ने।"

"थानेदार ने तो कुछ नहीं कहा अभी तक।"

"तुम जाओ, वहाँ…" जुगनी ने सिराम की तरफ भौंहें हिलायी। वह सावधान-सा चला गया। जुगनी ने हद्दी से कहा, "थानेदार के बहकावे में न आना। तुम भोले हो। जान लो…यह हलवा-पूड़ी जिसके खरचे पर बन रही हैं, थानेदार उसी की डोर पर नाचेगा।"

"लेकिन सुबो की…इग्यारसीलाल और पुसपा बाई के साथ खटपट तो है नहीं। उन्होंने उसको भण्डारे की रखवाली का काम सौंप रखा है।"

"वे अन्दर से खिलाफ हैं।"

"क्यों ?"

"सुबो ने कम्फ में भरती बढ़ा दी। वो लोग ऐसा नहीं चाहते हैं। पहले से ज्यादा नाज रोज निकल जाता है।…और भी बातें हैं।"

"हाँ, एक बार सुबो मुझसे भी कह रहा था कि पुसपा बाई तो नाज को बचाने की फिकर में रहती है, जिससे उसका सौदा कर रकम गाँठ सके।"

"यहाँ इसमें हरलो की भी कोई चाल लगती है।"

"लेकिन—हो सकता है, थानेदार हमारा साथ दे।"

"तुम क्या दोगे उसे घूस में ?"

'घूस-फूस कहाँ से आयेगी ?" हट्टी हतप्रभ हुआ।

"तो उम्मेद छोड़ दो। बुलानेवालों ने उसकी जेब गरम कर दी है।'

हट्टी ऊपर-नीचे होंठ चुबलाता हुआ सोचता रहा।

"जाओ, तुम भी गुवो के साथ सलाह कर आओ। लेकिन, जल्दी लौटना।" कहकर जुगनी ने इधर-उधर देखा फिर ज्यानकी काकी के साथ नाज की पिसाई के लिए बैठ गयी।

एक गिरज-गिद्ध अपने काले-डरावने पंखों को फड़फड़ाता हुआ ऊपर से निकला और सरकण्डों के झुण्ड की ओर चला गया। वहीं एक ठूह पर बैठने से पहले वह देर तक उड़ान मारता रहा, फिर उसके पंजे आकड़े की टहनी में चिपक गये। टहनी झूलकर रेत से लग गयी।

सात चिकने रंगीन पत्थर इकट्ठे कर बाशिया सगुन ले रहा था। यह विद्या उसने गोदारी में सीखी थी। जब बिपदा आये, पत्थरों की बात सुनो। वह उन्हें हवा में उछाल रहा था। पत्थर अक्कास की बानी पकड़ लेते हैं और भविस-काल का हाल-हवाल बना देते हैं।

कम्प में चक्कर काटते हुए एक सिपाही की कमरपेटी में कई छोटी-छोटी थैलियाँ लटक रही थीं। वह उन्हें हिलाता, कमर मटकाता, धुएँ के छल्ले बनाता ऐंठ रहा था।

"हरामखोर, कैसे कल्हे भिड़ा रहा है।" ज्यानकी काकी ने पीतल की नथ को अँगुली में घुमाया-फिराया, "मुंह में क्या डाल रखा है इसने ?"

"सिकरेट है।" जुगनी बोली, "सफेद कागद की बीड़ी होती है यह।"

"पुलीसिये ऐसे ही नखरेबाज होते हैं।"

गोदारी लगभग दौड़ती हुई आयी, "बछराज की हालत उखड़ गयी है।"

सभी पुसपा बाई और इग्यारसीलाल लपकते हुए-से बछराज के तम्बू में चले गये। उनके पीछे-पीछे मोटे मकड़े-सा थानेदार। वरदी-टोपी, ओजार-पाती, बन्दूक-फन्दूक को मुश्किल से सँभालते हुए।

थोड़ी देर में वहां कम्फवालों की भी भीड़ लग गयी।

"वो···बछराज के डेरे पर क्या खेला हो रहा है ?" गज्जी ने कुल्हाड़ी चलाना रोककर फूलकी से पूछा।

फूलकी देर से मुंह फुलाये कम्फ में फेरी लगा रही थी। दो-चार बार उसने गज्जी से मीठे-मीठे बतियाना चाहा था, पर उल्टे झिड़की खाने को मिली। गज्जी को न मालूम क्या गुस्सा आ रहा था कि धचाधच्च लकड़ियां चीर-फाड़कर फेंके जा रहा था।

फूलकी ने नाक चढ़ा ली। जवाब नहीं दिया।

"ये···हुलिया को हँडिया क्यों बना रखा है तूने ?"

"इत्ता ओछा मत बोल।"

"मेरा मगज ठीक नहीं है।"

"कभी रहता भी है ?" जुगनी बोली, "बछराज की तब्बेत बिगड़ गयी है।"

"बाड़मेर से बैद की दवाई मँगायी थी न—"

"असर नहीं हुआ उसका।"

"सुवो को देखा कहीं ?" गज्जी के प्रश्न में गहरी व्यग्रता थी।

"नहीं।"

"तो फिर···यूं ही चूंचियां उछालती रपड़ रही है तू ?" वह भन्ना उठा।

"मेरी चूंचियां बुरी लगती हैं तुम्हें ?" फूलकी ने तमककर कहा, "मौका लगते ही तो तू वहीं हाथ मारता है।"

"दिमाक मत चाट मेरा।"

"वा-वाह रे, दिमाकवाले !"

"लाड़ में ज्यादा इतराने लगी है तू ?"

"मुझे नहीं चाहिए तेरा लाड़-वाड़। इत्ता ठस्का ! ऊंह ! भत्तेरे मिलेंगे जिनगी में।"

"मैं कब कहता हूं कि तुम्हें कमी रहेगी। सुवटी को भी तो भत्तेरे मिल गये है।"

"नाम मत ले उसका।"

"क्यों न लूं ? तेरी ही भैण है।"

"आग भर दूंगी मै तेरे और उसके मुंह में।"

जुगनी ने आकर टोका, "किस बात पे झगड़ा हो रहा है ?"

फूलकी रोनी-रोनी हो गयी, "पहले बोलता था, तुझमें नात्ता करूंगा। अब कहता है, भत्तेरे यार मिल जायेंगे, पकड़ ले किसी का हाथ !"

"मैंने हाथ पकड़ने के लिए नहीं कहा।" गज्जी ने सफाई दी।

"तो, क्या-क्या कहा था तुमने, फिर बोलकर बताओ। मरद की बात और टिड्डे की वात। चित भी मेरी, पट भी मेरी।"

"इसमें लड़ा मत कर, गज्जी !" जुगनी ने फूलकी का पक्ख लिया। उसी समय उसने सिराम को अपनी तरफ आते हुए देखा।

"गुवो वहां तो नही है।" सिराम का चेहरा चिन्ता में सूख रहा था।

"नहीं है ? वहीं के लिए ही उसने कहा था, मुझसे।"

"मैं तो और भी दूर-दूर तक देख आया।"

"पांवों के निशान भी नहीं मिले ?"

"निशान तो थे रेत पर। लेकिन—उनसे कोई अन्दाजा नहीं हुआ।"
"कहाँ गया होगा वो ?"
"उत्तरा भाँप के किसी और जगा चला गया हो स्यात—"
"शुवो इस तरह डरनेवाला नहीं है।"

"हाय रे, बच्छू ! अरे, तू चला गया रे, बच्छू !" अचली का हाहाकार समूचे कम्फ में थरथरा उठा।

बछराज के तम्बू के सामने खड़ी हुई औरतें फफक-फफककर रोने लगीं।

जमाल आँखें पोंछता हुआ बाहर आया, "प्रान छोड़ दिये उसने..."

जमाल की बीनणी गोद में बच्चा सँभाले आँसू गिराने लगी। उसके बच्चे के जनम पर बछराज ने कम्फ भर में गुड़-भेली बाँटी थी। बाद में जमाल को बुलाकर नगद दो रुपैये भी दिये थे। कहा था, मेरी तरफ से जच्चा को दे देना चाहिए। जच्चा रानी का मान सबको रखना चाहिए।

ज्यानकी काकी रुँधे गले से बोली, "अचली ने बेम्मारी में बहोत सेवा की। बछराज का गू-मूत तक साफ करती थी। ईस्सर फल देगा उसको..."

जार-जार रोती हुई और दाँतों से ओढ़नी चबाती हुई अचली तम्बू से निकली और जमीन पर गिरकर तड़पने लगी।

जुगनी ने पास जाकर सँभालना चाहा तो वह चीख मारकर ढह गयी, "अरे-रे-हो, अब मैं क्या करूँ, मैं तो कहीं की न रही—"

"क्यों इत्ता फैल मचा रही हो ?" जुगनी से सहन नहीं हुआ।

"अरे दुरभागण, एक बार जाके तो देख ले उसे। तेरा बाप था वो—" अचली बिसूरने लगी।

"जबसे होश सँभाला है, जने-जने के लिए तुमसे यही सुनती आयी हूँ—यह तेरा बाप है, वह तेरा बाप है, इसको बापू मान, उसको बापू

बोल ! गिनना ही भूल गयी मैं तो, जाने कित्ते बाप हो गये मेरे।"

"मेरे जले पर नमक छिड़क रही है तू ?" अचली ने आह भरी और सुर्ख, घायल आंखों से बेटी को देखा, "जा, जाके वहां एक दफे उसका चेहरा देख ले। तूने मेरी कोख से जनम लिया है। तेरी मां हूं मै। मैं कह रही हूं, वो तेरा बाप था। जुगनी, और सब तो शरीर में साझीदार थे। जब तक रस मिला, साथ रहे। लेकिन मुझ जैसी कल-मुखी के साथ ब्याह तो बछराज ने ही किया था, सुहाग तो उसी ने दिया था मुझे। तेरे आगे हाथ जोड़ती हूं, तू अपने बाप को देख ले। आज के बाद वो चेहरा नजर नहीं आयेगा—"

जुगनी जाने क्या सोचकर तम्बू की तरफ चल पड़ी, धीमे-धीमे। और, वहां तक पहुंचने से पहले ही उसके मुंह से रुलाई फूट पड़ी। उसके भीतर एक नन्ही-सी बच्ची हाथ फैलाकर चीत्कार करने लगी, "बापू-ओ-बापू रे हो···"

०

सूरज ढल रहा था। थानेदार मैदान में आकर चिल्लाया, "इग्यारसी-लाल !"

इग्यारसीलाल भागता-पड़ता आया।

"भोजन तैयार हो गया ?"

"हलवा पक चुका है। बस, पूड़ियाँ बन रही हैं।" उत्तर पुसपा बाई ने दिया।

"जो भी तैयार हो, सिपाहियों को झटपट खिला दो, तुरन्त। फिर, लाशों को भी तो जलाना-निपटाना है। शाम से पहले यह सब हो जाना चाहिए।"

"लाश की चिन्ता न करें, थानेदारजी···" पुसपा बाई ने कुछ और भी कहना चाहा, पर थानेदार ने बीच में ही बात लपक ली, "मुझे मौत-वौत बहुत खराब लगती है।"

"बछराज कई दिनों से बीमार था। पीलिया हो गया था।" इग्यारसीलाल बोला।

थानेदार ने हाथ मले, "मैं तो यह सोचके आया था यहाँ कि चलो, सैर-सपाटा रहेगा, सफरी हो जायेगी, लेकिन—" उसने बदरू के कन्धे पर अँगूठा नचाया, "क्या नाम है तेरा ?"

"बदरू—"

"अच्छा, बदरू ! गला तर करने के लिए क्या है यहाँ ?"

"भिस्की ले आऊँ ?" बदरू ने डरते-डरते पुसपा बाई की तरफ

देखा। उसने हां में सिर हिलाया।

बोतली खोल दी गयी। थानेदार उसे हाथ में उठाये मांची पर बैठ गया।

"खूब घूमा हूं मैं। आबू की पहाड़ियों में। कोटा के जंगलों में—" उसने कई घूंट गटागट लिये और भौंडे ढंग से मुस्कराया, "एक दफा पुलीस के जलसे में जैपुर गया तो वहाँ चांदपोलवाली जरीना बेगम मर मिटी मुझ पर।...आमेर की झील में मैंने ऐसा तैरना सीखा कि हफ्ते भर तक तैरता ही रहा। दोस्त निहोरे निकाल-निकालकर थक गये—अब बस करो, बाहर आ जाओ, ठण्ड लग जायेगी। मैंने किसी की न सुनी। आलथी-पालथी मारकर झील के मँझ में पड़ गया।"

"अघोरी जोगियों की तरह!" इग्यारसीलाल खुशामद में हँसा।

"ठीक कहा तुमने। जरीना बेगम को पता चला तो वो पगला गयी। कोठे के मुजरे को बीच में छोड़कर आमेर पहुंची और झील के किनारे खड़े होकर मुझे दुहाइयां देने लगी। आखिर में उसने धमकी दी कि अगर तुम तुरन्त बाहर नहीं नकले तो मैं यहीं चट्टान से सिर फोड़कर मर जाऊंगी। मेरा कलेजा बैठने लगा। अगर जरीना बेगम मर गयी तो जैपुर उजड़ जायेगा। मैं तैरता हुआ किनारे आ लगा और उस गुलबदनी ने मुझे छाती से लगा लिया। छाती से, क्या समझे?"

उसने बदरू की खोपड़ी तबले की तरह बजा दी। वह सिटपिटा गया।

"जरीना बेगम किसी को अपने लहँगे की किनारी तक नहीं छूने देती थी। राजा-महाराजा तरसते थे। लेकिन मुझ पर तो वो कुरबान हो गयी। कहती थी—मरद हो तो ऐसा, सूरमा हो तो ऐसा, जो जिद पर अड़ा रहे और सिर्फ अपनी प्यारी की बात माने। आहाँ-हाँ, तो यह भिस्की-फिस्की मुलतान की लगती है। एकदम्म नसों में कशीदा बुनने लगी है।"

"मुलतान की ही है।" पुसपा बाई बोली, "पसन्द आयी न?"

"पसन्द तो आयी, लेकिन मुलतान का माल यहाँ कौन लाया?" सवाल

फेंककर थानेदार ने आँखें चलायीं। पुसपा बाई और इग्यारसीलाल के चेहरों का रंग फीका पड़ गया।

"मैं सब समझता हूँ। मुझसे कुछ छुपा नहीं।" थानेदार ने होंठ चाटे।

बछराज के तम्बू से औरतों और बच्चों के रोने की आवाजें आ रही थीं।

सिपाही एक पंगत बनाकर खाने के लिए बैठ गये थे।

थानेदार का बखान चलता रहा। सूरमाई के कारनामों से ठसाठस। पुसपा बाई एक कटोरे मे उसके लिए भी हलवा ले आयी। वह नीम्र करते खच्चर की तरह टाँगें चौड़ी कर खड़ा हो गया और होंठों से चिप-चिप-चिप करता हुआ गरम-गरम हलवा हड़फने लगा। नाक को कभी हथेली, तो कभी आस्तीन से पोछते-फिफोड़ते उसने कटोरा खाली कर दिया और जोर से बोला, "अभी तो शुरू किया है। देखना, दस कटोरे हलवा भकोस लूँगा तब छोटी-सी डकार आयेगी। मेंहदी खाँ पहलवान से होड़ जीत चुका हूँ मैं। वो खीर का मामला था। चार सेर खीर के बाद स्साला कान पकड़कर तौबा-तौबा करने लगा।"

साँझ सिमटने लगी। कम्प मे मनहूसियत छायी हुई थी।

जमाल ने पुसपा बाई से पूछा, "ल्हाश के कफन का क्या होगा?"

पुसपा बाई ने धीमे-से इग्यारसीलाल को हिदायत दी, "बछराज के तम्बू में खाट के नीचे एक बक्सा पड़ा है। उसका ताला तोड़ लो। कोई कपड़ा-लत्ता जरूर मिल जायेगा।"

जमाल और इग्यारसीलाल जाने लगे तो थानेदार कुत्ते की भाँति कान फड़फड़ाकर गुर्राया, "क्या माजरा है?"

"कुछ नहीं।" पुसपा बाई खिसिया गयी, "कफन के इन्तजाम के बारे में—"

"वो ताला-वाला तोड़ने की क्या बात थी?"

"वछराज के एक वक्से को खोलना है—"

"सुन लो, पुमपा वाई ! जब थानेदार सामने बैठा हो तो कानून को अपने हाथ में लेने की गलती नहीं करनी चाहिए। यह उसूल की बात है—यहाँ मैं एम्पी और मिनिश्टर को भी घराता नहीं। क्या बिगाड़ लेंगे वो मेरा ?" उसने आँखें निकालीं और दाँत बजाये, "सब फोकटिये होते हैं। चुनाव का वक्त आता है तो मेरी पतलून में हाथ डालने लगते हैं, चन्दा माँगते हैं। मैं मदद करता हूँ उनकी। लेकिन मेरे पास अलादीन का चिराग तो है नहीं, मैं भी जनता से ही वसूलता हूँ। कोई वारिस है वछराज का ?"

"नहीं, उसके आगे-पीछे कोई नहीं।" पुमपा वाई बुझी-बुझी बोली।

"तब तो वछराज की चीजों पर सरकार का कब्जा हो गया, पक्का। बक्सा खोलूंगा तो मैं ही खोलूंगा।" थानेदार ने मुंह गोल-गुम्मा कर आवाज लगायी, "छत्तूसिंग, नत्तूसिंग, आशूराम, टेशूलाल, सरपचन्द।"

पाँच सिपाही गिरते-पड़ते आये। ठूंठ की तरह अकड़ते हुए, पैर पटक-कर, हाथ उठाकर उन्होंने सलामी दी।

"मरनेवाला तो माटी हो गया अब। हम सबको भी मरना है, एक दिन। लेकिन जब तक जीना है, फरज पूरा करना है। तुम लोग वछराज के डेरे की तलाशी ले लो। सारा सामान थाने ले चलना होगा। अलबत्ता, कफन का एक कपड़ा अलग कर देना।"

सिपाही फिर जकड़बन्द हुए और पलटकर चले गये।

कम्प के पच्छिम में आधे कोस के फासले पर वछराज की चिता लगाने का निश्चय हुआ। जब लाश की टिकटी चलने लगी तो कम्प बहुत भुतहा-भुतहा और भयावना लगने लगा। बदरू अरथी के पीछे हो लिया। इग्यारसीलाल ने पीछे से उसके ठोकर लगायी, "अक्कल कुन्द हो गयी है तुम्हारी ? थाने की इतनी बड़ी पाल्टी आयी हुई है और तुम मुरदा

जलीन जा रहा है ! उसकी देखभाल कौन करेगा !"

बदरू मियाँ जमीन में गड़ा-गड़ा-सा रुक गया।

सुवटी एक तरफ खड़ी थी। कुछ रहस्यमय ढंग से इग्यारसीलाल जब उसके समीप से गुजरा तो वह फुसफुसाकर बोली, "शुबो को—"

इग्यारसीलाल चौंका। हकबकाकर उसने आसपास देखा। कोई नहीं था। सुवटी फिर बोली, "अब बेफिकर रहो।"

"अच्छा!" इग्यारसीलाल का तनाव दूर हो गया।

"चलो, हरलो से मिल लो।"

"कहाँ है?"

"मेरे पीछे-पीछे आओ।"

चार-छह टीले लाँघने के बाद हरलो से भेंट हुई। उसने मिलते ही इग्यारसीलाल की बाँह कसकर पकड़ ली, "बोलो, अब तो खुश हो?" स्वर में प्रसन्नता की खनक थी।

"हाँ! तुमने काँटा निकाल दिया। लेकिन यह थानेदार—"

"थानेदार को तो मैंने ही बुलवाया है। अपना आदमी है।"

"बड़ी बक-बक कर रहा है।"

"करने दो। आदत है उसकी।···इन लोगों को भी तो कोई काम चाहिए। मैंने उससे कम्फ की तलाशी के लिए कह दिया।"

"तलाशी लेगा?" इग्यारसीलाल शंकित हो उठा।

"बस, वह आ गया तो समझो, तलाशी हो गयी। राजकाज इसी तरह चलता है।"

"कितना देना पड़ेगा? बछराज का माल-मलीदा तो उसने अपने कब्जे में कर ही लिया।"

"बछराज के पास था भी क्या?···तुम खुश करके भेजना पुलीसियों को। इन लोगों का मुँह भरते रहना चाहिए।"

कम्फ में लौटकर इग्यारसीलाल जोर-शोर से थानेदार की सेवा में लग गया। सुवटी वहीं रह गयी थी। शुबो का तो टंटा खतम हुआ,

सोचकर इग्यारसीलाल को फुरहरी-सी आयी, हरलो चालाक है और निपटना जानता है। ऐसा मौका चुना कि किसी को कतई शक नहीं होगा। थानेदार पर बात डालकर छुटकारा ले लेंगे।

"इस इलाके में जिन्न का बड़ा कोप है।" इग्यारसीलाल ने थानेदार के पास बैठक जमाते हुए बात छेड़ी, यह सोचकर कि भूत-प्रेत की चरचा जब चल पड़ती है तो खूब चलती है।

"जिन्न ?" थानेदार उछला, मानो किसी ने अंगारे से छू दिया हो, "जिन्न आता है यहाँ ?"

"हाँ, अक्सर। परेशान कर रखा है उसने, हम लोगों को।"

"कैसा जिन्न है ?" थानेदार ने वर्दी के नीचे पसीने के धारे महसूस किये।

"कई लोगों ने देखा है। पेड़ की तरह लम्बा है।"

चौतरफ के पेड़ों पर थानेदार ने इस तरह निगाह डाली, जैसे उनमें से ही कोई जिन्न हो।

"जिन्न का मालूम होता तो मैं यहाँ आता ही नहीं।"

"राज की नौकरी में डिउटी तो बजानी ही पड़ती है।"

"डिउटी गयी भाड़ में ! उसके लिए अपनी जान खतरे में डालूँगा क्या ?"

"पुराने थानेदार को भी एक जिन्न ने ही संकट में डाल दिया था। ऐसा जोरदार थप्पड़ मारा कि बेचारे छह महीने तक सन्निपात में रहे। इतने डर गये कि उन्होंने तो यहाँ से बदली ही करवा ली अपनी।"

"तुम मुझे डरा तो नहीं रहे हो ?" थानेदार की जुबान लड़खड़ा रही थी और आँखों की पुतलियाँ तिनिर-बिनिर हो उठी थीं।

"किसी से भी पूछ देखें। मैंने तो यों ही चरचा छेड़ दी थी।"

"मैं भुगत चुका हूँ, खुद। इसलिए, ऐसे मामलों से सावधान रहता

हूँ। नापासर में था, तो एक रात को मेरे घर में पत्थर बरसने लगे—"

"बदमाशों ने शरारत की होगी—"

"उल्लू हो तुम। गुण्डे-बदमाश तो थर-थर काँपते थे मुझसे, उनकी क्या मजाल! बाद में पता चला कि किसी प्रेत का वासा था वहाँ।"

थानेदार घबराकर चुप हो गया। थोड़ी देर तक कोई न बोला।

पुसपा बाई आयी। बोली, "तलाशी का काम अभी शुरू करेंगे या सुबह?"

"हो गयी तलाशी।" थानेदार बड़बड़ाया, "मुझे तो मुसीबत में डाल दिया तुम लोगों ने।"

पुसपा बाई ने इग्यारसीलाल की तरफ देखा। वह सिर झुकाये जमीन ताक रहा था।

"मुझे तो रात को ही लौटना होगा, कोतवाली में।" थानेदार के स्वर में मक्खियाँ भिनभिना रही थीं, "सिपाहियों का खाना हो गया?"

"हाँ। वो सब आराम कर रहे हैं।"

थानेदार मरा-मिटा-सा चिल्लाया, "छनूसिंग, नेतूसिंह, आशूराम, टेगूलाल, सरपचन्द!"

सिपाही भागते-भागते, आलस उधेड़ते, कदम-ताल बजाते, धूल उड़ाते आये।

थानेदार बोला, "घोड़े तैयार करो। अभी चलना होगा। रात को हम यहाँ नहीं ठहरेंगे।"

सिपाही मायूस होकर पलट पड़े। उनके लिए कम्प के दौरे का मतलब था, बढ़िया भोजन और औरत का स्वाद। भोजन से तो मन तिरपत हो गया, लेकिन औरत से तन का तिरपत होना बाकी था। वे लार सुड़कते हुए रात का इन्तजार कर रहे थे और तब तक अपने लिए औरतें ढूँढ़-चीन्ह रहे थे।

"कमाई-धमाई कैसी चल रही है?" थानेदार मुद्दे पर आया।

"कुछ खास नहीं।" पुसपा बाई ने कहा, "कैम्प में खुराफाती लोग

हैं। बात-बेबात टाँग अड़ाते हैं।"
उनसे झगड़ा मोल मत लेना, नहीं तो—खैर, किसी ने ज्यादा
की तो हम ठीक कर देंगे।···तुम्हें यह तो मालूम होगा ही कि
दनी में से एक हिस्सा थाने का होता है।"

"आमदनी यहाँ क्या होती है—"

"बनो मत, पुसपा बाई! मैं तो चोर-डकैतों तक से हिस्सा वसूल
र लेता हूँ—और···जैतपालसिंग के साथ तुम्हारे सनमन की बात भी
मुझे मालूम है। वो मर गया, लेकिन तुम राजनेत्ती में जरूर जाओगी,
मुझे तुम्हारी लियाकत पर भरोसा है।···हमसे मेल करके रहो। अभी
तुम हमें हिस्सा दो, जब मिनिश्टर बन जाओगी तो हम तुम्हें बाक्कायद
हिस्सा देंगे। यह लेनदेन तो बना रहेगा।"

पुसपा बाई और इग्यारसीलाल ने कुछ देर के लिए अलग बातचीत
की। फिर वे थानेदार को लेकर डेरे के अन्दर चले गये।

जब पुसपा बाई के तम्बू से बाहर आया तो थानेदार बहुत प्रसन्न था।
बिना झिकझिक के उसने अच्छा-खासा हाथ मार लिया था। लेकिन—
तभी उसने हवा के तेज झपाटों का शोर सुना। पेड़ों की डालियाँ ब
रही थीं।

थानेदार के लिए अगली साँस लेना कठिन हो गया। उसे लगा
अँधेरे की आवाजों में लहराता हुआ···जिन्न का थप्पड़, अब आया
चेहरे पर पड़ा। उसका जी मिचलाने लगा और फिर उसने होख-
करते हुए वहीं क़ै कर दी। सब खाया-पिया उलट दिया।

बदरू भागकर पानी लाया। इग्यारसीलाल ने लपककर थाने
पीछे से पकड़ लिया और गिरने से बचाया। मुँह धोने और कुल्
के बाद थानेदार फटी-फटी आँखों से अन्धकार को घूरने लगा
खोले हवा को निगलते हुए बोला, "मु-मुझे···मेरे घोड़े तक ले च

दो सिपाहियों ने सहारा देकर और पागड़े पकड़कर थानेदार को घोड़े पर बिठलाया। उसकी हँफनी चढ़ी हुई थी।

झपट्टे देती हुई रेत के बगूले इतनी तेजी से आये कि सहसा उन्होंने उन सबको ढँक दिया। इसी बीच तर-तर-तरड़-तर की एकतान आवाज सन्नाटे में गूंजने लगी।

"यह···कैसा शोर है ?" थानेदार का बेजान स्वर फूटा।

"टेशूलाल का घोड़ा···मूत रहा है, हुजूर !" पास खड़े सिपाही ने उत्तर दिया।

"चूतड़ ठोंक दो उस घोड़े के···और टेशूलाल के भी। स्साली कैसी अपसगुनी-सी आवाज है !"

रागामों की कड़ियाँ खड़काते और टापें फटकारते हुए घोड़े चल पड़े।

"मेरा घोड़ा बीच में रखो, हरामजादो !" थानेदार की भयमिश्रित डाँट सुनायी दी। फिर घोड़ों की हिनहिनाहट और खड़बड़-खड़बड़ दूर होती गयी।

"सूअर का बच्चा !"

पुसपा बाई ने अँधेरे में जोर से थूका। छींटे उछलकर इग्यारसीलाल को लगे। वह मन में घिनघिनाता हुआ परे हट गया। बोला, "ये पुलीसिये बड़े कमीने होते हैं !"

"सब कुछ ले गया, माँ का यार ! कैम्प में मरें-खपें हम, दिन-रात कष्ट झेलें और मुशकिल से कुछ बचत हो तो ये सरकारी चूहे चट कर जायें !" पुसपा बाई खीज-खिजला उठी। तभी उसने किसी की रुलायी सुनी। चिढ़कर बोली, "इस बेला···यह किसने रोना-धोना मचा रखा है।"

"अचली है।" बदरू ने डरते-डरते कठिनाई से होंठ खोले।

"केसर-कस्तूरी ले आओ। यहीं पर। यों थूथनी उठाये मुझे क्या देख रहे हो !"

बदरू तम्बू में गया तो इग्यारसीलाल बोला, "शुंबो कीं बात थानेदार पर डालनी होगी। तब कम्फवालों को शक नहीं होगा। हरलो ने यही सुझाया है—"

"अच्छा !" केसर-कस्तूरी का पीपा सामने आते ही पुसपा बाई ने लोटा भरा और गटागट पी गयी। नाक सिकोड़कर बोली, "यह बदबू किस चीज की है ? देख तो बदरू !"

"वो थानेदारजी ने···यहीं पर उल्टी की थी।"

"कंजर की औलाद, जब मैं यहाँ बैठ रही थी, तभी तुमने क्यों नहीं बताया !" बदरू की खसखसी दाढ़ी पकड़कर पुसपा बाई ने चटाचट् चाँटे जड़ दिये। फिर गुस्से में उबलती हुई लातें बरसाने लगी। बदरू औंधे मुंह धूल में गिर गया और निर्जीव-सा पड़ा रहा।

"तेरी वजह से तो मेरा जीना मुश्किल हो गया है। पीनें का सारा मज्जा किरकिरा कर दिया—"

घुबो को थानेदार पकड़ ले गया ! दूसरे रोज कम्प में ज्यों हीं यह समाचार फैला, मुर्दनी छा गयी। चेहरे काठ हो गये। जीवन में थकान, उदासी और जर्जरता के छर्रे खुभ गये। और, किसी के पास जैसे कहने-सुनने के लिए कुछ नहीं बचा।

इसी तरह तीन दिन बीत गये।

सांझ उतर चुकी थी। ज्यानकी काकी बाटियां सेंकते हुए जुगनी से वतलावन कर रही थी। दोनों के बाहर-भीतर अवसाद, क्षोभ और असमर्थता का रोम-रोम चींथता हुआ बोध।

"पुलीसिये अब घुबो को साबुत नहीं छोड़ेंगे।" ज्यानकी काकी ने उसांस भरी, "काना-खोड़ा बना डालेंगे उसे कोतवाली में। वो...ऐसा ही करते हैं।"

"काकी, घुबो तो उधर गया था।...पेड़ों की उस आड़ में। फिर सिराम और हद्दी मिलने गये तो वहाँ मिला नहीं। अचानक कहाँ गुम हो गया वो ? पुलीस तो—" जुगनी धीरे-धीरे बोल रही थी।

"तुम्हें पुलीसियों के जाल का पता नहीं। थानेदार ने कुछ सिपाहियों को निगरानी पर रख छोड़ा होगा। उन्होंने जब घुबो को अकेला देखा तो धर-दबोच लिया होगा। जुगनी, बड़े जालिम होते हैं वो—"

"काकी, घुबो को पुलीस पकड़कर नहीं ले गयी।" हद्दी नजदीक आकर बैठ गया और फुसफुसाने लगा, "बदरू ने बाघिया को बतलाया है।"

बदरू और बाघिया में खूब पटती थी। बाघिया जब-तब खेलता हुआ

वदरू तम्बू में गया तो इग्यारसीलाल वोला, "सुभ...
...पर डालनी होगी। तव कम्फवालों को शक नहीं होगा। हरली ग...
...ी सुझाया है—"

"अच्छा !" केसर-कस्तूरी का पीपा सामने आते ही पुसपा वाई ने लोटा भरा और गटागट पी गयी। नाक सिकोड़कर वोली, "यह वदवू किस चीज की है ? देख तो वदरू !"

"वो थानेदारजी ने···यहीं पर उल्टी की थी।"

"कंजर की औलाद, जव मैं यहाँ वैठ रही थी, तभी तुमने क्यों नहीं वताया !" वदरू की खसखसी दाढ़ी पकड़कर पुसपा वाई ने चटाचट चाँट जड़ दिये। फिर गुस्से में उवलती हुई लातें वरसाने लगी। वदरू औंधे मुँह धूल में गिर गया और निर्जीव-सा पड़ा रहा।

"तेरी वजह से तो मेरा जीना मुश्किल हो गया है। पीने का सारा मज्जा किरकिरा कर दिया—"

धुवो को थानेदार पकड़ ले गया ! दूसरे रोज कस्बे में ज्यों ही यह समाचार फैला, मुर्दनी छा गयी। चेहरे काठ हो गये। जीवन में थकान, उदासी और जर्जरता के छर्रे खुभ गये। और, किसी के पास जैसे कहने-सुनने के लिए कुछ नहीं बचा।

इसी तरह तीन दिन बीत गये।

साँझ उतर चुकी थी। ज्यानकी काकी बाटियाँ सेंकते हुए जुगनी से बतलावन कर रही थी। दोनों के बाहर-भीतर अवसाद, क्रोध और असमर्थता का रोम-रोम चीखता हुआ बोध।

"पुलीसिये अब धुवो को साबुत नहीं छोड़ेंगे।" ज्यानकी काकी ने उसाँस भरी, "काना-खोड़ा बना डालेंगे उसे कोतवाली में। वो···ऐसा ही करते हैं।"

"काकी, धुवो तो उधर गया था।···पेड़ों की उस आड़ में। फिर सिराम और हद्दी मिलने गये तो वहाँ मिला नहीं। अचानक वहाँ गुम हो गया वो ? पुलीस तो—" जुगनी धीरे-धीरे बोल रही थी।

"तुम्हें पुलीसियों के जाल का पता नहीं। थानेदार ने कुछ सिपाहियों को निगरानी पर रख छोड़ा होगा। उन्होंने जब धुवो को अकेला देखा तो धर-दबोच लिया होगा। जुगनी, बड़े जालिम होते हैं वो—"

"काकी, धुवो को पुलीस पकड़कर नहीं ले गयी।" हद्दी नजदीक आकर बैठ गया और फुसफुसाने लगा, "बदरू ने बाशिया को बतलाया है।"

बदरू और बाशिया में खूब पटती थी। बाशिया जब-तब खेलता हुआ

पास चला जाता था। और सारे दीन-जहान, धरती-आसमान के
पूछ-पूछकर उसे हैरान कर डालता था।

"बदरू ने कहा है?" जुगनी चौंक गयी।

"बदरू ग़लत बात नहीं करेगा।" ज्यानकी काकी बोली।

"हाँ, जब पुलीसियों की टुकड़ी वापस जा रही थी तो बदरू वहीं
था। उसने शुबो को वहाँ नहीं देखा।"

शक घर कर गया था मन में। जुगनी एक बार खुद जाकर बदरू से
पूछताछ कर आयी। बदरू सहमा हुआ था, किन्तु उसने बुड़बुड़ाहट औ
हाथ के इशारों से बता दिया कि शुबो को थानेवाले नहीं ले गये।

अब गुपचुप खोज शुरू हुई। सिराम, हद्दी, गज्जी और जमाल ही
नहीं, कम्फ के कई जने दिसा-मैदान करने और ईंधन बटोरने के बहाने
दूर-दूर तक उसे ढूँढ़ आये। इलाके में जो दूसरे कम्फ थे, वहाँ भी पत
लगा लिया गया। अकाल के मारे लोगों के जो गोट-के-गोट, भटक
हुए फिरते थे और जिन्हें किसी कम्फ में भरती नहीं मिली थी, उनमें भी
पड़ताल का सिलसिला आरम्भ कर दिया गया, हालांकि यह काम काफी
मुशकिल था। रोज जगह बदलनेवाले बेसहारा-बेजमीन मिनखों की टो
लेना, गाढ़े अन्धकार में अनिश्चित ढंग से चलते रहने की तरह था। फि
भी उस कम्फ के लोगों ने न हिम्मत से किनारा किया था, न उम्मीद से।

तल्लाब की खुदाई शुरू कर दी गयी थी। कम्फ से कुछ ही फासले
एक बड़े से थले को घेरकर चांक दिया गया और फिर रोज उसमें
फावड़ों की धम्माधम्म गूंजने लगी।

बछराज का सूना डेरा फिर आबाद हो गया। भुजंग-सी
चेचक के दानों से भरे चेहरेवाला एक सिर-मुंडा आदमी उ
रहने लग गया था। नाम था—रांवता। उसे कभी किसी
मुस्कराते हुए नहीं देखा था। हरदम ऊमड़ा-सूमड़ा सा वह कम

रहता था और पाँवों को इस तरह पीटता था, मानों उन पर चींवड़े चढ़ गये हों। तल्लाव की इसकीम को पूरा करने का जिम्मा उसी पर था। पुसपा बाई ने उसे ठीकेदार बना दिया था।

खुदाई चालू होते ही रावता एक मोटा लट्ठ उठा लेता था और उसे गर्दन के बीच से दोनों कन्धों पर टाँगकर मेंड़ पर बैठ जाता था। तिनकों से दाँत खुरचते हुए, खँखार-खाँसकर ढेर-सा बलगम थूकते हुए, मुँच्छड़ होंठों को दरकाते-चूसते हुए, वह लगातार पैनी आँखों से कम्फवालों को छलनी किये रहता था।

एक और तब्दीली हो गयी थी। नाज के भण्डारे की देखभाल सुवटी के सपुरद कर दी गयी थी। चाबियों का गुच्छा बजाती हुई वह निधड़क डोलती फिरती थी। उसके सिर के छोटे-छोटे बाल कानों पर पंखा झलते हुए-से फर्र-फर्र उड़ते रहते थे। डूंगर चढ़ गयी डोमनी, गावै आल-पताल। सुवटी ने भी राग अलापना और धौंस जमाना शुरू कर दिया। चूंकि हरेक के हिस्से के नाज का बँटवारा वही करती थी और कड़ा हिसाब भी रखती थी, इसलिए कम्फ में उसका रौब भनभनाने लगा। खुदाई के अलावा, उसने कुछ लोगों को दूसरे खटियल कामों में जोप-झोंक दिया था। ज्यानकी काकी, फूलकी और जुगनी को न केवल सुबह-शाम समूचे कम्फ की झाड़ू-बुहारी करनी पड़ती थी, बल्कि सबके लिए ईंधन बटोर-कर लाने का बोझा भी उन्हीं पर लाद दिया गया। सुवटी को भण्डारे के पहरे पर से हटा दिया गया। रात की चौकसी भी नये लोगों को सौंप दी गयी।

कम्फ में और भरती पर एकदम रोक लगा दी गयी थी। इग्यारसी-लाल लोगों की छँटनी के बहाने ढूंढता रहता था और मौका मिलते ही उन्हें बाहर निकाल फेंकता था। उसकी धमकियों ने सभी को आतंकित कर रखा था। सुवटी की शिकायतों पर तुरन्त अमल होता था। वह अब इग्यारसीलाल के ही डेरे में बस गयी थी, एक तरह से। लेकिन, दिन में अक्सर हरलो से मिलने चली जाती थी।

रोज भी सुवटी डेरे पर नहीं थी। इग्यारसीलाल ने ...
पास भेजा, "बोल देना छोकरी से, इसी बखत आ जाये। हीले-हवाले
र तो चेता देना, शाम से पहले-पहले कम्प छोड़ना होगा। बाहर जाके
ली भटकती फिरेगी तो सारा जोवन झाग हो जायेगा।"

बदरू के पाँव मन-मन भर के हो गये, तल्लाव की तरफ जाते हुए
जुगनी की हालत वह जानता था। शुवो के जाने के बाद से वह ऐसी कुम्ह-
गयी थी कि पहचान में ही नहीं आती थी। आँखें गड्ढों में धँस गयी थीं
और किसी के सामने उठती ही नहीं थीं।

कुछ सोचकर बदरू तल्लाव के किनारे खड़ा हो गया। खुदाई जोरों
पर थी। उसने हाथ हिलाकर अचली को बुलाया।

"क्या है?"

अचली धूल में सनी हुई सामने खड़ी थी।

बदरू अस्त-व्यस्त हो उठा। एकाएक कुछ कह नहीं पाया। फिर उसके
घरघराते हुए गले से निकला, "वो...इग्यारसीलाल बुला रहा है...
तुम्हें।"

अचली की आँखों में ललास के डोरे उभरे, तने और धुंधला गये
उसने ओढ़नी को झाड़ते हुए धीमे-से कहा, "हुम्म...अच्छा, चलो।"

वह तम्बू में घुसी तो इग्यारसीलाल करीब-करीब नंगा पड़ा
माँची पर। कमर में लुंगी थी, पर वह कमर तक ही उठी हुई
जाँघों में हाथ डाले वह कुछ तेल-सा चुपड़ रहा था। अचली उ...
के नखरे देखती रह गयी।

"हिमालै की जड़ी-बूटियों का तेल है यह।" इग्यारसीलाल ...
से उसी तरह पड़ा-पड़ा बोला, "इससे मरदानगी का जोर आ ...
कहाँ है वो तेरी छोकरी?"

छोकरी! यानी जुगनी। अचली के सामने बदरू का ...
चेहरा घूम गया। तो, इसने जुगनी को बुलाया था। रीस की ...
लपलपायी और असहायता से घिरकर ठण्डी हो गयी। उ...

आकार बहुत पुराना या और मन के जिस कोने से वह उठी थी, वहाँ ढेरों-ढेर राख जमी थी।

"जुगनी की तो मत खराब है।"

"मत खराब है ?" इग्यारसीलाल ने अपनी व्यस्तता के बीच पूछा।

"हाँ, माहवारी पर है वो।"

"अच्छा ? कब से ?"

"कल रात को हो गयी थी। तीन-चार दिन तो लगेंगे ही।"

अब इग्यारसीलाल ने अचली को देखा, ठीक से। बालों की काली पट्टियों के बीच गुनगुनाता हुआ-सा माथा, तीखी नाक, भरे-भरे गाल और होंठ।

"ठीक है, आज तू ही आ जा।"

"मुझसे मन भरेगा तुम्हारा ?" अचली अपने जूने शरीर में लौट गयी।

"तू मन भरेगी तो भरेगा।"

इग्यारसीलाल ने काँपते हुए हाथों से अचली को छुआ। वह उसकी गोद में ढह गयी। इसी तरह बार-बार ढहते और मरते जीवन निकल गया सारा, अचली ने सोचा। लेकिन'''जुगनी को बचाना है इस मूत के कीड़े से। और, उसने मूत के कीड़े को कसकर अपने में लपेट लिया। उसके हाथ'''उसके तमाम अंग यह सब करते-करते मँज गये थे। इग्यारसीलाल चकित रह गया। ऐसा सुख तो'''उसने कभी किसी औरत से नहीं पाया था। उम्र की ढलान पर ढलकते हुए उसके तन में नन्हे-नन्हे अंकुर उग आये और वह बेसुध-सा हो गया।

मुकटो वापस आयी तो उसने देखा कि इग्यारसीलाल और अचली आपस में गुँथे हुए सो रहे हैं। इग्यारसीलाल की नाक बज रही थी। गुस्से में काँपती हुई वह पलट गयी और भण्डारे के पास जा बैठी।

लेकिन—अचली जाग रही थी, अपने शरीर की तनतनाहट को समेटती हुई। इस तनतनाहट को वह कभी नहीं समझ पायी। कितने लोग पीछे छूट गये थे, बछराज मर चुका था, लेकिन अचली—एक

त को अपनी देह में रमाये जी रही थी और काम...
निचोड़कर क्या-क्या देख-जान रही थी !

रोज में ही कम्फ में यह बात फैल गयी कि अचली ने इग्यारसीलाल
रगोशिया बना लिया है और वह हरदम उससे चिपका-लगा रहता
पहले सिराम को, फिर हद्दी, गोदारी और बाशिया को कम्फ ...
ाल देने का मामला सुवटी ने बनाया । पुसपा वाई के कान भरे ।
तु उसकी एक न चली । अचली के कहने से इग्यारसीलाल ने किसी
कोई नुकसान नहीं होने दिया । सुवटी तमतमा उठी । उसने एक
दन इग्यारसीलाल से कहा, "ऐसा क्या जादू कर दिया है, उस छिनाल
ने तुझ पर !"

"कर दिया है ।" वह मसूढ़े फैलाते हुए बोला, "उसे जो लटके
झटके आते हैं, वो तुम्हारे पास नहीं ।"

सुवटी जल-भुन गयी ।

"जमराज की बावड़ी में पाँव डाले पड़ा है तू । कुछ तो शरम कर !"

"एक बार अगर अचली के साथ सो ले, तो जमराज भी लट्टू हो
जाये ।" इग्यारसीलाल इतना मस्त-मलंग होकर बोला कि सुवटी का रंग
उतर गया ।

ज्यानकी काकी उधर से गुजर रही थी । उसने उन दोनों की बात-
चीत सुन ली । जब सुवटी तिलमिलाती हुई तम्बू से बाहर आयी त...
उसने कोंच दिया, "तेरे साथ तो सदा यही बरताव होगा, नकटी !"

"बड़ी आयी ऊँची नाकवाली !" सुवटी ने हाथ नचाया, "तुझे...
मैं एक बेर गरम चिमटों से दगवाऊँगी ।"

"दगवा दे, दगवा दे, मुझे परवा नहीं । लेकिन अब तू किसका...
चाटेगी ? रावता का ?" नफरत से ज्यानकी काकी का चेहरा वि...
गया ।

गोदारी खींचकर ज्यानकी काकी को दूर ले गयी, "तू क्यों उसे चिढ़ाती है ? उसके सिर पर तो अगन सवार है। हे भगवान, कोई ऐसी-वैसी बात हो गयी तो !"

"भट्टी में गया तेरा भगवान !" ज्यानकी काकी फिर झल्लायी।

गोदारी की इन दिनों अजीब हालत थी। कैसे-कैसे डर उसे घेरे हुए रहते थे और वह सबको समझाती रहती थी, "दयान्ती से रहो, दयान्ती से। यहाँ तो पाली में भाँग पड़ी हुई है। पता नहीं, कब क्या हो जाये ? हे ईश्वर !"

उस रोज तल्लाव की खुदाई में जुते-खपे हट्टी यों ही धीमे-धीमे गुनगुनाने लगा था। गोदारी ने घबराकर उसके कोहनी मारी, "बावले मत बनो। यह क्या बेवखत का बेसुरा राग खेंचने लगे तुम। रावता सुन लेगा तो··· पता नहीं, कब क्या हो जाये !"

"क्या हो जायेगा ?" हट्टी नाराजगी से बोला, "हम हँसेंगे-गायेंगे भी नहीं क्या ? और, तुमने यह क्या तान छेड़ रखी है—मजे से रह, कुछ नहीं होगा।"

ज्यानकी काकी को लू लग गयी थी। छींक-पर-छींक। दस्त-पर-दस्त। आँखें कौड़ियों की तरह निकल आयी। चार रोज तक बुखार में तपती रही। सुवटी ने ऐसी साज-सँभार की कि उसके हिस्से का नाज देना ही बन्द कर दिया। बोली, "तल्लाव पर काम करेगी तो नाज मिलेगा। यों तो पड़ी-पड़ी ढोंग रचा रही है।"

गोदारी सपक-सपक करती हुई ज्यानकी काकी के पास गयी, "उठ, खड़ी हो ! लू-वू का क्या है, लगती ही रहती है। तू सुवटी को कुछ कहने का मौका ही क्यूँ देती है। उसने पुसपा बाई से चुगली कर दी तो ?···पता नहीं, क्या-क्या देखना है अभी, हे रामजी !"

रावता मोमाक्खियों का छाता तोड़ने पेड़ पर चढ़ा था। छाते में शहद निकालते समय उसने कम्बल ओढ़े रखी और बचाव का काफी जाब्ता किया, लेकिन फिर भी कुछ मोमाक्खियों ने उसे काट खाया। वह धड़ाम्-

र आ गिरा। चोट ऐसी लगी कि मुंह से खून का...
ा। कई रोज तक सूजा-सूजा मुंह लिये वह अपने तम्बू में पड़ा
म्फवालों को मालूम था, लेकिन कोई उसके हालचाल पूछने
ा। सिर्फ गोदारी ही बार-बार वाशिया को साथ लेकर उसके
जाती रही, तबीयत मालूम करने के लिए।

"ज्यादा उसकी लाँग में घुमोगी तो वह तुम्हें पकड़कर अपने बिछाव
डाल लेगा।" हद्दी ने कुढ़कर कहा।

"डाल लेगा तो क्या बिगड़ जायगा मेरा! इग्यारसीलाल ने भी
डाला है।...रावता जबरा जालिम है। उसकी आँखें देखी हैं तुमने?
हत्यारा लगता है। ऐसे कुमाणस को परसन्न ही रखना चाहिए। पता
नहीं, कब क्या..."

हद्दी हँसने लगा। गोदारी और भी सहम गयी। उसके कलेजे में
आशंकाओं के अस्पष्ट-से तार खिंचे हुए थे। कोई उन्हें अदृश्य ढंग से
टानता रहता था।

"तेरी लुगाई के माथे में डर का मकड़ा घुस गया है।" जमाल ने
कहा। गोदारी ने सिर झुका लिया।

"इसका दिल बहोत कमजोर है।" हद्दी ने गोदारी की बाँह को
धीरे से नोंचकर धकियाया, "किस सोच में पड़ी हुई है तू! जा, काम
कर।"

अन्धड़ तेज रफ्तार और रंग बदल लेता था।

दिन में लगता था, रैन नहीं...गाढ़ी-गाढ़ी धूप ही उड़ रही है
रात में, रात उड़ती हुई नजर आती थी, बकरे की खाल का दोवड़
हुए।

उसी उड़ती हुई रैण में कम्फ, एक मोटे-लद्धड़ गठड़े की
थरथराता हुआ-सा पड़ा था।

रावता कनपट्टे और गलमुच्छे सहलाता हुआ पुसपा बाई के तम्बू में बैठा था। लालटेन की मन्द रोशनी में वह दैत्यनुमा डील-डौल विचित्र परछाई छोड़ रहा था। तम्बू की छत तक जाते-जाते उस परछाई के सींग भी उग आये थे और मुंह जब-जब खुलता था, मगरमच्छ के जबड़े-सा भद्दा और लम्बा हो जाता था।

"तुम कित्ते साल कारा में रहे हो?" बिस्तर पर आलथी-पालथी मारकर बैठी हुई थी पुसपा बाई। गोद में दारू की बोतली और एक कटोरे में भुनी हुई मिर्च-मोमरी। वह सी-सी करती जाती थी और गहरे-गहरे घूंट गटकती जाती थी।

"डाके में पहले साढ़े चार बरस, फिर दुबारा फँस गया कत्तल में। उस बखत फाँसी की ही सजा होनी, लेकिन हरलो ने जुगत बिठायी और जेलवालों को चकमा देकर, अन्दर से निकाल लिया मुझे।"

"इसीलिए तुम हरलो को इतना मानते हो?"

"हाँ। वो साथी-संगातियों का ख्याल रखता है। लेकिन, चूक हो जाये तो बखसता नहीं।"

"गुवो वाला काम करके हरलो ने मुझे भी निसफिकर बना दिया।"

"आज आधी रात तक आयेगा वो।"

"मालूम है।"

"बोला है, नगदी भुगतान करेगा, पुसपा बाई चिन्ता न करे।"

"चिन्ता तो क्या···लेकिन उम्मरकोटवाले नाराज हो जायेंगे। अगले हफ्ते उनका आदमी पता लगाने आयेगा।"

"नाज के बारे में?"

"हाँ।···मालूम पड़ जाने पर वो चुप नहीं बैठेंगे।"

"यह तो है ही।"

"लालटेन मन्दी कर दो।"

रावता की इच्छा हुई कि कह दे, आज मन नहीं है। लेकिन पुसपा बाई की करखरी आवाज से डरता था वह, दिन एकदम टेढ़-तो नजर

झन-झिग-झिग झिंगुर बोल रहे थे। हवा और रेत में घुलकर
र जुलाहे के वेजे की झनझनी बन गया था।
फागुम्फी और चुम्माकाटी के बावजूद, रावता बार-बार अपने शरीर
से निकल-छूटकर परे-परे भागता रहा। एक ठण्डी चिपचिपाहट
ार-हजार जोंकें सिलबिलाने लगी थीं।

"तुम ऐसे क्या पड़े हो ?" पुसपा बाई गरमा रही थी, "भींच डालो,
डालो मुझे।"

तल्लामेल्ली में रावता के हाथ पुसपा बाई की गर्दन तक गये। दोनों
ों में तनाव आया। एक पल के लिए जी हुआ कि सचमुच मार डाले
ह, पुसपा बाई को—लेकिन···तभी उसे अपना-आप निचुड़ता और
ढीला पड़ता हुआ महसूस हुआ। नशे और तृप्ति में तपती हुई पुसपा
बाई के गीले होंठों पर उसने अपने होंठ रख दिये। रफ्तः-रफ्तः वह एक
अदीठ डोलची में फँसा हुआ अन्ध पाताल के तल में उतरने लगा।

कम्फ के छपरों-छाजनों पर अँधेरे की गिरफ्त कड़ी होती गयी। नींद के
अनहद आलम में अचानक पुसपा बाई के दाँत भिच गये। गले और नाक
से घिरं-घिरं की अटपटी आवाज निकसने लगी।

रावता माँची की दावन पर बैठा बीड़ी फूँक रहा था। नाज की
लदाई के लिए हरलो के आने तक उसे इसी तरह जागना था।

पुसपा बाई, होंठों के लटकते कोनों से लार गिराती हुई वेतर
कसमसाने लगी। एकाएक वह किसी चीज को पकड़ने के लिए ऊप
उछली और फिर धप्प से खाट पर गिर पड़ी।

उसको होश आ गया। धूजते-काँपते हुए उसने तम्बू में नि
फिरायी। लालटेन कालिख की टोपी ओढ़े भक्-भक् कर रही थी और
नंग-धड़ंग व्यक्ति पाँयताने टिककर आँखें टिमटिमा रहा था। पुसप

को इस दृश्य के साथ जुड़ने में कुछ पल लगे। फिर उसने तकिये पर मुंह रगड़कर लार पोंछते हुए सहमे स्वर में पुकारा, "रावता···"

"क्या बात है, पुसपा बाई!"

"तुम अभी तक यहीं हो?"

"हाँ।···तुमने कोई बुरा सपना देखा क्या?"

"मेरे पास लेट जाओ। मुझे डर लग रहा है।"

"डरना क्या? तुम तो बहोत बहादुर औरत हो।"

"नहीं, नहीं···मेरा कलेजा धुक-धुक कर रहा है।" उसने रावता के कड़ियल हाथों के घेरे में अपना पिलपिला-गिलगिला बदन ढकेल दिया।

"हुआ क्या?" लेटे-लेटे रावता ने ईंस से रगड़कर बीड़ी बुझा दी और मुँह में रोका हुआ धुँआ नथुनों के रास्ते सुरसुरा दिया।

"यहाँ रहके तो मैं बरबाद हो जाऊँगी, रावता!"

"ऐसा क्यों कह रही हो?"

"इतना खराब सपना तो मैंने कभी नहीं देखा।···एक काला भैंसा था। जरूर वो सनीचर का भैंसा रहा होगा। आदमी की बोली में बोल रहा था। मुझे अपने सींगों पर उठाकर वह तल्लाब की तरफ ले गया। बोला, पुसपा बाई···मैं तुम्हें यहीं जिन्दा गाड़ूँगा।' उसकी पकड़ इतनी मजबूत थी कि मेरा कुछ बस ही न चला। मैं छटपटाती रही। लेकिन फिर जीने के मोह ने जोर मारा और मैंने अपने को छुड़ा लिया। वहाँ से तुरन्त भागी मैं···"

पुसपा बाई की साँस रुक-सी गयी। वह पसीने से तर-बतर थी।

"अगर आँख न खुलती···तो नींद में ही आज दम घुट जाता मेरा।" वह स्वयं को स्वस्थ करने की कोशिश करती हुई बोली, "मैं बच्ची थी, तब एक जोतसी मेरी माँ के पास आया था। उसने कहा था, तेरी लड़की राज करेगी, बहुत सुख में रहेगी, अच्छे-अच्छे मरदों को भोगेगी, लेकिन—इसको सनीचर का खतरा बना रहेगा।"

"मैं एक और ही बात सोच रहा था, पुसपा बाई!"

? तुम भी क्या—"
तिस नहीं. मैं सगुन की बात कर रहा था। तल्लाब की खुदाई
पहले आदमी की बलि देने का कायदा है। जोहड़ की मिट्टी को
का खून न मिले तो वह बदला लेती है. नुकसान पहुंचाती है।"
"अच्छा !"
"हमने कोरम-कोर ही खुदाई शुरू कर डाली। कायदे से···महूर
ा नहीं।' रावना ने पुसपा बाई के फदफदाये हुए पेट और ढीले वक्ष
यों ही सहला दिया, "जब से तल्लाब का काम चला है, मेरी···
पनी तबीयत भी गिरी-गिरी-सी रहती है। मुझे तो लगता है कि यह
जो खोटा सपना तुम्हें आया है, वह भी उसी वजह से···"
"कोई उपाय बने तो करो।" पुसपा बाई निढाल-बेहाल पड़ी रही
और एकटक लालटेन की भुकभुकी देखती रही।
टीलों के पार ऊँटों की खिलखिलाहट हुई।
रावता झपटकर उठा। कपड़े पहने। बोला, "हरलो आ गया है।"
"मैं नहीं चल पाऊँगी।·· लेकिन इग्यारसीलाल को साथ ले जाना।"
"हिसाब भी वही करेगा ?"
"नहीं, तुम करना और रकम मुझे लाकर सौंपना।"
रावना चला गया।
पुसपा बाई के कलेजे में फिर भय हूलने लगा। देह को मानो कोई
नीचे-ही-नीचे की ओर खींचे ले जा रहा था। अन्धड़-भरा अन्धकार सूअ
की तरह सुड़-सुड़-सों-सों कर रहा था।
एक सड़ी-सड़ी दुर्गन्ध पुसपा बाई के नथनों में सुलगने लगी। उ
पुकारा, "बदरू ! कहाँ दफन हो गया···नामाकूल !"
निन्दरा के आलम में लड़खड़ाता-डिगता बदरू आया और ऐसे ख
गया, मानो अन्धा हो। कुछ क्षण तक वाकई उसे कुछ सूझा नहीं।
पुसपा बाई ने उबासी ली। उसके मुंह में कचरा-बुरादा-सा भ
चिहुँककर उसने बिछावन को देखा, चदरे को उठाकर सूंघा, फि

पिच् थूक दिया।

"क्या हालत कर डाली है उसने मेरे बिस्तर की! मदद, जल्दी से चदरा बदल। कैसी तो बदबू आती है रावता के शरीर से! यो'''ताक पर से सन्दूकची उठा। पोवडर का डिब्बा है उसमें। यहाँ छिड़क दे! ऐसी गन्दगी में तो'''मुझे नींद ही नहीं आयेगी।"

नाज की लदाई के बाद इग्यारसीलाल अपने तम्बू में लौटा तो परेशान था। उसने झिंझोड़कर अचली को जगाया। वह अधनींद में बोली, "दुबारा करोगे क्या? जरा सबर रखा करो। ऐसे जल्दी मचायी तो बुढ़ापे में हाड़-गोड़ हैं, खिरखिराकर झर जायेंगे।"

"धीरे बोल।'''सुवटी ने हरलो को जाने क्या-क्या कह दिया है। बोलता था, इग्यारसीलाल! तुमने बड़ी धाँधली मचा रखी है।"

"तो तुम'''डरते हो हरलो से?"

"डर-वर नहीं, लेकिन धन्धे का सवाल है।'''लगता है, तुम्हारी वजह से सुवटी मुझसे खार खा गयी है।"

"इसमें लगना क्या है, साफ दिख रहा है।"

"तुम अब'''हर वखत इस तम्बू में मत रहा करो।'''जब जरूरत होगी, मैं तुम्हें बुला लूँगा।"

'मुझे नहीं मालूम था, तुम ऐसे घिग्घू निकलोगे। सुवटी की, आखिर औकात क्या है तुम्हारे सामने?"

"औकात-वौकात रहने दो अभी। वह हरलो की चहेती बनी हुई है। रावता बता रहा था, उसकी भी बुराई करती है वह हरलो के आगे।''' लेकिन इस समय हरलो की मदद के बिना कम्प चलाना मुश्किल है, क्या करें!"

गज्जी अपने छपरे में पड़ा करवटें वदल रहा था। फूलकी ने उसकी पीठ पर हाथ रखकर पूछा, "तुमने अभी ऊँटों की आवाज सुनी ?"

वह गुस्से में वड़वड़ाया, "शुवो क्या गया, सव स्साले निरजीव हो गये हैं। कायरों से भी वदत्तर ! किसी में मुंह खोलने की हिम्मत नहीं।"

दुपहरी की तिड़तिड़ाती हुई तपन में तल्लाव की खुदाई बदस्तूर जारी थी। झुलसा देनेवाली गरमी ने लोगों के बदन पर अलाइयाँ और फुंसियों के गुच्छे उगा दिये थे। वे फावड़ा रोककर या ढोआई का तसला नीचे रखकर लकड़ी की डण्डियों से पीठ-पाँव खुजलाने लगते थे।

किनारे के ढीक पर मिट्टी फेंकने के बाद सिराम ने सिर ऊपर उठाया तो उसे दूर आसमान में एक धब्बा नजर आया। उसने गज्जी से पूछा, "वो देख, उधर···क्या है ?"

"मुझे तो धूल का गुब्बार लगता है। आँधी आयेगी।"

"गौर से देखकर बता। बादल तो नहीं है ?"

"हो सकता है।"

"इस बार भी अगर बरखा नहीं हुई तो दुरभिक्ख खा जायेगा हम लोगों को।"

"हाँ, कम्फ में तो कित्ते दिन चलेगा !"

"सिरकार कम्फ तोड़ रही है अब।"

"आजरढाणी का कम्फ तो टूट ही गया। सुनते हैं, वहाँ झगड़ा हो गया था।"

"झगड़ा तो करवाया गया था, जिससे सिरकार को खिलाफ रिपोट भेजी जा सके।"

"सैंकड़ों लोग भूखे भटकते फिर रहे हैं।"

"हाँ, बहोत बड़ा कम्फ था वो। अपने वाले से तिगुना···"

"हट्टी बता रहा था कि जो लोग पखेस्तान से आये हैं, सिरकार उनका विरोध करती है और उन्हें भगाना चाहती है।"

"इसीलिए जानबूझ के झगड़ा-फसाद करवाते हैं और फिर कारवाई करके कम्फ तोड़ देते हैं।"

रावता कइयों की खोपड़ी पर लट्ठ ठकठकाता हुआ उनकी ओर आ रहा था। वे जल्दी-जल्दी फावड़े चलाने लगे। तल्लाव का गोल घेरा खोद दिया गया था और अब तल्ली को गहरा किया जा रहा था।

उसी समय इग्यारसीलाल और सुवटी कम्फ से आये, तल्लाव पर। पुकार-पुकारकर उन्होंने सब लोगों को इकेट्ठा किया। इग्यारसीलाल बोला, "अभी मैंने जरख देखा था, सरकण्डों के जंगल में। तुम सबको चेताने के लिए यहाँ आया हूँ।"

"ऐसा मोटा-तगड़ा जरख!" सुवटी ने हाथ फैलाये, "सावधान रहना, भई! खतरे की बात है।"

पलक मारते सुरफुरी फैल गयी। जित्ते मुँह, उत्ते बखान। कम्फ-वाले जानते थे कि सरकण्डों के वन-बीहड़ में जरख होते हैं। अब, इग्यारसीलाल और सुवटी के आँखों-देखे हवाल ने उन्हें चौकन्ना बना दिया। इधर, अकाल के कारण जरख-बरख कहीं नजर नहीं आते थे, लेकिन ऐसे मानुसखोर जीवों का क्या भरोसा! कब कहाँ से निकल आयें और नुकसान कर डालें, कुच्छ अनुमान नहीं हो सकता है। शाम ढलने से पहले ही रावता ने काम से छुट्टी कर दी और अपने भय में बन्द-बन्द-से लोग कम्फ में लौट आये।

रात को अलावों में खूब धुआँ किया गया। जरख धुएँ से घबराता है। ठूँठ-लक्कड़ सुलगते रहे और धुएँ के घने घोल में अन्धकार भी घुलने-गहराने लगा। दूसरे पहर के मुंदते-मुंदते सन्नाटा छा गया और कम्फ निन्दरा की तहों में दब गया।

वड़े तड़के पुसपा बाई ने हल्ला मचाया, "जरख, जरख ! जागो, जागो !"

कम्प में जागरे और हड़वड़ी फैल गयी । लोग पुसपा बाई के तम्बू की तरफ दौड़ पड़े ।

"अरे, यहाँ क्या कर रहे हो ? उधर आओ, उधर⋯सरकण्डों के जंगल में घुस गया है वो । तेजी से भाग रहा था । पता नहीं, क्या था उसके मुँह में !" वह फुदक-फुदककर माथा पीटने लगी ।

"लालटेन ले लो !" रावजा गुर्राया ।

"मैंने भी एक छाया-सी देखी थी ।⋯फिर, जरख पहचान में आ गया ।" प्यारेलाल बतला रहा था, "मेरे तो प्रान सूख गये । पुसपा बाई ने शोर मचाया तो वह भागा—"

पीपे और तसले पीटे जाने लगे । कुछेक जने सरकण्डों के बन तक भी गये, लेकिन यह सोचकर लौट आये कि फिजूल खतरे में पड़ना ठीक नहीं । सम्भव है, वह किसी जगह दुबककर घात लगाये बैठा हो । लाठियाँ लेकर लोग कम्प की बाड़ के पास-पास निगरानी करते रहे । ऊपरी सिरे पर पतरा बाँधकर और नीचे तक रस्सी से जोड़कर एक लम्बे बाँस को कम्प के बीचो-बीच गाड़ दिया गया । बच्चे रस्सी हिलाते रहते थे और पतरा बजता रहता था । वैसे भी हर कोई हल्लागुल्ला करने में लगा हुआ था ताकि जरख निकट न आये और यदि आसपास ही हो तो डरकर दूर भाग जाये ।

"बादिया, ओ बादिया !" पुकारती हुई गोदारी बच्चों की टोली में घुम गयी । बादिया वहाँ नहीं था ।

पौ फट रही थी । पूरब में, आसमान पर एक कटा-छँटा टाट का-सा गूदड़ पड़ा हुआ था और कुछेक पंखेरू उधर उड़कर जा रहे थे ।

"बादिया कहाँ है ?"

थोड़ी ही देर में यह सवाल अनेक होंठों पर फड़फड़ाने लगा । धीरे-धीरे यह सवाल एक अशुभ शून्यता में जड़ होने लगा । धुएँ के गदले-गदले गोट निचले छपरों-छाजनों में घुसते चले गये । लोगों की आँखें जलने लगीं ।

...रते और उनके पसीने से भीगे गन्दे शरीरों से चिपक जाते ...
...री तरह खाँसने और सिनकने लगे। ऊपर ...
...ो सोख देनेवाली कोई मनहूस और भयानक चीज वहाँ झूलने लगी।

अन्धों की तरह, निष्प्राण और ठण्डी और कुछ भी व्यक्त कर पाने में असमर्थ आँखें चेहरों पर थामे, कम्फवाले…वाशिया को ढूंढ़ते फिर रहे थे जैसे वह नन्हा सुइया हो और सिलाई करते-करते अप्रत्याशित ढंग से गुम हो गया हो।

दिन खुलने और धूप चढ़ने पर वाशिया की खोज फिर शुरू हुई। कम्फ के नजदीक, मारे दूह-कोने-आँतरे देख लिये गये। चप्पा-चप्पा छान मारा, किन्तु कहीं कोई सुराग तक नहीं मिला।

हद्दी ने मरकण्डों के धारदार छरों की परवाह न की। वह जंगल में दूर तक धँस गया और साँझ पड़े लहूलुहान होकर लौट आया। गोदारी पहले तो बेकल-सी सब ओर 'वाशिया, वाशिया!' पुकारती हुई भागती रही, फिर तोड़कर फेंक दी गयी बेल की तरह जमीन पर गिर पड़ी घण्टों उसी तरह रेत में मुंह डाले रोती रही। अचानक उसके रोदन ... मानो किसी ने मँड़ासी डालकर कस दिया। वह घुटी-घुटी साँसें लेती बैठ गयी। रिक्त, निरीह, भावहीन दृष्टि से सबको ताकती हुई—... जैसे सबसे दूर, अलग और अपरिचित।

एक तख्ते पर सिर डाले हद्दी पसरा हुआ था। एक बड़े बो... नीचे नींद के दमघोंट धक्के लग रहे थे और कोई कर्कश आवा... बेरहमी से पीस रही थी।

पुसपा बाई कम्फवालों को दिलासा दे रही थी, "हिम्मत ... लेना होगा। पूरी चौकसी बरतनी है अब।"

फिर वह यह कहकर अपने तम्बू में चली गयी कि डर के ... तो रात से ही बेहोश पड़ा है। उसे बुखार चढ़ आया है। ब... दिल है उसका। दारू-वारू गले में डालूंगी उसके, तब कहीं उ... वापरेगा। एकदम पस्त हो गया है।

रावता ने चार-पाँच रोज के लिए तल्लाब की खुदाई रोक दी। बोला, "जरख के उत्पात से निपटना होगा—"

"हाँ, वो जब आदमी के रगत का प्यासा हो जाता है तो बड़ा खूँखार हो जाता है।" इग्यारसीलाल ने बात में बात मिलायी, "कम्फ के बाहर कोई पाँव भी न रखे, इसका ख्याल रखना। जरख बेहद्द चालाक होता है।"

दो रोज गुजरे, लेकिन बड़े खराब ढंग से। कम्फ का जीवन आहत और निस्तेज हो चुका था। रात आती थी तो अन्धकार की काली-कठोर आँखें छपरों—छाजनों से चिपक जाती थीं और हवा में अनिष्ट की अनन्त गूँज डोलने लगती थी। तीसरे दिन अलसुबह ही एक और दुर्घटना हो गयी। रावता बुरी तरह चीखता हुआ तम्बू से बाहर आया, "दौड़ो, दौड़ो! देखो, यहाँ क्या हो गया है!"

एक जोरदार चिल्लपों और हलचल और उत्तेजना व्याप गयी।

लोग यह देखकर दंग रह गये कि पुसपा बाई और इग्यारसीलाल अपने-अपने तम्बू में जकड़े हुए पड़े हैं। उनके मुँह में कपड़े ठूँस दिये गये हैं। हाथ-पाँव गठरियों की तरह सिकोड़कर बाँध दिये गये हैं। बदरू अचेत पड़ा था। हारी-बीमारी से उसका चेहरा वैसे ही पीला पड़ गया था। अब माथे से खून बह रहा था। उसकी जमकर पिटाई की गयी थी।

जल्दी-जल्दी पुसपा बाई और इग्यारसीलाल को खोला गया।

जमाल पानी के छींटे देकर बदरू का लगर-लगर खून रोकने की चेष्टा करने लगा। गज्जो ने अपने धोतिये की पट्टी फाड़ दी, "इसे भिगोकर हल्के-से बाँध दो और पानी डालते रहो।"

इग्यारसीलाल हथेलियाँ रगड़ता हुआ फटी-फटी आवाज में बोला, "पाँच-छह जने थे।…मुझे और पुसपा बाई को तो उन्होंने बेबस कर दिया। बदरू ने सामना किया तो…"

...हरकत हुई ।

...पुसपा बाई के तन में हरकत हुई ।

...चोर थे, चोर । अरे···मुझे जरा सामान तो सँभालने दो । जान ...या ले गये···मैं तो लुट गयी—।" वह कराह रही थी और तम्बू की ...ओं को टटोलती हुई निगाहों से देख रही थी ।

...वदरू को भी होश आ गया । वह मरा-मरा-सा उठा और डेरे से ...कल गया ।

"तुम लोगों ने क्या मजमा लगा रखा है यहाँ ! जाओ, काम करो ...पना ।"

पुसपा बाई की फटकार के साथ डेरा खाली हो गया । वह घुटनों पर हाथ दवाये उठी और चीजों को उलट-पुलटने लगी । जान से प्यारा 'वक्सा' अपनी जगह पर था, उसका ताला भी सही-सलामत । और कहीं भी कत्तई छेड़छाड़ नहीं की गयी थी । सिर्फ खाने-पीने के सामान की पोटलियाँ वनाकर वे ले गये थे । चावल, गेहूँ, दाल, गुड़, विस्कुटों के डिब्बे···

"मरभूक्खे थे, हरामी !" गाली देने के साथ-साथ पुसपा बाई ने चैन की साँस ली ।

"जब से कम्फ टूटने लगे हैं, भुक्खड़ों की तादात बढ़ गयी है···उनमें से कुछ लोग चोरी-चपाटियाँ करने लग गये हैं ।" इग्यारसीलाल सूखे होठों को चप्-चप् चुवलाता हुआ वोला ।

"पहरे को कड़ा करना होगा—" रावता इतनी देर बाद आँखों का मैल निकालते हुए वोला और अन्यमनस्क होकर वाहर देखने लगा ।

"जरख आया, जरख आया ।"

अचानक गोदारी ताली-पटका करती, ठुमकती-नाचती हुई का... दौड़ने लगी ।

"शेर आया, भालू आया, भेड़िया आया ।"

कभी ही-ही-हो हँसती, कभी मुँह बना-बिचकाकर सबको डराती हुई वह भण्डारे की छत पर जा बैठी और गाने लगी, "जरख सबको खा जायेगा रे···"

ज्यानकी काकी ने साँस भरी, "उसका चित्त चल गया है।"

"ऐसे मत कर, गोदारी! बावली हो गयी है क्या?" फूलकी ने पुचकारते-फुसलाते हुए कहा। फिर बाधिया को याद कर उसकी आँखें गीली हो गयीं।

"भेड़िया पुसपा बाई को खा जायेगा···" गोदारी गाने में मगन थी।

"इसे नीचे उतारो—" हट्टी का स्वर बेहद कमजोर था।

"वो तुमको भी खा जायेगा···" गोदारी ने आँखें दिखलायीं।

जमाल और गज्जी ने भीत पर उचककर बहुत कठिनाई से उसे पकड़ा और खींचकर उतारने लगे। वह उनके काबू में नहीं आ रही थी। उसने गज्जी की बाँह में दाँत गड़ा दिये।

सिराम ने गोदारी को कसकर थामा और छपरे में ले गया। वह हाथ-पाँव चला रही थी, मुँह से झाग गिरा रही थी, अपने ही सिर के बाल उखाड़ रही थी, "जरख खा गया बड़गड़बम, चल मेरी टमकी टमाकटम! वो इग्यारसीलाल को भी चट कर जायेगा रे···"

उसकी यह हालत देखकर हट्टी मुँह ढाँपकर बैठ गया और सिसकने लगा।

गज्जी ने रुँधे कण्ठ से कहा, "टाबर मत बन, हट्टी!"

"हाँ तो, होनी पर क्या-किसका जोर है!" ज्यानकी काकी बोली।

"काकी, तू गोदारी को जाके समझा।" गज्जी बोला और हट्टी का हाथ अपने हाथ में लेकर थपथपाने लगा, "अज्जेदान को याद कर हट्टी! वो कहता है···भाई, मेरे भाई, कलेजे को सखत बना ले, पहाड़ हो जा ···उत्ता ही मजबूत, उत्ता ही ऊँचा और उत्ता ही निधड़क-निडर बन। सामना कर—हर रितु का, आँधी का, बरफ का, दुःख का और अपने ही भीतर के उस भाव का, जो तुम्हें दुरबल बनाता है!"

"अज्जैदान ठीक कहता है, गज्जी !" हद्दी ने कहा और खड़ा हो गया, "मैं गोदारी को संभालूं जरा !···वह मां है न, कोख के हाहाकार को रोक नहीं पाती है।"

"जा, उसके पास जा। तू ही उसे ढारस दिला सकता है।"

झुण्ड-के-झुण्ड लोग, कम्फ के वाहर, टीलों पर···पेड़ों तले···पड़े थे, भूके-पियासे धक्के खा रहे थे और मौत के मुंह में आकण्ठ फँसे हुए जिनगानी की ओर ताक रहे थे। रावता किसी को अन्दर पांव नहीं रखने देता था। एक रात, सिराम कुछ वाटियां इकट्ठी कर चोरी-छुपे 'वाहर' वांटने चला गया। भूख से तल्फते हुए लोग उन वाटियों पर टूट पड़े। वहुत हो-हल्ला मच गया। सुवटी को मालूम पड़ा। उसने उसी वखत सिराम को कम्फ से निकाल दिया।

"वो तुम्हें अच्छे लगते हैं तो जाओ, उन्हीं के साथ रहो। अगर आगे से कम्फ के भीतर पैर रखा तो वोटियां नुचवा डालूंगी तुम्हारी, याद रखना !" वह ऐंठती हुई फाटक पर दनदनाती रही।

वाद में, रावता ने उससे कहा, "सिराम को तुमने नाहक निकाल दिया। ऐसा कोई कसूर नहीं किया था उसने।"

असल में, रावता को सुवटी की अकड़ और हुक्म गाँठने की आदत अखरने लगी थी। कई दिनों से वह कुढ़ा हुआ था।

"वो वाहर के भिखमंगों को खिलाये-पिलाये और मैं देखती रहूँ !" सुवटी ने रावता की तरफ कड़ी नजर से देखा, "फिर कम्फ में इत्ता नाज है ही कहाँ ?···लेकिन तुम ऐसे दयालु कव से हो गये ! पुन्न लूटकर अगला जनम सुफल वनाना चाहते हो ?"

रावता से यह तानाकशी न सही गयी। वोला, "जवान पर लगाम लगाके रखो कुछ। मुझे इस तरह की वातें अच्छी नहीं लगती हैं।"

"नहीं लगती हैं तो वापस चले जाओ, टोली में। तुम्हारी जगह

कोई दूसरा आ जायेगा। मैं हरलो से बोल दूँगी।"

रावता भीतर-ही-भीतर बल खाकर रह गया।

गोदारी की हालत बिगड़ती चली गयी। वह अब अपने में ही बन्द रहती थी। बेबात हँसती, कूदती और अटपटी बानी बोलती हुई वह हरदम चकफेरी लगाती रहती थी। इग्यारसीलाल कहता था, गोदारी अगम-ग्यानी हो गयी है। सुवटी ने यह डोंडी पीटकर कि वह कुछ भी करती-धरती नहीं, उसका नाज बन्द कर दिया था। हुद्दी, ज्यानकी काकी, गज्जो और फूलकी···उसके लिए बाटियाँ बचाकर रख लेते थे और खिलाने की कोशिश करते थे। गोदारी कभी खा लेती थी, कभी चिगल-चबाकर थू-थू थूकने लगती थी और बहुत हुड़दंग मचाती थी।

रावता की मंशा थी कि गोदारी को रस्से से बाँधकर रखा जाये। एक बार ऐसा किया भी गया, किन्तु गोदारी ने चीख-चीखकर आसमान सिर पर उठा लिया। हारकर रस्से को खोलना पड़ा। उसके बाद, वह खुली घूमती थी और रोज गिर-पड़कर अपने शरीर पर नये जख्म उगा लेती थी। जगह-जगह कत्थई खुरण्ड चमकते रहते थे और गोदारी उन्हें नखों से खुरचकर रगत निकाल लेती थी।

सुवटी ने पुसपा बाई को सुझाया कि गोदारी के हुड़दंग को देखते हुए उसे कम्फ-बाहर कर देना चाहिए। किन्तु दिन में, जब सारे लोग तल्लाब की खुदाई के लिए चले जाते थे, पुसपा बाई के एकरस अकेलेपन को गोदारी ने अपनी हरकतों से दिलचस्प बना दिया था। पुसपा बाई ने गोदारी को कम्फ से नहीं निकाला। वह कभी उसे केसर-कस्तूरी पिलाकर नचाती थी, कभी उससे उल्टे-सीधे आसन करवाती थी, कभी बेरहमी से उसके साथ खेलने लगती थी। कपड़े की मुठिया गेंद बनाकर वह खिल-खिलाती हुई धूप में दूर फेंक देती थी और फिर गोदारी को उसे उठा लाने के लिए नंगे पाँव दौड़ाती थी। गोदारी को कोई परवा नहीं थी।

हुई रेत में कूद-फाँद करके वह गेंद ले आती...
एक दफा पुसपा वाई ने बालू को भिगोकर, उसमें लाल पिसी हुई
चें डालकर गोल-गोल लड्डू बनाये और गोदारी को खाने के लिए
। गोदारी गवल-गवल वेहिचक खा गयी। नाक-मुँह से पानी वहता
हा। आँखें मसलती रही और ही-ही-ही हँसती रही। लेकिन दूसरे
दिन गोदारी को दस्त लग गये और वह कम्फ में इधर-उधर हँगकर
गन्दगी फैलाती रही।

उस रोज पुसपा वाई ने गोदारी को नचा-नचाकर थका डाला था।

"नटों की वाँदरी हो गयी है तू!" पुसपा वाई ने खिल-खिल करते
हुए गोदारी के सिर के बाल खींच दिये।

किन्तु तभी एक तगड़ा-सा आदमी तम्बू में आया। लुंगी-वन्यान
पहने हुए। कन्धे पर वन्दूक। पुसपा वाई उसे देखकर तनिक घवरा गयी।

"मैं उम्मरकोट से आया हूँ।"

"हाँ-हाँ, मैं पहचानती हूँ।" पुसपा वाई खिसियाने ढंग से मुस्करायी।

"हरलो के साथ नाज का सौदा करके तुमने ठीक नहीं किया, पुसपा
वाई!"

"वो ऐसी वात थी—"

"यह तो सरासर धोखा है।"

पुसपा वाई की जीभ तालू से चिपक गयी। तुरन्त कुछ वोलते
वना।

"आगे का क्या फैसला है? जानने आया हूँ।"

"सोचूँगी।"

"सोच लेना।...हरलो से निपटने में हमें देर नहीं लगेगी।
अगर तुमने गड़वड़ की तो नतीजा अच्छा न होगा।"

वाहर ऊँट खड़ा था। वह व्यक्ति तेजी से मुड़ा और उस पर
होकर टीलों में गायव हो गया।

गोदारी हँसने लगी।

"जा, परे मर चुड़ैल !" पुसपा बाई ने उसकी पिटाई कर दी। लात-घूँसों से।

महीने तो मुसाफिर होते हैं।

वैसाख गया, जेठ भी गुजर गया और अब असाढ़ निकला जा रहा था। पुसपा बाई और अनाज के इन्तजार में थी। तल्लाव की चिनाई-मढ़ाई के लिए जब सुरखी-चूने के गाड़े आये थे तो उसने कहलवा दिया था कि भण्डारा खाली होने लगा है। फिर भी देर हुई तो बदरू मियाँ को भेजा। वह खबर लाया कि कुछ समय लगेगा अनाज आने में। अभी तो जो है, उसी से काम निकालो। पुसपा बाई ने कम्फ में और छँटनी कर दी। इग्यारसीलाल और रावता हड़काये कुत्तों की तरह काट-काटकर लोगों को भगाने लगे।

इस बीच एक अजीब किस्म की बेम्मारी फैल गयी। बदन में थरथरी होती थी, ताप चढ़ता था, गला रुकता था और फिर पलापल में आदमी खतम। चींटी-भुनगों की तरह लोग मरने लगे। टीबों पर लाशें नजर आने लगीं। कौन उठाये, कौन जलाये-दफनाये? चील-कौवों की बन आयी थी। गिद्ध चोंचें लड़ाते रहते थे। सियारों की हुआँ-हुआँ जमराज की पुकार लगती थी।

भूख का हवाल यह था कि खेजड़ो-पेड़ों की छाल भी उतार-पीसकर खायी जाने लगी। थूहरों के गूदे को इमरत मान लिया गया। पेट भरने के लिए लोग घास-फूस को मसोसकर निगलने लगे। सिराम, गज्जी और फूलकी अब ऐसे ही लोगों में से थे। सिराम के बाद गज्जी और फूलकी को भी कम्फ से खदेड़ दिया गया था। गज्जी की भौंवें इन दिनों इस तरह तनी रहती थीं मानो वहाँ दो बिच्छू चिपके हुए हों। वह सिराम के साथ फुसफुसाहट कर जाने क्या-क्या बतियाता रहता था।

पुसपा बाई अक्सर रात को चौंककर जाग पड़ती थी। वह जानती थी कि यदि इस बार अनाज के आने में ढील हुई तो कुछ भी हो सकता है। ढील वैसे हो चुकी थी और, पुसपा बाई की व्याकुलता उबलने और खदबदाने लगी थी।

सुवटी फसकड़ा मारे पुसपा बाई के सिर में जूँएँ टोह रही थी और अपने नखों पर उनकी पटापट कर रही थी। इस काम में सुवटी को महारत हासिल थी। वह इतनी तेजी से जूँएँ बीनती थी कि अचरज होता था। पुसपा बाई को भी बड़ा चैन मिल रहा था।

इग्यारसीलाल आया। तम्बू में मकोड़ों ने बिल बना लिया था। अनजाने में वह उस बिल पर जा बैठा। मकोड़े उसके शरीर पर भागम-भाग मचाने लगे। एकाध जगह काट खाया तो वह उछला। पुसपा बाई हँसने लगी। सुवटी बोली, "इस तरह बिदक क्यों रहे हो ? गोदारी का असर आ गया है क्या ?"

तभी शक्ल बिगाड़े हुए रावता अन्दर घुसा। उसकी साँस फूल रही थी। किसी तरह किरकिराते कण्ठ से बोला, "हरलो घिर गया है—"

"क्या—" सुवटी के हाथ सुन्न पड़ गये।

"हुआ क्या ?" इग्यारसीलाल ने पूछा।

"बेस्सफ के फौजियों ने···पूरी टोली को ही—" रावता का स्वर शुष्क पड़ गया, "अभी एक आदमी समाचार लेके आया है।"

"कहाँ पर ? किस जगह ?"

"पखेस्तान की सींव के पास।" रावता बोला, "जमके लड़ाई हुई है।···बहोत दिनों से वो लोग हरलो के लिए खुनस खाये हुए थे।"

"इसमें···उम्मरकोटवालों का तो हाथ नहीं ?" पुसपा बाई ने शंका जाहिर की।

"क्या मालूम—"

रावता ने इग्यारसीलाल की बात काट दी, "नहीं, वो बेस्सफवाले ही हैं।"

बेस्सफ ! यानी बी-एस-एफ, बोर्डर सिक्योरटी फोर्स'''सीमा सुरक्षा दल—युसपा बाई गाढ़ी चिन्ता में डूब गयी। उसने अँगुलियाँ झटकाते हुए कहा, "उसी आदमी को फिर भेजकर पता तो लगवाओ कि आखिर '''हुरलो और टोली के दूसरे लोग किस हालत में हैं अब ?"

"मैंने उसे रवाना तो कर दिया है।" रावता बोला, "वह तो एक-दम्म डरा हुआ था। कहता था, किसी के भी बचने की उम्मेद कम है। बेस्सफवाले भून डालेंगे या पकड़ लेंगे।"

सन्नाटा छा गया, तम्बू में। हवा में मौत सरसराने लगी।

इग्यारसीलाल ने असहायता से हाथ झटकारे। त्रस्त और कातर होकर सुवटी रोने लगी।

-सिआर हुआं-हुआं कर पहले से ही रो रहे थे और बाहर, उनका रोदन जैसे कताई के लिए एक अदीठ चरखे पर चढ़ा हुआ था।

गहरी उमस थी और हवा कत्तई वन्द । आसमान में पहली वार, एक साथ, वादलों की गूदड़-पांत नजर आ रही थी । किनारों पर धुंधली भूरी और वीच में खूव गाढ़ी स्याह । सूरज दिखलायी नहीं दे रहा था, किन्तु धूप के चौंधे मोम की तरह पिघलते हुए-से कभी-कभी टपक पड़ते थे और थोड़ी देर के लिए रेत पर जम जाते थे ।

धीरे-धीरे धूप के आकार ओझल होने लगे और आकाश भी वादलों की आड़ में अपना रंग खोने लगा । साँझ के ऐसे वखत में गज्जी एक खेजड़े की छाल खुरच रहा था, वसूले से । वाल विखरे हुए । कमर का चिथड़ा पसीने से तर । छाती और गर्दन गर्द में अटी हुई । साँस मथनी की भाँति देह को झिंझोड़ती हुई । आँखें अनिश्चित ।

वसूले के दस्ते को ठोंकने के वाद उसने ज्यों ही माथे का गीलाप पौंछा और चेहरा ऊपर किया, सामने के आदमी को देखकर चीख पड़ा

वह चीख सहसा कुहासे में लिपट गयी । गज्जी की पनियल को फिर कुछ नजर नहीं आया । लेकिन, कुछेक क्षणों में ही धुन्ध गयी और तव, गज्जी उधर लपकता हुआ चिल्लाया, "शुवो ! शुवो

उसका गला भर्रा गया और वह देर तक कुछ वोल नहीं सिरफ शुवो से लिपटकर रोता रहा ।

लेसुए के तने के पास खड़ा हुआ शुवो पत्थर की तरह चुप

"तू कहाँ चला गया था, शुवो ? तूने क्यों छोड़ दिया को ?"

गज्जी रोते-रोते झिंझोड़ने लगा शुबो को और तभी, जैसे उस पर वज्जर गिरा। शुबो के समूचे तन पर काले-काले दाग थे। गरम लोहे से दाग देने पर उभरनेवाले दाग! गुदनों की तरह उन्होंने जिस्म को बींध रखा था।

"यह क्या—यह क्या, शुबो!" उसके मुँह में आवाज सूख गयी।

"यह तो कुच्छ भी नहीं, गज्जी!" शुबो उसे बाँहों में लेते हुए बोला, "चल, कम्फ में चलें।"

"नहीं, शुबो! कम्फ अब वो नहीं रहा। कित्ते ही जन बाहर निकाल दिये गये हैं—मैं भी···"

"अच्छा!" शुबो सोच में पड़ गया।

फिर गज्जी ने उसे सब कुछ बताया, सब कुछ···जो भी वह जानता था। शुबो के लापता होने के बाद की बदरंग घटनाएँ! शुबो सुन रहा था और होंठ काट रहा था। शुबो सुन रहा था और टीलों पर बुझती हुई शाम को ताक रहा था। शुबो सुन रहा था और बछराज को, बाशिया को यादकर आँखें पोंछ रहा था।

"तू बहोत दुबला गया, शुबो!"

"मेरी चरचा छोड़, गज्जी! आ, कम्फ में—"

"वो हमें घुसने नहीं देंगे।"

"चल, चल! ज्यादा सोच में मत पड़!" उसने गज्जी की पीठ पर हाथ रखा। वह हाथ, एक मजबूत मिनख का हाथ था।

उस हाथ ने पल-भर में गज्जी को गरुड़ बना दिया। वह उड़ चला, "हे-ओ हड्डी-होऽऽऽ रे-हो-जमाल-ओ-काकी-रेऽऽऽ शुबो आ गयाऽऽऽ शुबोऽऽऽ"

कम्फ के फाटक पर वह ठिठक गया।

उसके उछाह ने शुबो को पीछे छोड़ दिया था।

शुबोऽऽऽ आ गयाऽऽऽ रे-होऽऽऽ

जैसे किसी ने सिंगा फूँक दिया हो, कम्फ के आर-पार शुबो का नाम गूँज गया।

—कहाँ है रे ?

—शुबो किधर है ?

—बोल तो, कहाँ है वो ?

सवालों के इतने धक्के लगे कि कम्फ का फाटक छिटककर दूर जा पड़ा। लोग इस तरह वहाँ वह आये, मानो कोई जबरदस्त धारा उन्हें ठेल लायी हो।

उसी समय एक अस्थि-पंजर डोलता हुआ फाटक तक आया। वे तुरत नहीं पहचान पाये और ऊहापोह में अटके रहे तो गज्जी ने हाथ हिलाकर कहा, "शुबो है !"

—हाँ रे।

—हाँ-हाँ रे, वो ही तो है।

—शुबो ही है।

एक साथ जैसे अंगारे झलझला उठे हों, हवा के किसी तेज झोंके की शह पाकर, वे शुबो के निकट सिमट गये। अपनापे की भरपूर गरमास लिये। स्यात इससे पहले शुबो कभी उन्हें इतना अपना न लगा था। यह लगना, दुःखों की अनन्त अगन में सुलगकर बाहर निकलना था।

शुबो अपनी गीली आँखों में चमक और थरथराती हुई मुस्कराहट में अकथ पीड़ा की लकीर सँभाले कम्फ में घुस गया। और पानी के कोठे के पास एक बड़े-से पत्थर पर वह जा बैठा।

उसने एक ठण्डी साँस ली। वह साँस, कुछ-कुछ निगाह थी...उसने कम्फ को एकबारगी देख लिया था। वे टूटने-गिरने को हो आये छान-छप्परे। वे ढहने-मिटने की हदों पर रुके हुए लोग !

—तू कहाँ था शुबो ?

—यह तुझे क्या हो गया ?

—तू तो बिल्कुल ही झिर गया।

—तुझे इत्ती बुरी तरह से किसने डाम दिया ? क्यों डाम दिया, बता ?

शुबो खामोशी से शाम की बदली हुई रंगत को, टीलों को और उनके

ऊपर घने-घने झुक आये बादल-बन्धुओं को देखता रहा। जब उसने अपने बारे में कुछ न बताया तो लोग कम्प और वहाँ के हाल-हवाल को लेकर बोलने लगे। एक साथ। हरेक को जल्दी थी। हरेक खुद ही सब कुछ बता देना चाहता था। वे आवेग में थे। वे उदास थे। वे भीतर के भय को उगलकर भयमुक्त होने के लिए व्यग्र थे। घुबो जानता था, क्योंकि उसने गज्जी के चेहरे पर पहले ही उस भय और अवसाद को चीन्ह लिया था।

"हमने बहोत कष्ट सहे हैं, घुबो!" ज्यानकी काकी बोली, "हम मर रहे हैं... देख, टीलों पर लाशें पड़ी हैं और चील-कौवे गोठ मना रहे हैं!"

बाहर के लोग भीतर आ रहे थे। कम्प एकमेक हो गया था।

"मैं यहाँ से गया नहीं, वे लोग मुझे...पकड़ ले गये थे।" घुबो ने आहिस्ता-आहिस्ता कहना शुरू किया, "वे मेरी ताक में थे। जब मैं, उधर...उन पेड़ों के झुरमुटे में बैठा था तो अचानक उन्होंने मुझ पर बोरा डाल दिया। मेरे मुँह में कपड़ा ठूँसकर, हाथ-पाँव बाँधकर वे मुझे यहाँ से बहोत दूर ले गये।"

"वे कौन थे, घुबो! वे कमीने—"

"उन्होंने मुझे एक खोह में डाल दिया। वे मुझे मारना नहीं चाहते थे, लेकिन हर वक्त मौत की तकलीफ में डाले रखकर...मेरे मन को मार डालने की इच्छा रखते थे। लोहा गरमाकर चमड़ी दागते थे, घावों पर नमक बुरका देते थे—"

"वे कौन हरामी थे, घुबो! तुम्हें रामदेवजी की सौगन्द, बताओ!"

"वे..." घुबो की आवाज तांत की तरह तन गयी, "हरलो के लोग थे!"

अचानक तमाम चेहरों पर धुआँ उफन पड़ा और कुछ क्षणों बाद, उस धुएँ में से लपटें उठने लगीं।

"हम हरलो को···कचर डालेंगे। उसकी मां···" आवेश के गलियारों में गालियां सनसनाने लगीं।

"वेस्सफ के सिपाही और हरलो के लोग भिड़ गये आपस में।···मुझे मौका मिला तो मैं किसी तरह छूटकर यहां दौड़ आया।"

"वेस्सफ क्या ?" किसी ने प्रश्न किया।

"फौज होती है।" शुवो ने बताया।

"फिर तो हरलो को दिन में तारे नजर आ गये होंगे।" ज्यानकी काकी गुस्से में अपने पर काबू नहीं रख पा रही थी।

"मेरा तो ख्याल है कि बहोत बुरी बीती होगी उस पर।···" शुवो बोलते-बोलते रुक गया। गोदारी ताली बजाने लगी, "जरख आयेगा, जरख-जरख ! जरख को मार डालो, जरख को !"

पुसपा बाई के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं।

रावता, इग्यारसीलाल और सुवटी उसके तम्बू में सहमे-सहमे जान छुपाने को ठौर तलाश रहे थे। अलबत्ता, बदरू बाहर था। एक पल मुस्कराता, दूजे पल दहल जाता हुआ।

"इग्यारसीलाल, तुम शुवो को यहां से खदेड़ क्यों नहीं देते हो ?" पुसपा बाई ने करलाते सुर में कहा।

"मैं नहीं जाऊंगा उसके पास।···यह काम रावता और सुवटी का है।" वह पीला पड़ गया और जमीन घूरने लगा।

"वो छूटकर यहां आ कैसे गया ?" सुवटी डरी-डरी-सी उधेड़-बुन में थी।

"यह तो हरलो से पूछो।" पुसपा बाई ने होंठ बिचकाये।

"हरलो···अब इस दुनिया में नहीं है, पुसपा बाई !" रावता का स्वर सपाट था।

"क्या—"

"हाँ, बेस्सफ ने पूरी टोली को खत्तम कर डाला—"

"बेस्सफ के जाल में आ जाने पर कोई बच सकता है, भला!" इग्यारसीलाल ने उसी तरह अपलक जमीन की ओर ताकते हुए कहा।

"तुम्हारी बन्दूक कहाँ है?" पुसपा बाई का मुख भयावह हो उठा।

"वो तो···खो गयी।" इग्यारसीलाल बुदबुदाया।

"कैसे खो गयी?"

"खो गयी।"

"यह हाल है तुम्हारा! अब क्या करोगे?"

"जाने कैसे···" इग्यारसीलाल का स्वर अस्पष्ट हो गया। वह जैसे चेतना खोने लगा था।

"रावता!" पुसपा बाई की आँखों में छर्रे उछले।

"मेरे पास दो बन्दूकें हैं।"

"एक मुझे दे दो।"

"तुम चलाना जानती हो?"

"नहीं तो क्या—तुम लोगों के भरोसे पर ही बैठी हूँ यहाँ?"

"मैं नली साफ-सूफ कर लेता हूँ।"

"ठीक है। भण्डारे की चाबियाँ—"

"मेरे पास हैं।" सुबटी हकलायी।

"इधर लाओ।"

सुबटी ने घाघरे के नेफे पर टँगा हुआ चाबियों का गुच्छा खींचकर निकाला और पुसपा बाई को पकड़ा दिया।

"रावता, तुम जरा बदरू को भेज दो—मुन्नो के पास। कहला दो, यदि उसने कम्प में तनिक भी गड़बड़ की तो जान खो देगा अपनी।"

फिर पुसपा बाई ने खाट के नीचे से लोहे की जंग-लगी पेटी खिसकायी और ढक्कन उघाड़कर चीजें उलटने-पुलटने लगी। एक बर्छे का फाल निकाला और इग्यारसीलाल को देकर बोली, "इसे लाठी पर कस लो। काम आयेगा।"

सुवटी इस आस में थी कि उसे भी कुछ मिलेगा, हिफ़ाजत के लिए। लेकिन, पुसपा वाई ने उसकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया। आँखें मूंदकर वह भीतर बढ़ती हुई कंपकंपी को रोकने लगी। हरलो का चेहरा लट्टू की तरह घूमता हुआ सामने आया। खून से सना और धड़-हीन। वह सिमटने लगी।

"ये नखरे रहने दे!" पुसपा वाई ने डांटा तो सुवटी का हलक बन्द हो गया।

"उसी हरलो का तो किया हुआ है यह सब! मुझसे तो बोला था, शुबो को ठिकाने लगा दिया है। इस काम के रुपये भी ऐंठ लिये थे उसने मुझसे। अव्वल मक्कार था—"

'धूरत और दगावाज!" इग्यारसीलाल ने हां-में-हां भरी, नफरत उगली और बोला, "किसी को उस पर शक न हो, इसी वास्ते उसने खुद रिपोट भेजकर थानेदार को भी वुला लिया था। उसी दिन।"

"पुलीस आयी···तो उसमें भी कित्ता खरचा हुआ!" पुसपा वाई ने पेटी बन्द कर दी और फिर धम्म-धम्मक तम्बू में चक्कर काटने लगी। कम्प में एकाएक शोर बढ़ गया। उसने नथुने फुलाये, "इन हरामी कीड़ों को सबक सिखाना होगा। कैसे चिल्ला रहे हैं!"

शुबो ने दूर से ही बदरू को पहचान लिया। वह अपने को सिकोड़ता-खोलता पास आ रहा था।

"कैसे हो, शुबो!"

शुबो ने उसे गले लगा लिया, "दस्सा तो तुम देख ही रहे हो।"

"मुझे मालूम था।···लेकिन मैं इतना डर गया था उस वखत कि तुमसे कुछ कह नहीं पाया।" बदरू अपने में घिरा-घिरा बोला, "वो बहोत नाराज है, शुबो। बुरी तरह फनफना रही है। सावधानी रखना।"

"तुम फिकर न करो, बदरू!" गज्जी बोला, "उसकी फनफनाहट

को तोड़ने का टैम आ गया है अब।"

"उसने कहलवाया है कि गड़बड़ की तो बुरा होगा।" बदरू ने गर्दन लटका ली।

"भण्डारे की चाबियाँ सुखटी के पास हैं, शुबो ! ताले तोड़ने होंगे।" जमाल ने जोर से कहा।

"यह कुंजी ले लो।" बदरू ने जेब से एक चाबी निकालकर दी, "दो-चार बार घुमाने से लगेगी।"

फिर वह पुलसा बाई के तम्बू की तरफ लौट पड़ा। हमेशा की तरह सिर झुकाये। खिन्न। खौफ में गड़ा-गड़ा।

जुगनी उस समय शुबो के सामने आयी, जब भीड़ भण्डारे की तरफ मुड़ चली थी। उसने मन्द सुर में कहा, "शुबो, तुमने मुझे भुला दिया—"

"नहीं, जुगनी !" शुबो के मन में कोमलता उमड़ पड़ी, "तुम्हें याद करते हुए तो मैं रोज मौत से लड़ा हूँ। मुझे नहीं पता था, तुमसे फिर कभी मोलाकात होगी !"

"मैंने आस नहीं छोड़ी थी।...और तुम हारे नहीं। बिल्कुल थके नहीं। तुम जुलम सहके और ज्यादा पुख्ता हो गये। मैं बहोत खुश हूँ, शुबो !"

भण्डारे के ताले खुल गये।

अन्दर बहुत कम नाज था। कुछ ककड़ मिला थोड़ा-सा बाजरा और जौ। ज्यानकी काकी ने मुट्ठी-मुट्ठी बाँटना शुरू किया। जल्दी ही समाप्त। बहुतेरों को एक दाना भी नहीं मिला। वह हताश होकर अँगुलियाँ मरोड़ने लगी।

रात गहरी पड़ रही थी। आसमान की निचली गोलाई में बादल पसरे हुए थे और बीच के खुले फैलाव में कटा हुआ चाँद दड़बड़ी लगा रहा था। उसके फीके उजास में शुबो ने भूखे चेहरों का रावड़ा देखा। नहीं, वह इस तरह आग को राख नहीं होने देगा।

"आओ, सब लोग मेरे पीछे-पीछे आओ !"

वह करीब-करीब दौड़ता हुआ चलने लगा। और, उसके पीछे पद-चापों का रेला बँध गया। स्त्रियों ने बच्चों के हाथ थाम लिये।

सिराम के कन्धे पर बन्दूक थी। उसने कहा, "मैंने इसे खूब सँभाल-कर रखा, शुबो ! किसी को हवा तक न लगने दी।"

शुबो मुस्कराया।

"खाली ही होगी ?"

"नहीं, टोटे भी चुराये थे मैंने। भर लिये हैं, काछड़े में।"

अपनी उसी 'टेकड़ी' पर जाकर शुबो रुका। बीच में एक बार गज्जी ने पूछा था, "आखिर···जा कहाँ रहे हैं हम ?"

"अभी पता चल जायेगा।" शुबो भेद-भरे अन्दाज में हँसा।

"शुबो जरूर जादू चलायेगा।" ज्यानकी काकी ने मसखरी की।

"असल रेत का जादू !" उसने कहा और उस 'जगह' को ढूँढ़ने लगा।

काफी टीले उड़-उड़कर इधर-उधर खिसक गये थे। कुछेक क्षणों के लिए तो वह भूलभुलैया में उलझ गया। लेकिन, अन्त में उसने पाँव गाड़ दिये। बोला, "यहाँ से खोदो !"

रेत हटायी जाने लगी।

पत्थर। घास-फूस के झुब्बे। फिर बकरियों के बालों से बुने हुए बोरों का स्पर्श महसूस हुआ। गड्ढे को चौड़ा कर बोरों को ऊपर खींचा गया। उन्हें जमीन की सतह तक लाते-लाते जमाल के हाथ-कन्धे दुखने लगे। गर्द झाड़ते हुए उसने एक बोरे में अँगुली गड़ायी, "शरत्त लगा ले बाजरा है !"

टाँके तोड़कर, उधेड़कर, सुलझाकर बोरों के मुँह खोले गये। ए डोरे को दाँतों से तानते-तानते फूलकी ने अपने मसूढ़े लहूलुहान कर लि

बोरे खुलते-खुलते बाजरा छलकने लगा। शुबो ने ज्यानकी क से कहा, "सबका बाँट दो !"

काकी नाज बाँटने लगी। उसे चूल्हे की अगन तक ले जाने की

किसी मे नहीं थी। लोग टीलों पर उकडूँ बैठ गये, लम्बे पसर गये और कचर-कचर दाने चबाने लगे। माँओं ने बच्चों को डाँटना शुरू किया, "गिराओ मत। एक-एक कण सँभाल के खाओ!"

"सुवो, ये बोरे यहाँ किसने छुपाये?" जुगनी ने पूछा।

तब सुवो ने सारा परसंग-वितान्त कह सुनाया।

"जमीन में दबे रहकर भी इस बाजरे ने मुझे बहोत-कुछ दिया है। सबसे पहले मन में जो भरोसा जगा था, वह इस बाजरे के बल पर ही…"

हरलो के साथ पट्टा खेलनेवाली बात भी उसने बतला दी।

"हाँ, मुझे ध्यान है। पहले तुम सहमे-सहमे रहते थे, फिर एकदम्म बदल गये और उन लोगों को आँखें दिखाने लगे।" कहकर ज्यानकी काकी हँसने लगी।

"बाजरे में बड़ी ताकत होती है।" सिराम बोला।

जमाल ने 'म्हाने लागे घणो सुवाद लीलो बाजरङो' गीत टेर दिया। हथेलियों और घुटनों पर ताल दे-देकर सब लोग-लुगाई उसका साथ देने लगे।

"आज तो रेगिस्तान मे रम्मत का मजा आ गया।" गज्जी ने होठों से 'चकधम्म-चकधम्म' ढोलक की-सी आवाज निकालते हुए कहा।

जैसे कोई बाजीगर काँसी की थाली को जोर से घुमाकर फेंक दे, चन्दरमा बादलों की दरारों मे चक्करघिन्नी घूम रहा था।

पुसंपा बाई पानी की तरह दारू पी रही थी।

बदरू ने लालटेन जलाकर रख दी और बाहर जाने लगा। वह चिल्लायी, "जा कहाँ रहा है, सूअर! यहीं रह—"

फिर उसने डगमगाते स्वर में रावता से पूछा, "वो सब…कहाँ गये हैं?"

"मालूम नहीं। यहाँ से तो दूर चले गये लगते हैं।" रावता ने धीर

की दिशा में कान लगाया।

"कम्फ तो सुनसान पड़ा है इस वखत।" सुवटी बोली।

"शुवो बलवा कराये बिना रहेगा नहीं।" इग्यारसीलाल ने कहा, "वो जरूर कोई तिड़गड़ी लगा रहा होगा।"

उसी समय बाहर खड़खड़ाहट हुई। पुसपा बाई ने चिहुंककर गर्दन पीछे की। बोतली की दारू पेट और छाती पर गिर गयी। रावता का हाथ बन्दूक पर कस गया।

"कौन है, कौन है, भई?" बदरू ने आवाज दी।

"पानी की टंकी!" आवाज आयी।

फिर बैलों की गर्दन में पड़े टिकोरे बजे।

"पानी आया है।" बदरू ने कहा, "एक बैलगाडी है।"

"जाओ, कोठे में भरवा दो।" रावता बोला।

बदरू चला गया।

"अब यहां रहने से कोई लाभ नहीं। कम्फ तोड देना चाहिए।" इग्यारसीलाल ने सुझाया।

"आज भण्डारे को भी लूट लिया उन्होने।·· अब यहां हमारी नहीं चलेगी।" पुसपा बाई की बोली लड़खड़ा रही थी।

"हां, आगे खतरा ही खतरा नजर आता है।"

"तुम गाड़ीवान से बात कर आओ। हमें जल्दी से जल्दी चल देना चाहिए।"

"यही मैं सोच रहा हूं।"

"अभी मौका है। वे लोग···यहां से दूर गये हुए हैं। उनके लौटने से पहले ही—" पुसपा बाई ने बोतली मुंह से लगायी और खाली करके परे फेंक दी।

तत्काल तैयारी की जाने लगी। सामान इधर-उधर किया गया। कुछ उठापटक हुई। पुसपा बाई ने दो बक्सों मे जरूरी चीजे भर लीं। एक बक्सा इग्यारसीलाल अपने डेरे से ले आया। फिर वह गाड़ीवान से

बात करने चल दिया।

"कोठे का पानी तो एकदम रीत गया होगा।" गाड़ीवान ऊँचे पूछ रहा था।

"हाँ। बस, पेंदे में कुछ बचा है।" उसने जवाब दिया।

टंकी बैलगाड़ी में नीचे उतारकर रख दी गयी थी। इग्यारसीलाल ने उसकी टोंटी खोल दी। पानी की धार दग-दग करती हुई रेत में बह चली।

"यह क्या कर रहे हो?" गाड़ीवान बोला, "मेरे बैल इस टंकी को इत्ती दूर से ढोकर लाये हैं और तुम इस तरह···पानी बेकार बहा रहे हो।"

"पानी की अब यहाँ जरूरत नहीं। कम्पवालों को पीने के लिए एक घूँट भी न मिले और वे प्यासे तड़फ-तड़फकर मरें, मैं तो···यही चाहता हूँ।" इग्यारसीलाल का जबड़ा खिंच गया।

फिर उसने गाड़ीवान के पास जाकर धीमे स्वर में कुछ बातें कीं। गाड़ीवान हुँकारते हुए बोला, 'ठीक है, ठीक है, लेकिन जल्दी करो—"

"जाओ बदरू, सबसे ले आओ।" इग्यारसीलाल ने कहा और कम्प के छप्पर-छाजनों को घूर-घूरकर देखने लगा। चन्दरमा के मन्द पीले उजास में वे अजीब सूने और भयावह लग रहे थे।

-

दरू ने सामान लाकर बैलगाड़ी में रख दिया। पुसपा बाई ने ऊपर झुककर अपने बक्सों को अच्छी तरह देखा-भाला और फिर उनसे पीठ टिकाकर बैठ गयी। सामने इग्यारसीलाल और बदरू।

- रावता भी गाड़ी में चढ़ने के लिए पाँव आगे कर रहा था कि सुवटी चिल्लायी, "मेरा क्या होगा, पुसपा बाई?"

"तुम यहीं रहो।" रावता ने उसकी तरफ थूका, "अपने करमों का फल भोगो।"

"नहीं, मैं भी साथ चलूँगी।" वह गिड़गिड़ायी।

रावता ने उसे धक्का दिया।

मुरटी धूल में जा गिरी। रावता गुस्से में गरजता हुआ उस पर चढ़ बैठा और बन्दूक के कुन्दे को उसके सिर में ठोंकने लगा।

"मुझे मारो मत"'तुम्हारे आगे हाथ जोड़ती हूँ—" वह घिघियाने लगी। लेकिन, रावता ने एकदम उसका गला टीप दिया। आवाज बन्द हो गयी। वह छटपटायी और शान्त हो गयी।

"स्साली बहोत बनती थी। हरलो की रानी! मेरी शिकायत करती रहती थी उससे—" रावता विक्षिप्त-सा उसके मुंह पर थूकने लगा।

"धांय!"

तभी उसके कन्धे में आग भर गयी। वह गिर पड़ा।

इधारसीलाल के कहने पर पुसपा बाई ने बन्दूक दाग दी थी। वह बोला, "इस रावता को भी यहीं खतम करो, पुसपा बाई! नहीं तो, हमेशा जान का झंझट बना रहेगा।"

"चलो, गाड़ीवान!" पुसपा बाई बोली। हांफती हुई।

बन्दूक की आवाज़ से बैल पहले ही बुरी तरह बिदक उठे थे। इशारा पाते ही दौड़ पड़े। दौड़ते चले गये, बदहांस-सांस।

रावता ने कराहते हुए बैलगाड़ी को दूर जाते देखा और सब कुछ समझ गया। उसके मुंह से निकला, "रण्डी!"

फिर उसने बन्दूक को सीधा किया। हाथ जमाया और अनुमान से, बैलगाडी की सीध में गोलियाँ चलाना शुरू कर दिया। अन्धाधुन्ध। उधर से भी जवाब मिला। एक गोली रावता की आँख को बेधती हुई खोपड़ी को ठण्डा कर गयी। वह रेत में ढह गया। रावता को हरलो की टोली का अच्छा निशानेबाज समझा जाता था, किन्तु आज अनजाने में वह पुसपा बाई से मात खा गया था।

बैलों ने रास्ता छोड़ दिया था और सूं-सूं करते हुए बेतहाशा भाग रहे थे। गाडीवान के हाथ से उनका रस्सा छूट गया था। वह सहमा हुआ, बक्सों की आड लेकर, गाडी के तल्ले में, चिपका पड़ा था। पल-पल मौत न्यौता दे रही थी।

घाँय-घुँय रुक जाने के बाद, काफी देर तक खामोशी देखकर, गाड़ीवान ने सिर उठाया। सबसे पहले बैलों को देखा। रास सँभालकर उनकी पीठ पर हाथ फिराने लगा, इस आशंका से कि कहीं उनके लग-लुग न गयी हो। बैल सही-सलामत थे, अलबत्ता डर गये थे। वह आश्वस्त हुआ। उनका जुआ ठीक जमाकर उसने गाड़ी का हाल देखना-जानना चाहा कि बदरू ने उसकी पीठ पर हाथ रखा।

"मैं भी कैसी आफत में फंस गया!" गाड़ीवान बड़बड़ाया, "मुझे वहीं मना कर देना चाहिए था।"

"मना करते तो तुम्हें भी भून दिया जाता—" बदरू मन्दा-सा बोला। वह गाड़ी में कुछ टटोलता-सा आगे-पीछे हो रहा था।"

पुसपा बाई चित्त पड़ी थी। तेज-तेज साँस चल रही थी। उसे पुकारने या छूने की हिम्मत बदरू नहीं कर सका।

ग्यारसीलाल गाड़ी में नहीं था। वह शायद घाँय-घाँय में सर-खप-कर नीचे लुढ़क गया होगा, बदरू ने सोचा। फिर उसने अधमरे अँधेरे में आँखें फाड़-फाड़कर पुसपा बाई के एक पैर को धीमे-से हिलाया। उसकी हथेलियों में गरम-गाढ़ी चिपचिपाहट लिपट गयी। वह घबराकर पीछे हट गया। पुसपा बाई के होंठ फड़क रहे थे और उनमें से अस्पष्ट ध्वनियाँ निकल रही थीं।

एक बार बदरू को ख्याल आया कि वह पुसपा बाई की सार-सँभाल करे, उसके जख्मों पर पट्टी बाँध दे—लेकिन उसने कुछ नहीं किया और गुम-सुम बैठा रहा।

"मैं क्यों कुछ करूँ, तुम्हारे लिए? ...तुमने तो मुझे जीते-जी ही मुरदा बना डाला था।"

"क्या कह रहे हो, बदरू?" गाड़ीवान ने हौले-से पूछा।

बदरू ने कोई उत्तर नहीं दिया। किन्तु थोड़ी देर बाद उसका माथा फिर घनघनाने लगा और वह परलाप में डूबता चला गया, "ऐसी ही रात थी वो, पुसपा बाई! रावता ने बाशिया को गुड़ की डली में अम्मल

खिला दिया था, सांझ पड़े ही। वो बेचारा अफीम के नशे में अचेत सो रहा था कि तुम लोगों ने उसे उठा लिया, मुंह पर कपड़ा बांधकर। और तल्लाव के तल्ले में ले जाकर पटक दिया।···उस नादान बच्चे ने क्या बिगाड़ा था तुम्हारा ? तुमने···अपने हाथ से उसके गले पर छुरी चलायी थी। सोया हुआ बच्चा चीख भी नहीं पाया।···तुमने तो अपनी इच्छा पूरी कर ही ली। मिनख की बलि दे दी तल्लाव को।···मैं सब कुछ छुपकर देख रहा था, लेकिन मुझ जैसे कायर जीव के देखने से क्या ? रावता ने खून के चुल्लू भर-भरकर···तल्लाव में छिड़क दिये थे। फिर उसने किनारे की मिट्टी में ही बाशिया को दबा दिया। कम्फ के लोग, रोज-रोज मिट्टी खोद-खोदकर उसी किनारे पर डालते रहे। लेकिन, उन्हें कभी सच्चाई का पता नहीं चल सका। पुमपा बाई, तुमने उस रात रावता के माथे पर बाशिया के रगत का टीका लगाया था, उसे ठेकेदार बनाया था। और आज··· उसी को ठण्डा कर दिया गोली से। बलि देकर, अपसगुन उतारकर, तुम एकदम हँस पड़ी थीं। कैसी काली, विकराल हँसी ! कम्फ में लौटकर तुम लोगों ने झूठमूठ जरख के आने की बात फैलायी।···सीधे-सादे गांव-ढाणी के लोगों ने बिसवास कर लिया कि बाशिया को जरख ले गया—"

"ऐसा काण्ड मच जायेगा, मुझे मालूम नहीं था।" गाड़ीवान अटपटाकर बोल रहा था, "खूब जोरदार लोग निकले ! एक-दूसरे को ही बखेर दिया।"

बैल जैसे एक अन्धड़ में से निकलकर मुगती की ओर आये थे। लेकिन, वे अभी भी आशंका से कान फटकारते हुए चल रहे थे।

बदरू सुध-बुध खो बैठा था। अपने-आपमें या न जाने किससे, उसकी गरलाती-घरघराती हुई बातचीत जारी थी, "बरसों से देखता आ रहा हूँ मैं—तुम्हें। जवान होते, नखरे करते और यारों के साथ दगा करते देखा है मैंने तुम्हें। रण्डी थी तुम्हारी माँ ! घटिया, गन्दी, लालची औरत। लेकिन तुम्हें वो चाहती थी। तुमने उसे भी मरवा डाला था गुण्डों से। वह तुमसे कमाई कराना चाहती थी और तुम्हारे खुवाब थे एम्मेले-एम्पी

चनने के। पुसपा बाई, मैं सारी लीला देखता रहा-और हमेशा चुप रहा। किस चीज से डरता रहा मैं ? क्यों सूख गयी मेरी जबान, मुंह के भीतर— और अपनी बात बोल नहीं सकी ? मैंने यह बीमारी कइयों को लगा दी। गोदावरी मेरे पास आती थी, वाशिया को लेकर,···मैंने उसे भी रोग लगा दिया अपना। वह तमाम चीजों से डरने लगी। हरेक से कहने लगी—ऐसा मत करो, वैसा मत करो···"

'बदरू, ओ बदरू ! तुम भी होश में नहीं हो क्या ?"

गाड़ीवान की ऊँची आवाज सुनायी दी। वह चौंका। झल्लाया-सा बोला, "क्या है ? जो होना था, वह तो हो गया। अब क्यों चिल्ला रहे हो ? मैं तो जानता था, एक दिन गन्द का यह घड़ा जोर से फूटेगा। तुमने भी धमाका सुन लिया !"

बैलगाड़ी ठहर गयी।

अचकचाकर बदरू ने पुसपा बाई की नाक के आगे हथेली अड़ायी। साँस बन्द थी। नाड़ी देखी। वहाँ भी हरकत नहीं थी।

"पुसपा बाई तो मर गयी !" उसने नफरत को मुँह में इकट्ठा कर होंठ बिचकाये।

"मैं लाश को अपनी गाड़ी में लेकर नहीं चलूँगा।"

"बिल्कुल ठीक कहते हो। मत ले चलो।"

बदरू कूदकर नीचे उतरा। उसने टाँगों से पकड़कर पुसपा बाई को घसीटा और सट्-से जमीन पर पटक दिया।

"कोड़ा लाओ !" पुसपा बाई की पुरानी आवाज, अपनी खूँखार गूँज के साथ, उसके आसपास लहरा गयी। वह सकपका गया और धूल में पड़े लाश के भद्दे आकार को घूरता रहा।

आधी रात। घिरे-घुमड़े बादलों की नील तलाई में नहाता-तैरता हुआ चन्दरमा। हवा थमी हुई थी। बरखा के आसार बन चुके थे।

शुबो को अज्जैदान का एक पद याद हो आया। हिवड़ै नै ठाडो बख में राखजै...मन को खूब काबू में रखना रे मिन्तरा, इस किनारे से चले हो तो उस किनारे पहुँचकर दम लेना। बीच धारा में कोई लुभाकर बोले कि उतरो, उतरो, तट आ गया—तो तुम उसकी बातों में न आ जाना!

वे इस सहज-सच्ची बानी को समझते थे। एक साथ बोल पड़े, "इम्बर हुँग्यो...अज्जैदान तुम अमर हो गये। तुम्हें न तब कोई मार सका, न अब कोई मार सकेगा!"

धांय! कम्फ की दिशा में धमाका हुआ।

गोदारी चिल्लाकर भागी, "जरख आया, जरख आया! मारो, मारो!"

हद्दी ने उसे पकड़ा और जबरन पास बिठाया।

धांय, धांय! फिर टीले कँपकँपाकर गूँज उठे।

"हरलो—" जुगनी ने कहा, "जरूर हरलो आया है।"

"गोली चलाके डराना चाहता है वो हमें?" सिराम बन्दूक सँभाल-कर शुबो की तरफ देखने लगा।

शुबो चुप था। कुछ समझ नहीं पा रहा था। उसने इस तरह नाक ऊपर उठा रखी थी, मानो हवा को सूँघ रहा हो।

"कुछ भी हो। हमें कम्फ में लौटकर देखना चाहिए।"

भरी आवाजों का शोर बरसात की झमझमकारों में घुलमिल गया।

"तुम मेरे साथ चलोगी ?" धुवो ने जुगनी की ओर संकोच से देखते हुए पूछा।

उसने सिर झुकाकर हामी भरी।

ज्यानकी काकी और बचली संग हो लीं।

"यह हम दोनों की उमर का मेल है। ज्यादा तो कट गयी है, बची-खुची जिनगी इस हेलमेल में ही कट जायेगी।" ज्यानकी काकी बोली।

ठट्ठ के ठट्ठ लोग, जो रोजी-रोटी की तलाश में बिखरे हुए थे, अब गाँव-टपरों की तरफ दौड़े-दौड़े चले आ रहे थे। धुवो और जुगनी को रास्ते में उनके कई गोट-दल मिले।

वही मैदान। वही रास्ते। वही रेत। वही पेड़। और पत्ते, नये होने के लिए अपनी बिरादरी में लौट रहे थे।

एक गाँव। दूसरा गाँव। तीसरा गाँव। गाँव और गाँव।

धुवो को वे एक-से लगे और जुगनी को ऐसे, मानो अपने में अनन्त रहस्य छुपाये हुए हों।

फुहार झर रही थी। लाल-लाल बहूटियाँ बालू में रेंग रही थीं। कहीं-कहीं, बाजरे के पौधों पर चढ़ते हुए कुंकू की भाँति, धूप के चाँदे चमक रहे थे।

राह में थवकल मिल गया उन्हें। गले में ढोलक डाले हुए और बगल में पूंगी—पिटारा। ऐसा गजब का कालबेलिया कि साँप को पलक झपकते पकड़कर पिटारी में डाल लेता था। वह भी देस-परदेस भटककर, अब बरखा होने पर अपने इलाके में विचर रहा था।

चलते-चलते दो दिन बीत गये। सींव आ गयी। कांटों की बाड़ हिंदुस्तान और पखेस्तान को बाँटनेवाली हद। एक गाँव को बीच में से काटकर वह फुंफकारती हुई चली गयी थी। खम्भे गड़े हुए थे। और, उन पर फुले हुए

हरफ बंटवारे का ढिंढोरा पीट रहे थे।

सांझ उभर रही थी। शुबो, जुगनी और चक्कल ने उस गांव में ही रात घुल जाने तक इन्तजार करना तय किया। फिर चुपचाप सींव पार कर जायेंगे।

गांव में कुछेक जन लौट आये थे और अपने झोपड़ों की मरम्मत करने में लगे थे। गलियों में बर्रं भनभना रहे थे। टूटी हुई दीवालों पर आक के फुसके और चिड़ी-कबूतरों के पंख चिपके पड़े थे। एक तिवारी की खूंटी पर जन्तर टँगा हुआ था। कोई आयेगा और उसे बजाने के लिए उठायेगा। पास ही कच्ची ईंटों का एक अधगला ढेर लस्तपस्त पड़ा था। खींप की बुहारी संभाले एक स्त्री तिवारी का चौका साफ कर रही थी।

वे तीनों सुस्ताने के लिए चौके की निचली पेड़ी पर बैठ गये।

स्त्री ने चक्कल को घूरकर देखा, "सँपेरे हो ?"

"हाँ।"

"मेरे घर में अपने सांप-वांप मत छोड़ जाना।"

चक्कल हँसने लगा। जुगनी स्त्री को एकटक ताक रही थी। जली हुई चमड़ी। जगह-जगह चौंकाते हुए सुफेद धब्बे। नंगी हड्डियां।

"क्या देख रही हो ?" औरत के काले होंठों पर मुस्कराहट खिंच गयी, "उन्होंने तो जला ही डाला था मुझे। किसी तरह जिन्दा बच गयी। यों समझो कि घर-बार देखना बदा था।"

"किसने जला डाला ?" सवाल जुगनी के गले में फँस गया।

"उधर" पखेस्तान के एक जम्मेंदार के लोगों ने। दुरभिक्ख के कारण मैं रुजगार की खोज में गयी थी वहां। जम्मेंदार की वाड़ी में काम करती थी। एक रोज उसकी घरवाली ने मेरी जात पूछी। मैंने कहा—भांबी हूं। वह बिगड़ गयी, बकने लगी—तूने पहले क्यों नहीं बताया, खसम-खाणी ! तूने हमारा धरम भरस्ट कर दिया। जब ''' जम्मेंदार को मालूम पड़ा तो उसने अपने चाकरों से बोल दिया, फेंक दो रांड़ को आग में ! बस, उन्होंने फूस जलाकर मुझे उसमें धकेल दिया। कई बार धकेला और

निकाला—"

सुबो इस स्त्री की पीड़ा को समझ सकता था। वह उस भयंकर यातना को अपने पर झेल चुका था। उसने लम्बी साँस भरी।

"तुम्हें भी किसी ने दाग दिया था?"

स्त्री सुबो की चाम पर पड़े आड़े-तिरछे निशान देख रही थी।

"हाँ। डकैत थे वो।"

"अक्काल ने हम सब पर अपनी छाप छोड़ दी है।" फिर औरत ने जुगनी से पूछा, "तुम इसी की लुगाई हो?"

"हाँ।"

"किधर जाओगे?"

"पखेस्तान—"

"पखेस्तान-वखेस्तान कहीं नहीं है। मन का भरम है।" चक्कल बोला।

"मुझे भी समझ नहीं आता है यह बँटवारा—" सुबो ने कहा।

"हो तो समझ में आये! सामवों का अड़ंगा है, बस।"

"गरीब का मुलक तो एक ही है, लेकिन जिसको राजपाट चाहिए, हकूमत चाहिए, उसने धड़ और पाँव बाँट लिये हैं।" औरत बोली।

"धड़ और पाँव को बीच से काट डालो तो जिन्दा रह सकता है कोई? बोलो, रह पायेगा?" सुबो को गुस्सा आने लगा।

"जिन्दा कौन है, भई! सब मरे हुए की माटी पीट रहे हैं।" चक्कल ने कहा और पुंगी पर पेरवे घुमाने लगा।

सूरज की अन्तिम ललाम बुझ रही थी। हिरनिच के चूरे को कोई झाड़न समेट रहा था।

चक्कल ने झोली में से आटा निकाला।

"इनके मांडे बना दो। सभी को भूख लग रही होगी।"

फिर उसने चिलम सुलगा ली। दो-चार गहरे कश खींचे और अल-

मुंदी आंखों को तिरमिराता हुआ बोला, "गांजा है। दम लगाओगे ?"

शुवो ने मुस्कराकर मना किया तो बोला, "ठीक है। यह औगुण मुझमें ही रहे तो अच्छा है।...लोग सांप पकड़ने के लिए मुझे बुलाते हैं टका-पैसा देते हैं, मैं सब गांजे के धुएं में उड़ा देता हूं।"

बरसात की वजह से सूखे ईंधन का जुगाड़ कठिन था, पर औरत इधर-उधर से बटोर लायी। चक्कल से दियासलाई मांगकर उसने अगन जलायी और आटा गूंथने लगी। रात लवादा डालने लगी तो चक्कल पूंगी में फूंक मारने लगा। सुरध्याणी ख्याल की धुन छेड़ दी।

"क्या करते हो! अभी कोई सांप चला आयेगा।" औरत ने टोका।

चक्कल ने धुन तोड़ दी। हंस पड़ा।

"कालबेलिये के सामने सांप की क्या बिसात!"

थप्-थप्-थप् मांड़ों के पोये जाने की आवाज उभरने लगी। फिर ताजा रोटी के सिकने की महक हवा में भर गयी।

पूंगी बज रही थी। उसके बजने में जुआर-बाजरे के सिट्टों का झूमना और बजना सुनायी दे रहा था शुवो और जुगनी को। उन सिट्टों के संसार में ईंदस्तान और पखेस्तान के बीच कोई टकराव, कोई अलगाव नहीं था। था तो सिरफ गाढ़ा-गहरा जुड़ाव, हरे-भरे धान का और चूल्हे में सिकती हुई रोटी का!

पूंगी की तान एक ऊंचाई पर जगमगाकर रुक गयी। उसके रुकने के छोटे-से पल में शुवो ने अपनी उदासी और जुगनी ने अपने भीतर की कड़वाहट से विदा ले ली। वह उदासी, वह कड़वाहट...जो आदमी से जीने का अरथ छीनना शुरू कर देती है एक-न-एक दिन, और चीजों की शक्लें बिगाड़ देती है।

स्त्री ने छबडे में मांडे भरकर रख दिये, तीनों के सामने। अली बाबा-से लगनेवाले चक्कल ने फिर झोली में हाथ डाल दिया। प्याज और मिरच निकालकर आगे रख दी। बोला, "खाओ, मज्जे से खाओ! रोटियों की करारी खसबू तो गजब ढा रही है!"

कई साल जुगनी और शुबो ने एक नयी ढाणी बसाने में लगा दिये। बिल्कुल सीव पर, सरहद पर। विभाजन का ऐलान करनेवाले खम्भों का उपहास उड़ाते हुए।

जुगनी ने ईंट-गारे से एक कच्चा घर बनाया। सोने-बैठने का छपरा हिन्दुस्तान में और खाने-पकाने की रसोई पाकिस्तान में। वे रोज 'इधर' से 'उधर' जाते थे। खम्भे अपनी जगह पर खड़े थे, । लेकिन बेमानी हो गये थे।

धीरे-धीरे ऐसे बहुत से घर बन गये । वहीं, सीमा-रेखा पर।

नहीं, मैं कहानी में नाटकीयता पैदा करने की कोशिश में नहीं हूँ।

तुम वहाँ जाओ, और जाकर देखो कि करला, जेठवाई, सांगड, तीनवसी ढाणियों के आगे ठीक, सरहद की हैसियत को नकारती हुई, एक ढाणी बसी हुई है—करीब पचपन-साठ घरों की। उसे लोग कहते हैं—शुबो की ढाणी ! सरकारी खाता-कागद-पत्रों में भी अब यही नाम दर्ज हो गया है। खैर।

पानी की किल्लत तो रहती ही थी बारहों महीने, सो शुबो ने मिलकर ढाणी वालों के संग एक कुआँ खोद डाला, तीन सौ फुट गहरा। बहुत मीठा पानी निकला। आतमा तिरपत हो गयी जैसे। परन्तु कुएँ की जगत थी 'इधर' और रस्सा पकड़कर खींचने के लिए 'गूण' चली गयी थी 'उधर'। 'इधर' से 'उधर' जाये बगैर पानी की बालटी ऊपर तक नहीं आ सकती थी। इसलिए, रोज मिनखों को, बैलों को हिन्दुस्तान-पाकिस्तान जाना-आना पड़ना था। वाह, शुबो की जिद ने कैसी तो विवशता पैदा कर दी थी !

शुबो और जुगनी, याह्याखाँ और शेख मुजीब और इन्दिरा गांधी को नहीं जानते थे। यह न जानना, न जानने के लिए था।

बांगला देश का पता-पता भी उन्हें नहीं मालूम था। लेकिन, एक दिन एकाएक दोनों तरफ की फौजें चढ़ आयीं, बारूद का धुआँ हवा में भर गया, हिन्दुस्तान-पाकिस्तान में लड़ाई शुरू हो गयी और बमों के धड़ाके धड़कने लगे।

उस रोज काफी खोज-पड़ताल करके शुबो घर लौटा। ढाणी के लोग उसका इन्तजार कर रहे थे। वह खिन्न था। हाथ हिलाकर बोला, "दो तो दाधुरे थे ही, अब तीसरा और बन रहा है—भंगलादेस। उसी के लिए यह जुध हो रहा है।"

वह दोपहर का समय था।

शुबो कुएँ की खेलियों में मवेशियों के लिए पानी भर रहा था कि कुछ फौजी आये। वे गुस्से में थे। शुबो से भी बेबात तकरार करने लगे। वह उनसे उकताकर बोला, "मगज मत खाओ। जाओ, रास्ता नापो अपना! हमारे सामने तो जो कोई हिंदस्तान-पखेस्तान का बखान करेगा, स्साले के ढूंग में भूसा भर देंगे।"

"गाली देते हो!" एक सिपाही ने उसका हाथ पकड़ लिया।

"ये जो तुमने उड़दी डाट रखी है फौज की, ये ही मिनखपने के नाम पर सबसे बड़ी गाली है।" शुबो ने झटककर हाथ छुड़ा लिया, "मुझसे मत उलझो। जाओ, बना लो भंगलादेस!"

फौजियों के लिए यह अपमान असहनीय था। तब तक उनकी टुकड़ी का सरदार भी आ गया था। उसने, वहीं—कुएँ की जगत पर शुबो पर बन्दूक दाग दी। फिर उसकी लाश मैदान में फेंक दी गयी, इस मुनादी के साथ कि किसी ने चूं-चप्पड़ की तो ऐसी ही दुरगत होगी।

ढाणी पर फौज का कब्जा हो गया। पता नहीं, वह किस तरफ की फौज थी। उसने अपनी अस्थायी चौकी भी वहीं बना ली।

शुबो की लाश मैदान में पड़ी रही। एक रात, ढाणी के कुछ लड़के

खतरा मोल लेकर लाश को चुरा ले गये और बेआवाज, उसे जुगनी के घर में रख गये।

"तुम्हारा यही अन्त होना था, शुबो !" वह उसके ऐंठकर विकृत हो गये चेहरे को स्नेह से सहलाती हुई बोली, "लेकिन···यह अन्त नहीं, शुरुआत है। यह घर, वह कुआं···तुम्हारे दुश्मनों से बदला लेंगे और एक रोज अपनी लड़ाई खुद लड़ेंगे। इन्हें किसी फौज-फांटे की जरूरत महसूस नहीं होगी।"

सालों बाद, वही जुगनी उसी मैदान में आज तिल के ताड़ सुखा रही है। बार-बार पसीना पोंछती है। धूप को और खेलते हुए बच्चों को प्यार से देखती है। सहसा मुझे समीप पाकर मीठेपन के साथ मुस्कराती है। कहती है, "लो, नये तिल खाओ। ताक़त आयेगी।"

ताक़त ! यह एक ऐसा शब्द है, जो जुगनी के होंठों पर आकर अकूत उजियार ओढ़ लेता है और रेत के अनन्त विस्तार में अनथक दौड़ पड़ता है !